हिंदी बालभारती

सातवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास–२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी–४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. ३.३.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्‌यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी
बालभारती
सातवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

5PH24H

आपके स्मार्टफोन में ‘DIKSHA App’ द्‌वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R. Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‌यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R. Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक–श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१७
चौथा पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे – ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्‌य – अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील – सदस्य
प्रा.मैनोद्‌दीन मुल्ला – सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी – सदस्य
श्री संतोष धोत्रे – सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी – सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे – सदस्य
डॉ.अलका पोतदार – सदस्य – सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री रामहित यादव
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्रीमती रंजना पिंगळे
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
श्रीमती निशा बाहेकर
डॉ. शोभा बेलखोडे
श्रीमती रचना कोलते
श्री रविंद्र बागव
श्री काकासाहेब वाळुंजकर
श्री सुभाष वाघ

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई–२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : आभा भागवत
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, मयूरा डफळ

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N
मुद्रक : M/s.

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

तुम सभी छठी कक्षा की हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक से पूर्व परिचित हो । अब सातवीं हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक के लिए उत्सुक होंगे । तुम्हारी इस व्यग्रता को ध्यान में रखते हुए अनेक विविधताओं से सुसज्जित यह पुस्तक तुम्हारे सजग हाथों में सौंपते हुए अतीव हर्ष हो रहा है ।

हम इस बात से अनभिज्ञ नहीं हैं कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना बहुत प्रिय है । हम यह भी जानते हैं कि सबको कहानियों के विश्व में विचरण करना पसंद है । तुम्हारी इन इच्छाओं को इस पाठ्‌यपुस्तक में बहुत ही मनोरंजक ढंग से समाहित किया गया है । पुस्तक में चयनित निबंध, रेखाचित्र, साक्षात्कार और पत्र जैसी विधाएँ तुम्हारे ज्ञान अर्जन एवं वर्धन के लिए उपयोगी हैं । प्रयोगधर्मी विद्‌यार्थियों को पुस्तक में आए सभी संवाद, एकांकी, हास्य-व्यंग्य, विविध उपक्रम, प्रकल्प आदि श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन तुम्हारी इन सभी क्षमताओं को विकसित करने में पूर्णत: सक्षम होंगे ।

डिजिटल दुनिया की नव-नवीन पद्‌धतियाँ, नई सोच, नीर-क्षीर विवेकी दृष्टिकोण तथा पठन-पाठन के दृढ़ीकरण एवं अभ्यास हेतु 'मैंने क्या समझा', 'सदैव ध्यान में रखो', 'जरा सोचो तो' आदि विविध कृतियों, गतिविधियों से पाठ्‌यपुस्तक को सुसज्जित किया गया है । तुम्हारी सर्जनशीलता एवं अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए अनेक स्वयं अध्ययन के अवसर भी प्रदान किए गए हैं । अपेक्षित भाषाई प्रवीणता के लिए 'भाषा अध्ययन', 'अध्ययन कौशल', 'विचार मंथन', 'मेरी कलम से', 'वाचन जगत से' आदि को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है ।

लक्ष्य की प्राप्ति मार्गदर्शक एवं सुविधादाता के बिना पूरी नहीं हो सकती । अत: अपेक्षित भाषिक प्रवीणता तथा उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु अभिभावकों एवं गुरुजनों का सहयोग तथा मार्गदर्शन तुम्हारे कार्य को आसान, सुकर और सफल बनाने में सहायक ही सिद्‌ध होंगे । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि तुम इस पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी भाषा एवं विषय के प्रति विशेष अभिरुचि एवं आत्मीयता के साथ उत्साह प्रदर्शित करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- २८ मार्च २०१७ (गुढी पाडवा)

हिंदी बालभारती अध्ययन निष्पत्ति : सातवीं कक्षा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

सभी विद्‌यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्‌यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन देना, ताकि उन्हें –

- अपनी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों ।
- प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों ।
- समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो ।
- हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं की सामग्री पढ़ने-लिखने की सुविधा (ब्रेल/ सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की स्वतंत्रता हो ।
- अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों ।
- अपनी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियों जैसे – शब्द खेल, अनौपचारिक पत्र, तुकबंदियाँ, पहेलियाँ, संस्मरण आदि के अवसर हों ।
- सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, और लिखकर अभिव्यक्त करने की गतिविधियाँ हों ।
- कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय (भूमिका अभिनय), कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और वृत्तांत लेखन के अवसर हों ।
- विद्‌यालय / विभाग / कक्षा की पत्रिका / भित्ति पत्रिका निकालने के लिए प्रोत्साहन हों ।

अध्ययन निष्पत्ति

विद्‌यार्थी –

07.02.01 विविध प्रकार की रचनाओं (गीत, कथा, एकांकी, रिपोर्ताज, निवेदन, निर्देश) आदि को आकलनसहित सुनते हैं, पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं तथा सुनाते हैं।

07.02.02 सुने हुए वाक्य, उससे संबंधित अन्य वाक्य, रचना के संदर्भ में कहे गए विचार, वाक्यांशों का अनुमान लगाकर समझते हुए अपने अनुभवों के साथ संगति, सहमति या असहमति का अनुमान लगाकर अपने विचार अभिव्यक्त करते हैं तथा अपने शब्दों में सरल अर्थ एवं सारांश लेखन करते हैं ।

07.02.03 किसी चित्र या दृश्य को देखने, अनुभवों की मौखिक/लिखित सूचनाओं को आलेख रूप में परिवर्तित करके अभिव्यक्त करते हैं तथा उसका सारांश लेखन करते हैं।

07.02.04 दिए गए आशय, पढ़ी गई सामग्री से संबंधित प्रश्न निर्मिति करते समय दिशा निर्देश करते हुए किसी संदर्भ को अपने शब्दों में पुनः प्रस्तुत करते हैं तथा उचित उत्तर लेखन करते हैं ।

07.02.05 विभिन्न स्थानीय सामाजिक एवं प्राकृतिक मुद्‌दों/घटनाओं के प्रति समीक्षक विचार करते हैं, विषय पर चर्चा करते हैं तथा तार्किक प्रतिक्रिया लिखित रूप में व्यक्त करते हैं ।

07.02.06 किसी पाठ्‌यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं तथा अभिव्यक्ति क्षमता द्‌वारा शब्द भंडार में वृद्‌धि करते हुए शब्दों के अर्थ, लिखित अभिव्यक्ति का पूर्वानुमान लगाते हुए वाचन करते हैं ।

07.02.07 लिखित संदर्भ में अस्पष्टता, संयोजन की कमी, विसंगति, असमानता तथा अन्य दोषों को पहचानकर वाचन करते हैं । उसमें किसी बिंदु को खोजकर अपनी संवेदना, अनुभूति, भावना आदि को उपयुक्त ढंग से संप्रेषित करते हैं ।

07.02.08 जोड़ी/गुट में कृति/उपक्रम के रूप में संवाद, प्रहसन, चुटकुले, नाटक आदि को पढ़ते हैं तथा उसमें सहभागी होकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति करते हैं ।

07.02.09 रूपरेखा एवं स्वयंस्फूर्त भाव से संवाद, पत्र, निबंध, वृत्तांत, घटना, विज्ञापन आदि का वाचन एवं लेखन करते हैं ।

07.02.10 दैनिक कार्य नियोजन एवं व्यवहार में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों, नए शब्दों को सुनते हैं और मौखिक रूप से प्रयोग करते हैं तथा लिखित रूप से संग्रह करते हैं ।

07.02.11 पाठ्‌यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझते हुए स्वयं के लिए आवश्यक जानकारी चित्र, वीडियो क्लिप, फिल्म आदि अंतरजाल पर खोजकर पढ़ते हुए तथा औपचारिक अवसर पर संक्षिप्त भाषण तैयार करके लिखित वक्तव्य देते हैं ।

07.02.12 दिए गए आशय का शाब्दिक और अंतर्निहित अर्थ श्रवण करते हुए शुद्‌ध उच्चारण, उचित बलाघात, तान-अनुतान एवं गति सहित मुखर एवं मौन वाचन करते हैं ।

07.02.13 विभिन्न अवसर, घटना, प्रसंग, भाषण तथा विभिन्न सामयिक विषयों के वर्णन, इनके सह-संबंधों को पहचानते हुए सुनते हैं तथा संबंधित वाक्यों की निर्मिति कर अभिव्यक्त करते हैं ।

07.02.14 प्रसार माध्यमों एवं अन्य कार्यक्रमों को सुनकर उनके महत्वपूर्ण तत्वों, विवरणों, प्रमुख मुद्‌दों आदि को पुनः याद कर दोहराते हैं तथा अपने संभाषण एवं लेखन में उनका प्रयोग करते हैं ।

07.02.15 किसी प्रस्तुति के बारे में अपने निरीक्षण/अनुभव/पूर्वज्ञान के आधार पर सूचनाओं का सत्यापन करते हैं तथा संकेत स्थलों की संरचना को समझते हुए उनमें निहित विविध संदर्भों में लिखित प्रयोग करते हैं ।

07.02.16 व्यक्तिगत अनुभवों में निहित भाव, अनौपचारिक संभाषण, उद्‌घोषणा, साक्षात्कार ध्यानपूर्वक सुनते और सुनाते हैं तथा उसमें अंतर्निहित अर्थ ग्रहण करते हुए वाचन करते हैं ।

दो बातें, शिक्षकों के लिए ....

विद्‌यार्थियों को अध्ययन-अनुभव देने से पहले पाठ्‌यपुस्तक में दी गई सूचनाओं, अध्ययन संकेतों एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह आत्मसात कर लें । पाठ्‌यपुस्तक में दी गईं सभी कृतियों का विद्‌यार्थियों से अभ्यास करवाना आवश्यक है । अध्ययन-अध्यापन में चर्चा एवं प्रश्नोत्तर को अधिक महत्त्व प्रदान करना अपेक्षित है । डिजिटल अथवा इलेक्ट्रॉनिक संदर्भों (अंतरजाल, ऐप्स, संकेतस्थल आदि) में आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन नितांत आवश्यक है । भाषा अध्ययन के अभ्यास लिए अधिक-से-अधिक संदर्भों तथा विविध उदाहरणों का उपयोग अपेक्षित है । व्याकरण का अध्यापन पारंपरिक रूप से नहीं करना है । विभिन्न उदाहरणों, प्रयोगों, कृतियों द्‌वारा विषय वस्तु की संकल्पना को स्पष्ट एवं दृढ़ीकरण किया जाना आवश्यक है । पूरकपठन सामग्री केवल पाठ को पोषित ही नहीं करती, अपितु विद्‌यार्थियों की पठन संस्कृति को बढ़ावा देती हुई उनमें अध्ययन के प्रति रुचि भी जागृत करती है । अतः पूरकपठन अनिवार्य एवं आवश्यक रूप से करवाएँ । अपने अध्यापन में इंटरएक्टिव सामग्री का प्रयोग करें ।

पाठ्‌यपुस्तक में दी गई सामग्री को दैनिक जीवन से जोड़ते हुए भाषा और स्वाध्यायों के सहसंबंधों को स्थापित किया गया है । आवश्यकतानुसार पाठ्‌येतर भाषिक गतिविधियों, कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । विद्‌यार्थियों में जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास के अवसर भी प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्‌यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, स्वाध्यायों का 'सतत सर्वंकष मूल्यमापन' भी अपेक्षित है ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि उपरोक्त सूचनाओं का पालन करते हुए शिक्षक, अभिभावक, सर्वजन इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	अभयारण्य	१
२.	गुनगुनाते रहो	२ –५
३.	मुक्ति का प्रतिदान	६–१०
४.	पहचानो तो !	११–१२
५.	चिड़िया की पाती	१३–१७
६.	हँसिकाएँ	१८
७.	बादलों की काव्य सृष्टि	१९–२३
८.	चित्र बोलते हैं	२४–२७
९.	एक सैर ऐसी भी	२८–३१
१०.	(अ) दो गजलें	३२
	(ब) एक मटका बुद्‌धि	३३–३४
११.	प्रगति	३५–३९
१२.	जादुई अँगूठी	४०–४४
१३.	मेरे देश के लाल	४५–४८
*	अभ्यास–१	४९
*	पुनरावर्तन –१	५०

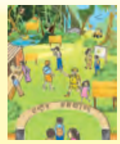

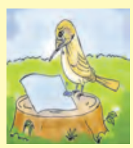

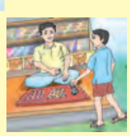
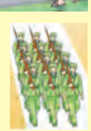

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	कृषि प्रयोगशाला	५१
२.	मधुऋतु	५२–५५
३.	काकी	५६–६०
४.	संदेश	६१–६४
५.	आलस का सुख	६५–६९
६.	अक्लमंदी	७०
७.	साक्षात्कार	७१–७५
८.	पद	७६–७९
९.	ऐसे उतारी आरती	८०–८३
१०.	दिव्यांग	८४
११.	रोजी और निक्की	८५–८९
१२.	स्कूल चलो	९०–९५
१३.	धन्यवाद	९६–९९
	* अभ्यास –२	१००
	* अभ्यास – ३ (चित्रकथा)	१०१–१०३
	* पुनरावर्तन –२	१०४

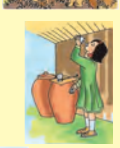

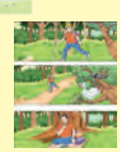

महाराष्ट्र की राज्य तितली 'ब्लू मॉरमॉन' मुखपृष्ठ पर पुस्तकरूपी फूल से मकरंद का रसास्वादन करती हुई दिखाई गई है । शीर्षकपृष्ठ पर यही तितली कीचड़ में बैठी हुई दिखाई गई है । तितलियाँ कीचड़ से भी क्षार ग्रहण करती हैं !

● देखो, पहचानो और चर्चा करो :

१. अभयारण्य

❑ **अध्यापन संकेत :** चित्र का निरीक्षण करवाएँ । चित्र में दिखाई देने वाली वस्तुओं, प्राणियों के बारे में प्रश्न पूछें । विद्‌यार्थियों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से अभयारण्य की आवश्यकता और वन्य प्राणियों के संरक्षण पर चर्चा कराएँ ।

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

२. गुनगुनाते रहो

– *जगदीशचंद्र तिवारी*

जन्म : २२ नवंबर १९५०, अजमेर (राजस्थान) **रचनाएँ :** हारा नहीं हूँ मैं, हो रही है अब सहर **परिचय :** जगदीशचंद्र तिवारी जी गीतों और गजलों के सशक्त हस्ताक्षर हैं । विविध पत्र-पत्रिकाओं में उनके मुक्तक, कविताएँ, गीत, गजल, दोहे आदि नियमित प्रकाशित होते रहते हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने निराशा के क्षणों में भी आशा के दीप जलाए रखने के लिए हम सबको प्रेरित किया है ।

सुनो तो जरा

किसी अन्य भाषा की प्रभाती सुनो और कक्षा में साभिनय सुनाओ ।

5QET7S

जब कभी आस की मन में बजे शहनाई तेरे
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।
मानता हूँ हर जगह पर
हर दिशा में है अँधेरा
और दीखे ही नहीं जब
नेह किरणों का बसेरा
नेह किरणों का यदि दीपक पड़े तुझको जलाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।
नेह की ये गंध तेरी
राह की बाधा हरेगी
हर अँधेरी रात में ये
रोशनी फिर से भरेगी
गर अँधेरा छाए, दीप तू फिर से जलाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता प्रस्तुत करें । विद्‌यार्थियों से साभिनय अनुकरण पाठ, सामूहिक, गुट में एवं एकल पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता के मुख्य भाव के बारे में पूछें ।

अध्ययन कौशल

सुनी हुई किसी कविता का पुनःस्मरण करते हुए आशय पर आधारित टिप्पणी बनाओ :

- रचयिता
- कविता का विषय
- मूल भाव

अब समय के साथ में
साथी तुझे चलना पड़ेगा
जीत का परचम तुझे
हर हाल में गढ़ना पड़ेगा
हारने का जब हो डर तब अपने अंतस को जगाना ।
उस समय तू गीत सारे भोर के ही गुनगुनाना ।।
गीत में स्वर-लय का गुंजन
भी तुझे भरना पड़ेगा
और नव छंदों को भी
उसमें तुझे जड़ना पड़ेगा
गीत में संवेदनामय भावों को होगा गाना ।
उस समय तू गीत साथी दर्द के भी गुनगुनाना ।।

❑ वर्णमाला को क्रम से बुलवाएँ और विशेष वर्णों के उच्चारण पर ध्यान दें । कविता में से मात्रावाले शब्द खोजवाकर लिखवाएँ और उनका वाक्य में प्रयोग करवाएँ । कविता से दस शब्द खोजवाकर उनके समानार्थी शब्द लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

आस = आशा	**परचम** =झंडा, ध्वज
भोर = सुबह	**अंतस** = अंतरात्मा/मन
नेह = स्नेह, प्रेम	**गुंजन** = आवाज, गूँज
बसेरा = निवास	**दर्द** = पीड़ा

विचार मंथन

।। मधुर वचन सौ क्रोध नसाई ।।

खोजबीन

भारतीय संविधान में उल्लेखित मौलिक अधिकार ज्ञात करो ।

इतिहास और नागरिक शास्त्र सातवीं कक्षा पृ. ७६

बताओ तो सही

निम्न शब्दों का प्रयोग कब करते हैं, बताओ । व्यवहार में इनका उपयोग करो :

- धन्यवाद
- कृपया
- क्षमा
- नमस्ते

वाचन जगत से

किसी सफल व्यक्ति की आत्मकथा का अंश पढ़ो और कक्षा में सुनाओ :

- परिचय
- प्रेरक प्रसंग
- सीख

मेरी कलम से

भोर होते ही होने वाले परिवर्तनों को अपने शब्दों में लिखो :

- अड़ोस-पड़ोस का वातावरण
- आकाश की स्थिति
- गृहिणियों के क्रियाकलाप
- बच्चों के व्यवहार

जरा सोचो ...... बताओ

तुम्हारे घर की वस्तुओं को वाणी होती तो ......

स्वयं अध्ययन

किसी अपठित पाठ्यांश का श्रुतलेखन एवं शुद्धलेखन करो, आपस में जाँचो ।

* **कविता के आधार पर भोर के गीत गुनगुनाने के अवसर लिखो :**

(क) .... । (ग) .... ।

(ख) .... । (घ) .... ।

सदैव ध्यान में रखो

दुख के बाद सुख आता है ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों में से मूल शब्द, उपसर्ग एवं प्रत्यय अलग करके लिखो : **स्वदेशी, चिरकालीन, निरोगी, विस्मरणीय, असावधानी, अपमानित, सुसंस्कारित, विनम्रता, असफलता**

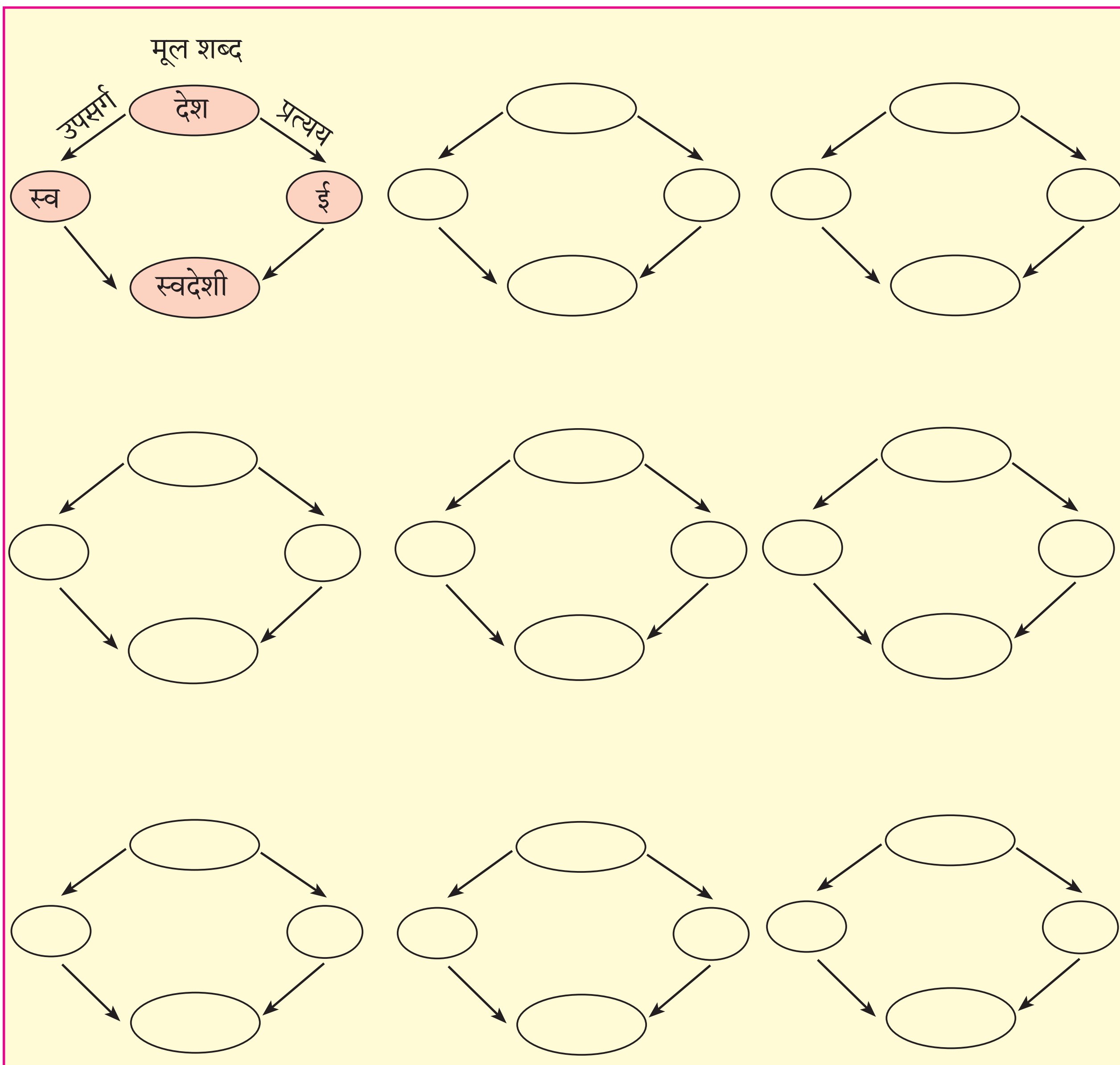

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. मुक्ति का प्रतिदान

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने लालच से दूरी बनाए रखने एवं किए गए उपकार के बदले प्रत्युपकार को रेखांकित किया है ।

विचार मंथन

।। कृतज्ञ बनो, कृतघ्न नहीं ।।

विचार मंथन की कृतियों करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

* विद्यार्थियों से कृतज्ञ और कृतघ्न शब्दों पर चर्चा करें । * उन्हें अपने अनुभव बताने के लिए कहें ।
* विद्यार्थियों से पूछें कि क्या उनपर किसी ने कोई उपकार किया है ? * यदि हाँ तो बदले में उन्होंने क्या किया ?
* कृतज्ञता एवं कृतघ्नता में से विद्यार्थी किसे अपनाना पसंद करेंगे बताने के लिए कहें । * इन बातों के क्या परिणाम हो सकते हैं, पूछें ।
* किन-किन के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए ? * उनकी सूची बनवाकर वर्गीकरण (घर के सदस्य, मित्र, प्राणी, पेड़ आदि) कराएँ ।

बहुत पहले की बात है । अचलपुर नामक एक गाँव था । वहाँ के लोग बड़े सीधे-सादे और ईमानदार थे । उन्हें किसी बात का लालच नहीं था । धन-दौलत, सोना -चाँदी, रुपये-पैसे का महत्व हर युग में ही रहा है । लोग इन्हें पाने और लूटने के लिए क्या-क्या अत्याचार नहीं करते ? उन्हीं दिनों दो व्यक्ति महात्मा ज्ञानी जी के पास सोने के सिक्कों से भरी एक थैली लेकर उपस्थित हुए । दोनों ही थैली से मुक्ति पाना चाहते थे ।

समस्या यह थी कि उन दोनों में से कोई भी उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं था । उन दोनों ने अपने दामादों को सिक्कों से भरी वह थैली दान-दहेज में देना चाहा तो उन्होंने भी यह कहकर लेने से साफ मनाही की कि दहेज लेना बिलकुल अनुचित है । उन्होंने कहा, ''यह एक सामाजिक अपराध है । दहेज लेना और देना, दोनों ही गैरजरूरी और अमान्य हैं । कन्या एक रत्न है । उसके साथ दहेज लेने वाला अक्षम्य और कठोर दंड का भागीदार होता है। इसके अतिरिक्त दान उसे लेना चाहिए जिसको उसकी जरूरत हो अतः हम यह धन नहीं ले सकते ।''

अब ज्ञानी जी के सामने भी यह विकट समस्या थी । उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाकर यही प्रश्न किया- ''यह चकाचौंध करने वाला धन किसको दिया जाए ?''

एक ने कहा, ''यह संपत्ति इस देश के राजा को सौंप दी जाए क्योंकि वही इस देश और धरती का स्वामी

❑ विद्यार्थियों से कहानी का मौनवाचन कराएँ । विद्यार्थियों से इस कहानी को अभिनय के साथ उनके शब्दों में सुनाने के लिए कहें । 'मुक्ति' और 'प्रतिदान' शब्दों पर चर्चा करें । उनसे कहानी में आई प्रमुख घटनाओं पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।

जरा सोचो .... लिखो

रुपये/सिक्के बोलने लगे तो ......

है । राजा के पास यह संपत्ति जाएगी तो वह अपने लिए थोड़े ही रख लेंगे । इस संपत्ति से समाज की भलाई का ही कोई काम करेंगे । यह संपत्ति राजा को देंगे तो वे हम पर खुश होकर हमारा सम्मान कर सकते हैं ।''

इसपर एक आगंतुक किसान मित्र ने यह कहकर विरोध किया, ''सिक्कों से भरी वह थैली जिस खेत से मिली है, वह मेरा था किंतु उस खेत को वास्तव में मेरा यह मित्र जोतता-बोता था । मेरा यह कहना है कि यह संपत्ति भी उसी को मिले । इस संपत्ति का असली हकदार वही है ।''

दूसरे ने विरोध प्रकट किया, ''अचानक मिली हुई यह दौलत मेरे खून और पसीने की कमाई नहीं है, यह मुफ्त की कमाई है । मुफ्त की कमाई फलदायी नहीं होती इसलिए मैं इसे स्वीकार करके ईश्वरीय न्याय और संपदा से विमुख नहीं होना चाहता ।''

ज्ञानी जी उन दोनों मित्रों के उदात्त विचारों से गदगद हो उठे । अब उनकी प्रश्नवाची दृष्टि अपने दूसरे शिष्य की ओर उठी । उसका उत्तर था, '' नीति तो यह कहती है कि जब एक वस्तु लेने वाला कोई न हो तो वह वस्तु किसी को दान कर दी जाए । यदि यह दान मुझे ही दे दिया जाता तो ...'' आगे की बात उस शिष्य के गले में ही अटक गई, वह गड़बड़ा गया क्योंकि ज्ञानी जी उसको घूरने लगे थे ।

अब तीसरे शिष्य की बारी थी । उसका कहना था, ''इस दौलत को फिर उसी जमीन में गाड़ दिया जाए ।'' इस तरह कोई उस धन को लेने के लिए तैयार नहीं हो रहा था । ज्ञानी जी निराश हो गए फिर उन्हें एक आशा की किरण दिखाई दी । उनकी आँखों में चमक आ गई । उन्होंने प्रसन्न मुद्रा में अपने सबसे छोटे शिष्य से पूछा, ''यदि तुम मेरी जगह होते तो कैसा न्याय करते ?''

शिष्य का यह भोला-भाला उत्तर गुरु जी को पसंद आया, ''मेरी आत्मा कहती है कि धरती माँ ने यह दौलत किसी शुभ कार्य या लोकहित के लिए दी हैं । क्यों न इस विस्तृत भूखंड में ऐसा सदाबहार बाग लगाया जाए जिससे तमाम लोगों को फल, पंछियों को बसेरा और पथिकों को मुफ्त में छाया मिल सके ।''

उसके विचार सुनकर सबकी बाँछें खिल गईं । अस्तु, गुरु जी ने वह सारे सिक्के उसे सौंपकर उत्तम फलों के बीज खरीदने के लिए राजधानी की यात्रा का आदेश दे दिया । शिष्य ने अपने गुरु के आदेश को शिरोधार्य करके अपनी यात्रा का श्रीगणेश किया ।

वह लगातार चलता रहा । मन-ही-मन सुंदर बाग की कल्पना भी करता जा रहा था । कई दिनों की यात्रा करने के पश्चात जब वह होनहार शिष्य राजधानी के चौक-बाजार में सर्वोत्तम बीजों की तलाश में घूम रहा

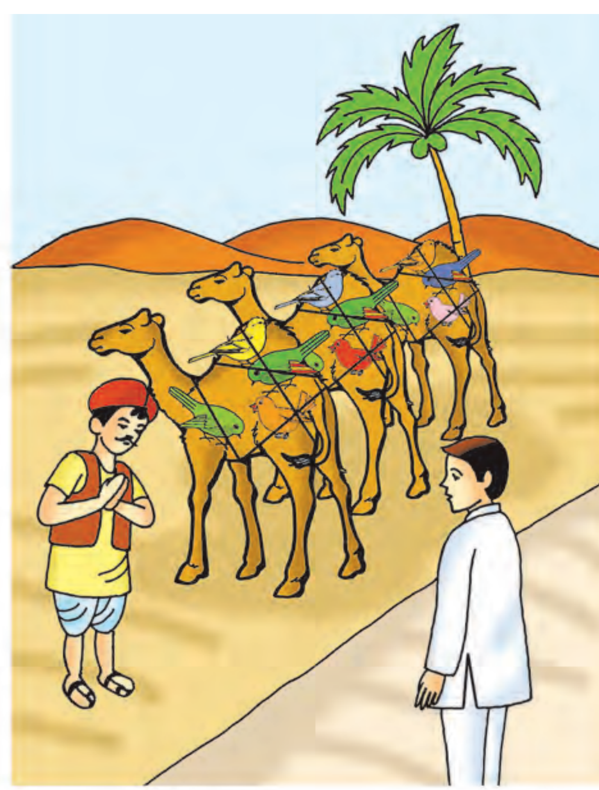

- विद्यार्थियों से कहानी में वर्णों को ढूँढ़कर श्यामपट पर लिखवाकर क्रम से बताने के लिए कहें । वर्ग के अनुसार वर्णमाला लिखवाएँ । विभिन्न प्रकार के दस वाक्य देकर उनके शब्दों का लिंग परिवर्तन करके वाक्य पुनः लिखने के लिए कहें ।

मेरी कलम से

निम्न शब्दों को लेकर एक कविता लिखो :

झरना, स्नेह, फूल, आकाश

था तो गुजरते हुए ऊँटों के एक काफिले का शोर उसने अचानक सुना । उसने देखा ऊँट पर एक व्यक्ति सवार था । देखने में वह मुखिया लग रहा था । उसके पास पिंजड़े में बंद पक्षी थे । उनमें घोर करुण चीत्कार उन घायल और मौत से जूझते, दम तोड़ते हुए पक्षियों का था, जिन्हें उस कारवाँ का मुखिया ऊँटों की पीठ पर जालों में फँसाकर खान साहब के महल की तरफ लिए जा रहा था । मौत से डरे, मरे-मरे-से पक्षी, मुक्ति के लिए छटपटा रहे थे ।

उस उदार हृदय युवक से वह करुण क्रंदन नहीं देखा गया तो उसने मुखिया से बात की । मुखिया को समझाया कि प्राणिमात्र पर दया करना सबसे बड़ा धर्म है । उसने कहा, ‘‘इन निरीह पक्षियों को स्वतंत्र करके पुण्य की कमाई कर लें क्योंकि पुण्य ही सबसे बड़ा कर्म है ।’’ उन निरीह पक्षियों को छोड़ देने का आग्रह सुनकर मुखिया हाथ जोड़कर बोला, ‘‘खान साहब, इन चिड़ियों के बदले पाँच सौ नकद स्वर्ण मुद्राएँ देंगे । तुम्हारे पास क्या है जो मैं इन्हें छोड़ दूँ ?’’ सभी प्राणियों का दर्द समझने वाले उस युवक ने सोने के सिक्कों से भरी हुई थैली का मुँह उस लालची मुखिया के आगे खोल दिया । उस सुनहली दौलत को देखकर मुखिया की आँखें फैल गईं । बात- बात में सारे पक्षी मुक्त कर दिए गए ।

अब वह शिष्य मन मारकर अपने गुरु के पास लौट रहा था । मुक्त हुए सभी पक्षी उसपर छाया करते और चहचहाते, गीत गाते-से चल रहे थे । फिर भी उस शिष्य के पैर यह सोचकर मानो जड़ होते जा रहे थे कि वह अपने गुरु को क्या उत्तर देगा ? क्या करने आया था और तैश में आकर क्या कर बैठा ? इसी सोच में वह अभागा मृत्यु की कामना करते-करते थककर सो गया ।

नींद में स्वप्न, स्वप्न में पक्षियों की मुक्त चहचहाहट के बीच उन पक्षियों की रंग-बिरंगी रानी उसके सीने पर फुदक-फुदककर जगा रही थीं, ‘‘उठो, भोले-भाले, होनहार, दयालु साथी ! अपने सभी दुख भूल जाओ । हम सभी आजाद पक्षियों ने मिलकर पहले ही तुम्हारे उस विशाल भूखंड में तरह-तरह के फलों के बीज बो दिए हैं । आँखें खोलो और वहाँ जाकर देखो ।’’

अब वह युवक जागकर उन मैदानों की ओर सरपट दौड़ने लगा । उसके आगे-पीछे और ऊपर तक न केवल पक्षियों की चहचहाहट-ही-चहचहाहट थी बल्कि वहाँ जाकर उसने यह भी देखा कि दुनियाभर के तमाम पक्षी अपनी चोंचों और पंजों से धरती खोद रहे हैं, शिष्यों के साथ कुछ लोग बीज बो रहे हैं, पौधे लगा रहे हैं।

उसके गुरु और अन्य एकत्रजन मुक्ति के इस प्रतिदान का करिश्मा देखकर फूले ही नहीं समा रहे थे बल्कि वे भी बागवानी में बढ़-चढ़कर हाथ बँटा रहे थे ।

❑ पाठ में आए शिष्य, रानी, भोला-भाला, ऊँट, मुखिया, बालक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर लिखवाएँ । रास्ते में चलते समय यदि किसी विद्‍यार्थी को कोई मूल्यवान वस्तु, दस्तावेज आदि मिल जाए तो वह क्या करेगा, बताने के लिए कहें ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसी सुनी हुई कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रतिदान = बदले में दिया गया दान
महात्मा = सज्जन, सत्पुरुष
चकाचौंध = चमक-दमक
क्रंदन = विलाप
अभागा = बदनसीब
करिश्मा = चमत्कार

मुहावरे

गदगद होना = अत्यधिक खुश होना
बाँछें खिलना = खूब प्रसन्न होना
श्रीगणेश करना = प्रारंभ करना
आँखें फैल जाना = चकित होना
फूला न समाना = बहुत खुश होना
तैश में आना = जोश/आवेश में आना
हाथ बँटाना = सहयोग करना

सुनो तो जरा

अपनी बोली भाषा का कोई त्योहार गीत सुनो, सुनाओ ।

वाचन जगत से

समाचार पत्र से न्याय संबंधी कोई घटना पढ़ो । उससे संबंधित रोचक तथ्य बताओ ।

बताओ तो सही

'बेटी बचाओ' अभियान पर सूचनानुसार सामग्री तैयार करो और सुनाओ :

- पोस्टर
- घोषवाक्य
- सुविचार
- विज्ञापन

खोजबीन

'मृदा परीक्षण' से संबंधित सरकारी योजनाएँ ढूँढ़कर ज्ञात करो और लिखो :

- मृदा के प्रकार
- प्रयोगशाला और विधि
- लाभान्वित व्यक्ति

www.soilhealth.dac.gov.in

अध्ययन कौशल

भाषाई सौंदर्यवाले वाक्य, उद्धरणों का संकलन करो और लेखन में प्रयोग करो ।

✻ इस पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

(क) अक्षम्य और कठोर दंड
(ख) ईश्वरीय न्याय और संपदा
(ग) सुनहली दौलत
(घ) चौक-बाजार
(च) गुरु और अन्य एकत्रजन
(छ) सुंदर बाग

सदैव ध्यान में रखो

स्वतंत्रता प्रत्येक का अधिकार है ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । वाक्यों के वचन बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो :

१. मैं बुरी रीति को मिटाना चाहता हूँ ।
....

२. खेत में सिंचाई के लिए नहर से पानी लेते हैं ।
....

३. छतों पर रखी पानी की कटोरियाँ खाली थीं ।
....

४. विद्‌यार्थी ने अतिथि को माला पहनाई ।
....

५. चोर कीमती वस्तुएँ लेकर भाग गए ।
....

६. कुटी में साधु ध्यान लगाकर बैठे हैं ।
....

७. वन में मोर नाचता है ।
....

८. हमने स्वतंत्रता दिवस पर नारे लगाए ।
....

९. सभा में राजा सहयोगी से चर्चा कर रहे थे ।
....

१०. गुणवान वधू की प्रशंसा होती है ।
....

● **पढ़ो और समझो :**

४. पहचानो तो !

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखक ने विद्‌यार्थियों को कृति एवं बुद्‌धिमंथन के लिए प्रोत्साहित किया है ।

[चित्रकार, अभिनेता, वैज्ञानिक, पत्रकार बगीचे में बैठकर आपस में बातचीत कर रहे हैं । अचानक कुछ शोर-सा सुनाई पड़ता है । सभी उस ओर देखने लगते हैं ।]

अभिनेता : ये कैसा शोर है ? जरा पता करो कि बात क्या है ?

पत्रकार : मैं देखती हूँ कि कौन शोर मचा रहा है ।

वैज्ञानिक : कहीं भी शांति नहीं है । जहाँ जाओ वहीं शोरगुल, वही भीड़-भाड़ ।

पत्रकार : **(लौटकर)** सुनो मित्रो, ये तो बड़ी मजेदार घटना है । कुछ अंक अपनी गणित की किताब से निकलकर इस बगीचे में घूमने आए हैं ।

अभिनेता : हा-हा-हा ! भला ऐसा भी कभी होता है !

चित्रकार : होने को क्या नहीं हो सकता ? ये दुनिया बड़ी जादूभरी है ।

वैज्ञानिक : चलो, जरा देखें तो ये अंक किताबों से बाहर कैसे दिखाई देते हैं !

पत्रकार : पर आप लोग इनको पहचान नहीं पाएँगे । ये अंक रूप बदलकर आए हैं ।

अभिनेता : यानी ये अभिनय कर रहे हैं । वाह-वाह ! चलो चलें ! हम भी आनंद लें इनके अभिनय का ।

पत्रकार : हाँ, ये सब गणित को छोड़कर भाषा के रंग-बिरंगे मुखौटे पहनकर, भेष बदलकर आए हैं ।

चित्रकार : चलें, सब मिलकर देखते हैं इनका खेल । **(वे सब उनके पास पहुँचे तो दंग रह गए । ये अंक आज कितने सुंदर और आकर्षक लग रहे हैं । जोड़ना-घटाना तो उनकी नियति थी । आज तो ये संक्रियाएँ और भी मजेदार हो गई हैं ।)**

वैज्ञानिक : अरे वाह ! आओ बच्चो तुम भी देखो; समझो और करो :

एक साल के दिन + लीप वर्ष में फरवरी के दिन + एक सप्ताह के दिन = ३६५+२९+७

तीन सौ पैंसठ + उनतीस + सात = चार सौ एक

❑ पाठ का मौन वाचन कराएँ । दिए गए विषय पर प्रश्नोत्तर एवं चर्चा कराएँ । उदाहरण की तरह एक से सात तक के गणितीय प्रश्नों के हल, अक्षरों में लिखवाएँ । विद्‌यार्थियों से १ से १०० तक की उलटी गिनती अंकों, अक्षरों में लिखवाएँ, एक-दूसरे से जाँच कराएँ ।

१. इंद्रधनुष के रंग + चौराहा + एक हाथ की उँगलियाँ =

+ + =

२. घड़ी की सुइयाँ + घड़ी के कुल अंक + दो दिन के घंटे =

+ + =

३. शिक्षा दिवस + संविधान दिवस + विज्ञान दिवस =

+ + =

४. क्रिसमस दिवस + योग दिवस + महाराष्ट्र दिवस =

+ + =

५. एक पखवाड़ा + पंचमी तिथि + साक्षरता दिवस =

+ + =

६. गांधी जयंती + बाल दिवस + गणतंत्र दिवस =

+ + =

७. अप्रैल का महीना + अगस्त महीने के कुल दिन + जून के कुल दिन =

+ + 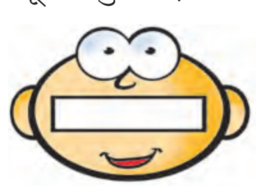 =

❑ पाठ में आए 'विशेष दिवसों' पर चर्चा कराएँ। इनमें से उनकी पसंद के किन्हीं दो 'दिवस विशेष' पर आठ से दस वाक्य लिखवाएँ। इसी प्रकार के खेल उन्हें तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करें। आवश्यकतानुसार गणित, विज्ञान के शिक्षकों की सहायता लें।

● **पढ़ो और समझो :**

५. चिड़िया की पाती

– राजेश गनोदवाले

जन्म : ५ मई १९६७ रायपुर (छ.ग.) **रचनाएँ :** एक शहर था रायगढ़, शैलचित्र, पाँच कॉफी टेबल बुक आदि **परिचय :** गत २५ वर्षों से पत्रकारिता के क्षेत्र से संलग्न, अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, कला समीक्षक के रूप प्रसिद्‌ध हैं ।

प्रस्तुत पत्र के माध्यम से लेखक ने वृक्ष, पर्यावरण एवं प्राणी संरक्षण के लिए हमें जागृत किया है ।

अध्ययन कौशल

'पर्यावरण सप्ताह' के बारे में पोस्टर बनाने हेतु निम्न मुद्‌दों की सहायता से चर्चा करो :

- वर्ड आर्ट
- ग्राफिक आर्ट
- चित्र
- कालावधि

5R7GCQ

माननीय मुख्यमंत्री जी,

सादर नमस्कार ।

मैं, गौरैया हूँ । वही जिसे आप सब चिड़िया कह लिया करते हैं । वही गौरैया जो आपके गाँव के घर के आँगन में फुदकती रहती थी । जिसे बचपन में भोजन करते समय आप चावल के दाने खिलाया करते थे । जिसके घोंसले देखने के लिए कभी-कभी दिनभर भटकते रहते थे । जंगल कट गए । मैं भी शहर में आ गई। चौंक गए न, कि भला चिड़िया का मुख्यमंत्री से क्या काम ? वैसे भी मेरी औकात इतनी कहाँ कि आपके सामने फरियाद लाऊँ, एकाध बार मन बनाया कि जनदर्शन में मिलूँ लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी । कोई हमारी पंचायत तो है नहीं लेकिन अधिकारियों ने इधर हालात ही कुछ ऐसे कर दिए कि अपनी पीड़ा (वैसे हम सबकी) आपके सामने कहने का साहस किया क्योंकि मैं आपके राज्य की निवासी हूँ सो आप ही नजर आ रहे हैं । आपसे सबका काम पड़ता रहता है तो भला इस दुख की घड़ी में मैं कहाँ जाऊँ ? मैं आप तक पहुँच सकती नहीं । अतः पत्र लिखकर अपनी बात आप तक पहुँचा रही हूँ ।

बात ऐसी है, मैं टाउन हॉल परिसर में रहा करती थी, पता ठिकाना तो मेरा अब भी नहीं है लेकिन घर उजड़ गया । आप याद कीजिए इसी टाउन हॉल के बाहर दो घने पेड़ थे । अपने रंग में रँगे हुए हरे-भरे लहलहाते झूमते रहते थे। कभी किसी को कोई कष्ट नहीं पहुँचाते थे । अच्छे तंदुरुस्त बिलकुल एक किनारे, किसी के लिए इन पेड़ों ने कभी अड़चन पैदा नहीं की । हमारी बिरादरी के लिए तो जैसे दोनों बुजुर्ग पेड़ वरदान थे । मेरी माँ से मैंने सुना था उनकी माँ भी इसी पेड़ की ऊपरी शाखा पर जन्मी थीं । जानते हैं, इसी पेड़ में मैंने अपना जीवन साथी पाया । बीते वसंत में मेरा परिवार बढ़ा और मैं भी दो बच्चों की माँ बनी । बच्चे मुझी पर

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ में आए मुद्‌दों को स्पष्ट करें । 'वृक्षों की आवश्यकता और उपयोगिता' विषय पर निबंध लिखने हेतु प्रेरित करें ।

'सौजन्य सप्ताह' के लिए घोषवाक्यों सहित चित्र बनाओ और विद्यालय में प्रदर्शनी लगाओ ।

गए हैं, ऐसा रिश्तेदार कहा करते थे । अपनी दिनचर्या के मुताबिक इन बच्चों को घोंसले में बेखौफ छोड़ मैं दाना-पानी की तलाश में उड़ जाया करती थी । सभी जानते हैं कि हम वैसी भी नरम-नाजुक हुआ करती हैं; उसपर हमारे बच्चे । उनकी उम्र ही क्या थी । उस समय वे इतने कोमल थे कि पेड़ों की पत्तियों का शोरगुल सुन आँखें मूँद लिया करते थे, फिर दिनभर का शोरगुल अलग । इन पेड़ों का यही घनापन भयंकरतम शोर को रोक दिया करता था और मैं अपने बच्चों के संग चैन की नींद में डूब जाया करती थी । दोपहर में मैंने लोगों को इन्हीं वृक्षों की छाँह में दो पल सुस्ताते भी देखा है । कई दफा हॉल के कार्यक्रमों में आए मेहमान भी इन्हीं पेड़ों की छाँह में बैठे खाना खाते दिखते थे । इसी बहाने हमें भी कुछ दाना-पानी मिल जाता था ।

सब कुछ ठीक था कि अचानक एक रोज हम लोगों की दुनिया उजड़ गई । अचानक कुछ लोग आए और इन पेड़ों के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगे । उनके

इरादे ठीक नहीं थे, मैं इतना डर गई कि उस दिन घोंसले से निकली नहीं, मेरे बच्चे तो पंखों की ओट में दुबक गए । शाम होने को आई; मैं घोंसले में ही रही । सूरज डूब रहा था। शाखाएँ भी शांत थीं और पेड़ सोने की तैयारी में । अचानक लगा पेड़ को कोई पूरी तरह हिला रहा हो । देखा तो कलेजा मुँह को आ गया । पेड़ काटा जा रहा था, मैं अपने बच्चों को सँभाल भी न सकी जैसे तेज आँधी चली हो । कुछ ही समय में वह पेड़ जमीन पर था और मेरे बच्चों का कहीं अता-पता नहीं, ना मालूम किधर फेंका गए। पेड़ क्या कटा हमारे भाई-बंद, सखा सब उजड़ गए ।

पता चला कि सौंदर्यीकरण में बाधा थे ये पेड़, इसीलिए काटे गए । मुझे नई जानकारी मिली कि पेड़ों से सौंदर्य खराब होता है । हमने तो उस पेड़ में, बसेरा बनाया था जो न ही ट्रैफिक के हिसाब से परेशानी खड़ी करता था और न ही सौंदर्य के पहलू से, वरन ये पेड़ घनी छाया देते थे । खैर, अपने बच्चों के चक्कर में, मैं पेड़ कटने का दर्द लगभग भूल गई थी । चिट्‌ठी लिखने की नौबत भी नहीं आती लेकिन सौंदर्यीकरण की दुहाई देते आठ-दस पेड़ों पर फिर कुल्हाड़ी चल गई । अब जो पेड़ कटे वे कलेक्टोरेट के पीछे एक झुरमुटे में से हैं, जहाँ मैंने नया ठिकाना ढूँढ़ा था । भला अब इन पेड़ों से कैसी बाधा थी ? बड़ा अजीब है । वैसे भी आजकल शहरों में पेड़ों का 'सफाया उत्सव' चल रहा है । प्रशासन और अफसर, कौन देता है अनुमति ? ठीक है विकास होना चाहिए, 'फोर लेन' जरूरी है लेकिन कोई ये क्यों नहीं समझता कि पेड़ और पक्षी भी उतने ही जरूरी हैं ।

ताज्जुब मुझे इस बात का होता है कि पर्यावरण की बात करने वाले लोग, सभा-समितियाँ भी मौन साधे बैठी हैं ! कोई सरकारी अफसर तो इस तरफ सोचने से रहा । इतना तो आप भी जानते हैं कि आजकल पेड़ों के विस्थापन की नई तकनीक आ गई है । अब तो

❑ 'गौरैया' के संरक्षण हेतु विद्यार्थी क्या-क्या कर सकते हैं, उनसे पूछें । उनके आस-पास के वृक्षों की सूची बनवाएँ । इस पत्र के मूल आशय को विद्यार्थियों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें । वृक्षों के योगदान पर भित्तिचित्र, पोस्टर, घोषवाक्य बनवाएँ ।

वाचन जगत से

किसी महान विभूति द्‌वारा लिखे गए पत्रों के संग्रह को पढ़ो तथा संकलन करो ।

पूरा का पूरा पेड़ उठाकर ठीक उसी तरह इनका अन्यत्र रोपण किया जा सकता है । हम उसकी मदद ले सकते हैं पर ऐसा भी नहीं हो रहा । आरी वहाँ-वहाँ तो चल ही रही है जहाँ कोई चारा नहीं लेकिन वहाँ क्यों, जिधर जरूरत नहीं है ।

पहले विचार किया कि अपनी बिरादरी के संग आपसे मन का दुख बाँटती, पर मिलना आसान कहाँ, फिर उससे फायदा भी क्या होता ? आपके पास समय कहाँ है । आजकल सब कुछ है ये मुआ वक्त ही तो नहीं है । एक ही चारा नजर आया, चिट्‌ठी लिखूँ । कहते हैं, पीड़ा का अनुभव वैद्‌य ही कर पाते हैं। आपसे बड़ा भला कौन वैद्‌य हो सकता है । आपके पास इतने संसाधन हैं । आपके एक इशारे पर चीजें इधर से उधर हो जाती हैं । मैंने सोचा कि अपनी बात आप तक पहुँचाऊँ । फिर सोचा कि भला मेरी बात कौन आप तक पहुँचाएगा ? बहुत सोच-विचार करके यह पत्र लिख रही हूँ । पत्र में मैं विस्तृत रूप से अपने एवं अपने साथियों पर आए संकट का विवरण दिया है। बिना पत्र के आपको कैसे पता लगेगा कि हमारी पूरी प्रजाति संकट में है । शहर-गाँव हमारे ठौर-ठिकाने थे, धीरे-धीरे वे नष्ट होते जा रहे हैं, बड़ी खामोशी से हम गायब हुई जा रही हैं । कभी समय मिले तो पैदल घूमकर देखिए । धूल से फेफड़े जाम हो रहे हैं । कोई ठीक से साँस भी नहीं ले पाता, पेड़-पौधों की हरी पत्तियाँ तो ऐसे नजर आती हैं मानो उन्हें पीलिया हो गया हो । ताजा हवा की तलाश में सुबह लोग घूमने निकलते हैं । वे हवा कम, प्रदूषण अधिक लेकर लौटते हैं ।

इन बगीचों में सुबह-सुबह मैं जब लोगों को हँसते देखती हूँ तो मेरे लिए तय करना मुश्किल हो जाता है कि वो हँस रहे हैं या हाँफ रहे हैं ! शिकायत इसीलिए नहीं करने बैठ गई कि मेरा घोंसला उजड़ गया । पेड़ हम सबके हैं, हमारी उम्र तो वैसे भी कम हुआ करती है । आप लोग देखिए, कैसे जी पाएँगे ? आपके सामने तो पूरी पीढ़ी है । कैसे जिएगी ? क्या होगा अपने आने वाली पीढ़ी का भविष्य ? मेरी बातें कड़वी लगे तो क्षमा कर दीजिएगा । यों भी मेरे फेफड़े जल्दी जवाब देने लगते हैं । फिर किसी घने पेड़ में फुदकती हूँ तो कुछ राहत मिलती है । काफी समय लिया, बड़ी व्यस्त दिनचर्या रहती है आपकी । मैं भी अपने बच्चों की तलाश में निकलती हूँ । न जाने दोनों हैं भी या नहीं, हैं तो किस हाल में । कड़ा कदम उठाइए, ताकि हमारा यह नगर, हमारा राज्य हरा-भरा बना रहे ।

सादर
आपकी गौरैया,
निवासी उजड़ा घोंसला,
उपवन नगरी, अपना राज्य

❑ पाठ से कुछ वाक्यों का चुनाव करके रचना के अनुसार वाक्यभेद बताने एवं लिखने के लिए प्रेरित करें । यदि उनके आसपास वृक्षों की कटाई हो रही है तो वे क्या करेंगे ? उनकी भूमिका क्या होगी, इसके संदर्भ में किनसे संपर्क करेंगे, पूछें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

औकात = हैसियत, वश

बिरादरी = एक ही जाति का समूह

बेखौफ =बिना डर के, निडर

चारा = घास

पीलिया = एक रोग

मुहावरा

मौन साधकर बैठना = शांत होकर बैठना

विचार मंथन

।। वृक्षवल्ली आम्हां सोयरे वनचरे ।।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

हमारी पृथ्वी के पास अगर दूसरा सूरज आ जाए तो ....

मेरी कलम से

संचार माध्यमों पर मुद्दों के आधार पर निबंध लिखो :

- लाभ
- हानि
- उपसंहार

सुनो तो जरा

दूरदर्शन के विज्ञापन सुनो और पुनःस्मरण करते हुए नए रूप में सुनाओ ।

बताओ तो सही

'संतुलित आहार' इस विषय पर संवेदनायुक्त भाषण दो :

- प्रस्तावना
- जीवनसत्त्व
- स्वानुभव
- निष्कर्ष

खोजबीन

'आम्ल वर्षा' की जानकारी अंतरजाल की सहायता से खोजकर लिखो :

- निर्मिति
- कारक
- परिणाम

✲ पाठ के आधार पर कारण लिखो :

(क) चिड़िया को मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखना पड़ा ।

(ख) चिड़िया का उन पेड़ों से आत्मिक संबंध ।

(ग) चिड़िया को आश्चर्य हुआ ।

(घ) चिड़िया की बुरी हालत ।

सदैव ध्यान में रखो

संतुलित पर्यावरण के लिए 'इको फ्रेंडली' होना चाहिए ।

भाषा की ओर

निम्न वाक्य पढ़ो । इन वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर परिवर्तित वाक्य पुनः लिखो :

१. रेल स्थानक पर निवेदिका उद्घोषणा करती है ।

....

२. मेरा पुत्र गीत प्रस्तुत कर रहा था ।

....

३. सफेद घोड़ी तेज दौड़ती है ।

....

४. भारत वीरों की भूमि है ।

....

५. सभा में विद्‌वान शास्त्रार्थ करेंगे ।

....

६. मालकिन नौकर से काम करवा रही है ।

....

७. शेर शावकों को शिकार के गुर सिखाता है ।

....

८. भाभियों ने इस वर्ष जमकर होली खेली ।

....

९. बंदर नकलची होता है ।

....

१०. साम्राज्ञी नौका विहार का आनंद ले रही थी ।

....

● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

६. हँसिकाएँ

– डॉ. सरोजनी प्रीतम

जन्म : ६ सितंबर १९३९ **रचनाएँ :** पंखोंवाला फूल, मूरखचंद, मेरी प्रतिनिधि हँसिकाएँ, चूहे और आदमी में फर्क, लाइन पर लाइन, आखिरी स्वयंवर **परिचय :** सरोजनी प्रीतम आधुनिक हिंदी साहित्य की सुपरिचित महिला साहित्यकार और कवयित्री हैं ।

प्रस्तुत क्षणिकाओं में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से कवयित्री ने समाज की विसंगतियों को चित्रित किया है ।

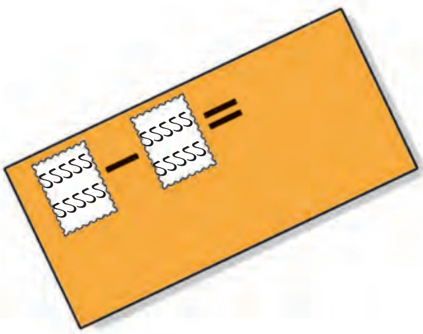

✻ फल

आज की पीढ़ी कितनी तेज है !
सब्र का फल मीठा
लेकिन उन्हें मीठे से परहेज है ।

✻ समस्या का निदान

दस रुपये और तीन रुपये के
डाक टिकट लाए
दुविधा में थे-सात रुपये का
टिकट कैसे लगाएँ ?
नन्हे ने देखा तो -
नन्हे का था कहना
'दस और तीन की दो
टिकटें लगाकर
बीच में ऋण का चिह्न
लगा देना ।'

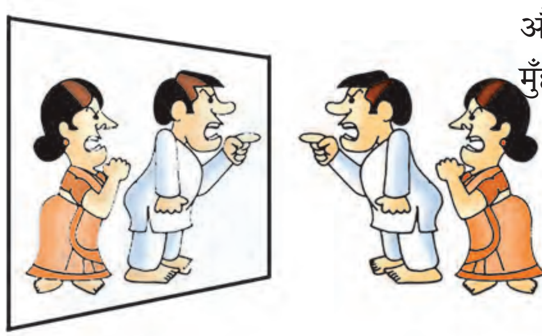

✻ दर्पण

साहित्यकार पति ने कहा,
''साहित्य को सब अर्पण है ।''
'दर्पण' सुनकर वे बोलीं,
''ठीक है, इससे ज्यादा सिर मत फोड़ना
और एकाध दर्पण
मुँह देखने के लिए भी रख छोड़ना ।''

✻ बीमा

सुनो जी, खुश हो जाओ ।
मेरा तो दो लाख का बीमा हो गया
तो गुस्से से अनपढ़ पत्नी बोली
खुशी तो उस दिन होगी
जिस दिन ये रकम जल्दी मिले,
इसके लिए करना क्या पड़ता है ?
वो बोले- पहले मरना ही पड़ता है ।

5RGCED

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ हँसिकाएँ विद्यार्थियों को सुनाएँ । एकल एवं गुट में इन कविताओं को अभिनय के साथ सुनाने के लिए कहें । विद्यार्थियों को सुने हुए अन्य हास्य गीत, पढ़ी हुई हास्य कविता या चुटकुले सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो, समझो और बताओ :

७. बादलों की काव्य सृष्टि

–आचार्य काका कालेलकर

जन्म : १ दिसंबर १८८५, सातारा (महाराष्ट्र) **मृत्यु :** २१ अगस्त १९८१ **रचनाएँ :** स्मरण-यात्रा, धर्मोदय, हिमालयनो प्रवास, लोकमाता, जीवननो आनंद, अवरनावर **परिचय :** आचार्य कालेलकर जी प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, पत्रकार और स्वतंत्रता संग्राम के विख्यात सेनानी थे । प्रस्तुत निबंध के माध्यम से काका कालेलकर जी ने हमें पहाड़ों एवं बादलों के सौंदर्य से अवगत कराया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

आकाश के बादलों का वर्णन और काव्य जितना वैज्ञानिकों ने किया है उतना कवियों ने शायद ही किया होगा । अगर किया हो तो मेरी नजर में नहीं आया । किसी भी देश के कवि को ले लीजिए । बादलों की शोभा से वे आकर्षित तो होते ही हैं । कुदरत का वर्णन करते हुए वे कभी बादलों को नहीं भूलते लेकिन बादलों का नाम लिया, दो-चार शब्दों में उनका वर्णन किया तो उनके मन में बादलों का तर्पण यथेष्ट हो गया । बादलों को रूई की उपमा दी, सफेद ऊन की उपमा दी या कभी कुमकुम की उपमा दी तो पूरा हो गया । सच्चे बादल-प्रेमियों को इससे संतोष कैसे होगा ?

मेरे बचपन में जब हम विज्ञान पढ़ते थे तब बादलों के चार मुख्य विभाग बताए जाते थे । ये चारों किस्म के बादल आसानी से पहचाने जाते हैं । लेकिन आज जलवायु के शास्त्र के साथ बादलों का विज्ञान भी बहुत कुछ बढ़ गया है और बादलों के असंख्य प्रकार, उनकी खूबियाँ और उनके नाम सबका विस्तार इतना बढ़ा है कि प्रकृति प्रेमी कवि कहीं के कहीं पिछड़ गए हैं । हमारे प्राचीन कवि काले-श्याम बादलों को राक्षसों की उपमा देते थे । नव जलधर को देखते ही उन्हें दृप्त निशाचर का भ्रम होता था । जलराशि के भार से 'भूरि विलंबिनो घनो' को देखकर उन्हें परोपकारी सज्जनों की नम्रता याद आती थी । 'भडली वाक्य' की रचना करने वाले सहदेव के शिष्य किसान या खलासी लोग बादलों का जितना निरीक्षण करते थे उतना कवियों ने किया हो तो वह अभी तक हमारे सामने आया ही नहीं है ।

हमारे कवियों ने छहों ऋतुओं के कितने-कितने सुंदर वर्णन किए हैं किंतु छहों ऋतुओं के बादलों की अलग-अलग शोभा उन्होंने क्यों नहीं दी ?

उषा काल के बादल, सूर्योदय के बादल, दोपहर के निराग्रही, अनासक्त बादल, संध्या के उज्ज्वल और विलासी बादल और रात के राक्षसों जैसे बादल इनका अलग-अलग वर्णन, वर्णन तो क्या व्यक्ति परिचय हमें

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । मुखर एवं शुद्ध वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के सभी मुद्दों को स्पष्ट करें । अंतरजाल/पुस्तकालय के माध्यम से 'बादलों' के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें ।

विचार मंथन

।। हर बूँद मोती नहीं बनती ।।

मिलता है । पूर्णिमा के दिन चंद्र के साथ खेल करने वाले बादल और द्‌वितीया के चंद्र की शोभा बढ़ाने वाले बादल एक से नहीं होते । बारिश के दिनों में सारे आकाश पर अपना साम्राज्य जमाकर अनंत आकाश को संकुचित करने वाले बादल जुदे और सारे क्षितिज पर अपना व्यवस्थित वलय फैलाकर आकाश के नीले गुंबद की अखंड शोभा बढ़ाने वाले बादल जुदे ।

हिमालय जैसे पहाड़ों के शिखर पर सवार न होते हुए शिखर के नीचे फैलकर शिखर को स्वर्गीय उन्नति देने वाले बादल अलग और उन्हीं शिखरों की शोभा सस्ती न बने इसलिए उनके सामने परदा खड़ा करने वाले बादल अलग । अगर कोई माने कि समुद्र के ऊपर के बादल और रेगिस्तान के ऊपर के बादल एक ही किस्म के होते हैं तो कहना पड़ेगा कि ऐसे लोगों ने बादलों का निरीक्षण ही नहीं किया ।

जिन ऋतुओं में आकाश के वायु या पवन सैकड़ों मील सीधे दौड़ते हैं उन ऋतुओं में हाथ के पंजे की उँगलियों के जैसे बादलों के पंखे क्षितिज पर आमने-सामने दीख पड़ते हैं । कभी दक्षिणोत्तर तो कभी पूर्व-पश्चिम । वास्तव में आकाश में ऐसे पंखे नहीं होते । लेकिन वह एक प्रकार का दृष्टिभ्रम है । रेल की सीधी पटरियाँ दूर जाते एकत्र मिलती-सी दीख पड़ती हैं, वैसा ही यह दृष्टिभ्रम है ।

हम पहले से मानते और कहते आए हैं कि बादलों का क्षेत्र अनंत है । लेकिन हमें उन क्षेत्रों की पूरी कल्पना नहीं थी । वह तो हमारी पृथ्वी पर खड़े होकर आकाश की ओर ताकने से बनी हुई मर्यादित कल्पना थी । कभी-कभी पहाड़ की चोटी पर से नीचे की ओर फैली हुई घाटियों की तरफ देखने से बादलों की सारी शोभा नई ही बन जाती है । पुणे के पास सिंहगढ़ के पहाड़ी किले पर मैं काफी रहा हूँ । वहाँ पहाड़ पर से कच्चे बादल दौड़ते दीखते थे। नीचे की खीण (घाटी) में

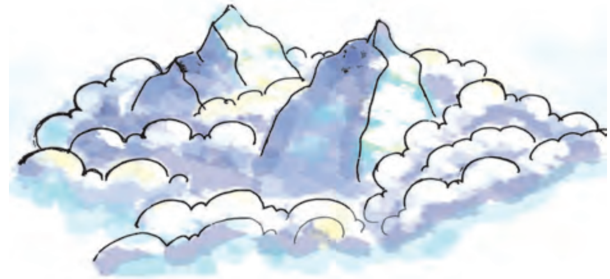

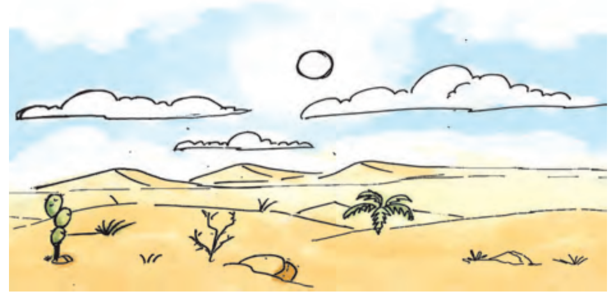

कायोत्सर्ग करके कूद पड़ते थे तब उनकी वीरता देखकर मैं दंग रह जाता था । इससे उलटा जब हिमालय की घाटियों में रात को सोए हुए बादल सुबह आठ नौ बजे के बाद आँखें मलते-मलते उठते थे और धीरे-धीरे आकाश में ऊँचे जाकर उत्तर की यात्रा के लिए प्रस्तुत हो जाते थे तब मैं बादलों के राष्ट्रों का इतिहास समझने की कोशिश करता था ।

जब हवाई जहाज में बैठकर हम पृथ्वी को छोड़ सकें और बादलों को बींधकर उनके भी ऊपर जा सकें तब तो सारी दृष्टि ही बदल गई । जब पृथ्वी छोड़कर मनुष्य बादलों को भी ऊपर से देखता है, तब तो अभूतपूर्व या अदृष्टपूर्व विस्तार उसे देखने को मिलता है । सैकड़ों मील तक फैले हुए बादलों के पहाड़ उनके उत्तुंग शिखर और बीच की घाटियाँ, यह सब देखकर मनुष्य कहने लगता है कि 'पिछली जिंदगी में हमने ऐसे नजारे की कल्पना भी नहीं की थी ।'

इन व्योम काव्यों में इंद्रधनुष भी होते हैं, उभयसंध्या की शोभा भी होती है । बादलों के अंदर अथवा बादलों से बने हुए रेगिस्तान भी देखने को मिलते हैं और बीच-बीच में छोटे-मोटे सरोवर भी बनते हैं । सचमुच पृथ्वी की उदारता से वातावरण को जो बादल मिलते हैं उनके लिए सूर्य की किरणों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए ।

- पाठ में आए विशेष संदर्भों के बारे में पुस्तकालय एवं अंतरजाल से जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । 'बादल बनने की प्रक्रिया' का वर्णन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।

सुनो तो जरा

आकाशवाणी, ई न्यूज, दूरदर्शन से खेल संबंधी समाचार सुनो और सुनाओ ।

सूर्य की किरण, आकाश की पवन और पहाड़ों के प्रतिबंध सबके सहयोग से बादलों की सृष्टि पैदा होती है और एक विशाल यज्ञ चक्र चलता रहता है । समुद्र का पानी बादल के रूप में आकाश में चढ़ता है और बारिश के रूप में समुद्र के पास पहुँच जाता है । बादलों में फटे हुए बादल बड़े सुहावने लगते हैं । बादलों के पुंज के ढेर जब बनते हैं तब तो वे बर्फ के पहाड़ों के जैसे भव्य और स्वर्गीय दीख पड़ते ही हैं लेकिन केवल घने बादल शायद ही विशेष शोभास्पद होते हैं ।

जिंदगी में हिमाच्छादित शिखर पहली बार देखने से ऐसी धन्यता हुई कि आयुष्य में इस दिन का महत्त्व दृढ़ करने के लिए मैंने उस दिन अपनी छोटी-सी वासरी में उसका विशेष जिक्र किया था । विशालकाय सफेद-सफेद शिखर देखकर ही मैं तृप्त और मस्त हुआ था लेकिन देखा कि वे भव्य पहाड़ भी अपने ढंग का नखरा कर सकते हैं । जब सूरज पश्चिम की ओर ढल पड़ा तब शिखरों के रंग कुछ फीके-पीले-से हो गए । अब वे पहले से ज्यादा मोहक होने लगे । बर्फ के रंग देखते-देखते ऐसे बदलने लगे कि एक क्षण के लिए भी नजर उनपर से हटना कोई अजीब सुंदरता खोने जैसा था और कितना आश्चर्य कि इतनी विलक्षण चंचलता का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होते हुए भी पहाड़ के चेहरे पर की गंभीरता याकाचित भी नष्ट नहीं होती थी ।

एक जगह खड़े रहने पर हिमालय के अनेकानेक शिखरों की एक पंक्ति उत्तर की ओर जब प्रकट होती है तब उसकी शोभा और उसकी भव्यता तो अवर्णनीय है ही । इससे भी अधिक ऊँचे जाकर जब नजर के सामने बीस-पचीस मील के प्रदेशों में शिखरों का बैठा हुआ सम्मेलन दीख पड़ता है तब वह भव्यता गौण होती है और विराट की समृद्धि ही हृदय को दबा देती है ।

हिमालय के बर्फीले पहाड़ों के ये जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक दर्शन हुए उनका स्मरण और वह अनुभव वर्षों तक चला । नैनीताल, अल्मोड़ा होकर कौसानी, वहाँ से उत्तर की ओर हिमालय तक सुदीर्घ, प्रदीर्घ, अनवरत शिखर माला दीख पड़ती है ।

ये शिखर हैं अत्यंत शीतल । उनका दर्शन भी उपशमप्रेरक, शांत, शीतल ही है । लेकिन एक तो इनका दर्शन निरंतर नहीं हो सकता और जब होता है तब ऐसे उत्कट और जीवन समृद्ध भावों को वे जागृत करते हैं कि उनका दर्शन ध्यान के लिए नहीं किंतु कवि की प्रतिभा के लिए ही पोषक है । जिस तरह एकरूप बादलों में भी अनंत और अकूत विविधता भरी रहती है उसी तरह इन कर्पूरगौर हिमशिखरों में भी केवल आकृति की नहीं, रंगों की छटा ही नहीं किंतु भावोत्कटता की भी अमर्याद विविधता होती है । जीवन के विविध और समृद्ध अनुभवों को जागृत करके उनका नवनीत निकालने के लिए इन शिखरों का दर्शन, स्मरण और चिंतन हर तरह से उपकारक हैं ।

❑ 'बादल की आत्मकथा' इस विषय पर दस-पंद्रह वाक्यों में निबंध लिखने के लिए कहें । पाठ में वर्णित विविध बादलों के चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । इंद्रधनुष के मूल रंग और उनसे बनने वाले रंगों के नाम लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुदरत = प्रकृति	**उत्तुंग** = ऊँचे
यथेष्ट = पर्याप्त	**याकाचित** = कभी
जलधर = बादल	**उपशम** = इच्छा
दृप्त = प्रचंड	**वासरी** = छोटा घर
जुदे (जुदा) = अलग	**उत्कट** = तीव्र
वलय = घेरा	**अकूत** = अत्यधिक
अनंत = अंतहीन	**अमर्याद** = असीम

स्वयं अध्ययन

मच्छरों के कारण फैलने वाले रोगों के संदर्भ में वैज्ञानिक जानकारी अंतरजाल/पुस्तकालय से प्राप्त करो और बताओ :

- रोग का नाम
- लक्षण
- उपाय

मेरी कलम से

जागतिक तापमान वृद्धि के कारण, इनपर होने वाले परिणाम ढूँढ़ो और चार्ट बनाओ :

- मानव
- जंगल
- जलस्रोत

बताओ तो सही

जब तुम बीमार होते हो तो उस समय घर के सदस्यों का तुम्हारे साथ होने वाला व्यवहार बताओ ।

- बहन-भाई
- दादी जी-दादा जी
- नाना जी-नानी जी
- माता-पिता

वाचन जगत से

माता-पिता के भ्रमणध्वनि पर संदेश आया है तो तुम क्या करोगे ?

अध्ययन कौशल

किसी समाजोपयोगी कार्यक्रम का वर्णन करने वाली टिप्पणी बनाओ/तैयार करो :

- कार्यक्रम का नाम
- दिन, समय, आयोजक
- प्रमुख अतिथि
- विशेष कार्यक्रम

खोजबीन

पिछले दो वर्षों के गर्मी के महीनों का तापमान ज्ञात करो और संयुक्त स्तंभालेख बनाओ ।

गणित सातवीं कक्षा पृष्ठ ५१-५२

❋ **इस अर्थ में प्रयुक्त हुए शब्द पाठ में ढूँढ़कर लिखो :**

(क) वसुंधरा = ... (ग) गिरि = ... (च) व्योम = ...

(ख) अनिल = ... (घ) संतुष्टि = ... (छ) उग्र/प्रचंड = ...

सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण शुद्ध रखना प्रत्येक की जिम्मेदारी है ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों को समझो ।

१. **हिमालय** देश का गौरव है ।

२. **परिश्रम** सफलता की कुंजी है ।

३. **निखिल** कश्मीर घूमने गया था ।

४. **मुंबई** देश की आर्थिक राजधानी है ।

५. **महासागर** अपने देश के चरण पखारता है ।

६. **दादी जी को** व्यंजन अच्छे लगते हैं ।

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, परिश्रम, निखिल, मुंबई, महासागर , दादी जी** इनके बारे में कहा गया है । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्देश्य** होता है ।

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में– **देश का गौरव है,** परिश्रम के बारे में–**सफलता की कुंजी है–** निखिल के बारे में– **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में–**देश की आर्थिक राजधानी है,** महासागर के बारे में– **अपने देश के चरण पखारता है,** दादी जी के बारे में**– व्यंजन अच्छे लगते हैं,** कहा गया है । उद्देश्य के बारे में जो कहा गया है वह **विधेय** होता है ।

❋ निम्न शब्दों का सही क्रम लगाकर वाक्य बनाओ तथा **उद्देश्य** और **विधेय** अलग करके तालिका में लिखो :

१. के उत्तर भारत है हिमालय में ।

२. पेड़ रही हैं चींटियाँ चढ़ पर ।

३. होने धीरे–धीरे लगा उजाला ।

४. टिड्डियों साफ ने दिया कर दल पूरा खेत के ।

५. जाती सजीव है पाई पृथ्वी सृष्टि पर ।

६. सुंदर बनाया चित्र ने मृदुल ।

सही वाक्य	उद्देश्य	विधेय
१.		
२.		
३.		
४.		
५.		
६.		

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

८. चित्र बोलते हैं

– किरण मिश्र अयोध्यावासी

जन्म : ५ जुलाई १९५३ **रचनाएँ :** चुंबक है आदमी, चंद्रबिंब, मंजीरा, पंछी भयभीत हैं । **परिचय :** नवगीतकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । इस कविता में कवि ने तूलिका की ताकत एवं चित्रों की महत्ता को दर्शाया है ।

सुनो तो जरा

किसी चित्र के पात्रों के बीच होने वाले संवाद की कल्पना करो और सुनाओ ।

सुनो तो जरा की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- किसी चित्र प्रदर्शनी में देखे हुए चित्रों के बारे में बताने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करें ।
- पहला चित्र उन्होंने कब और कैसे बनाया एक दूसरे से पूछने के लिए कहें ।
- अन्य चित्र दिखाकर पात्रों के बीच होने वाले संवाद पर चर्चा करें और संवाद कहलवाएँ ।

आओ, बैठो यहाँ मन खोलते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें, जब मित्र पूछते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

रंग लगी तूलिकाएँ कैनवास रँगतीं हैं ।
ऐसा लगता कोई नया सृजन करती हैं ।।
सप्तरंगी जीवन के दृश्य खोजते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

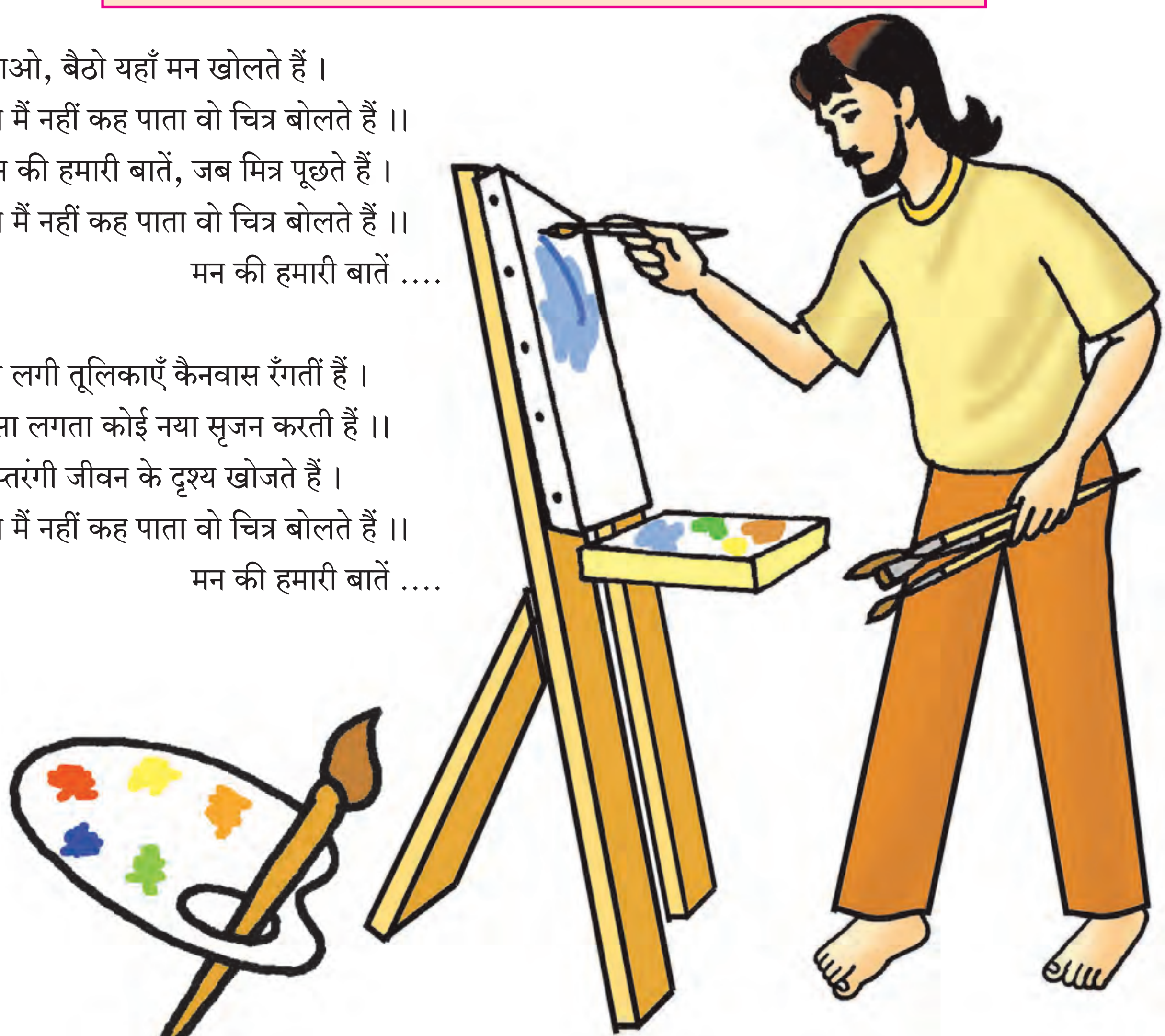

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में कविता का पाठ कराएँ । कविता में आए भावों पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से चर्चा करें । कविता के कौन-से भाव उन्हें अच्छे लगे, बताने के लिए प्रेरित करें ।

विचार मंथन

।। प्रकृति में बिखरे कितने रंग, मन में भर जाती उमंग ।।

चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित हैं ।
अंतर्मन से देखो हम उनमें जीवित हैं ।।
बस आप तक पहुँचने की राहें ढूँढ़ते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों की भाषा पढ़ने की जिन्हें आदत ।
वो जानते हैं चित्रों की ताकत-इबादत ।।
रचती वही तूलिका, जो मन में सोचते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

चित्रों के रंग, जीवन में रंगों को भरते हैं ।
चिंतन के सपनों को साकार करते हैं ।।
बनता वही चित्र जो भीतर से देखते हैं ।
जो मैं नहीं कह पाता वो चित्र बोलते हैं ।।
मन की हमारी बातें ....

❑ विद्यार्थियों से कहें कि वे अपनी पसंद का एक चित्र लेकर उसके बारे में दस से पंद्रह वाक्य लिखें । कविता में आए अनुस्वार, अनुनासिक, पंचमाक्षरयुक्त शब्द खोजवाकर इनका वर्गीकरण कराएँ तथा अन्य पंचमाक्षरों से बने शब्द लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

सृजन = रचना

इबादत = पूजा

सप्तरंगी = सात रंगोंवाला

तूलिका = चित्र अंकित करने की कलम या कूँची

राहें ढूँढ़ना = हल निकालना

सपने साकार करना = लक्ष्य प्राप्त करना ।

खोजबीन

रंग कैसे बनते हैं ? ढूँढ़ो और उनके उपयोग पढ़ो :

- प्राकृतिक रंग
- कृत्रिम रंग

जरा सोचो ......चर्चा करो

अगर चित्रों में जान आ जाए तो ......

बताओ तो सही

विविध क्षेत्रों में काम करने वाले कर्मचारी किस रंग की पोशाक (गणवेश) पहनते हैं ?

- नर्स
- वकील
- यातायात पुलिस
- दमकल कर्मचारी
- डाकिया

वाचन जगत से

ब्लॉग से किसी साहसी/वैज्ञानिक कहानी का वाचन करो ।

अध्ययन कौशल

किसी कहानी पर आधारित चित्रों का फोल्डर बनाकर कहानी सुनाओ ।

स्वयं अध्ययन

नीचे दिए गए शब्दों का लिप्यंतरण रोमन (अंग्रेजी) में करो :

तूलिका	भोजन	प्रातः	चाँदनी	जिम्मेदारी
....	....	....	....	....
कौमुदी	पैदल	गेंद	वाद्‌यवृंद	शान
....	....	....	....	....

मेरी कलम से

समाचार पत्र में से मुख्य समाचारों के पाँच वाक्यों का अनुवाद करो ।

✲ **उत्तर लिखो :**

(क) 'चित्र मेरे आँखों तक ही नहीं सीमित' ऐसा क्यों कहा है ?

(ख) रंग लगी तूलिकाएँ कौन-सा काम करती हैं ?

(ग) चित्र में कौन-सी ताकत होती है ?

(घ) चित्रों के रंग किन्हें साकार करते हैं ?

सदैव ध्यान में रखो

शब्दों की अपेक्षा चित्र गहरा असर डालते हैं ।

भाषा की ओर

नीचे दिए हुए वाक्य पढ़ो और मोटे टाईपवाले शब्दों की तरफ ध्यान दो :

(१) अनय उत्तम **तैराक** है ।

(२) मेहल **हँसोड़** लड़की है ।

(३) वृक्ष की **कटाई** पर रोक लगाई है ।

(४) इस गाँव के लोग **झगड़ालू** नहीं हैं ।

तैराक, हँसोड़, कटाई, झगड़ालू इन शब्दों में मूल शब्द तैरना, हँसना, काटना, झगड़ना ये क्रियाएँ हैं । मोटे टाइपवाले शब्द क्रिया में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**कृदंत**' हैं ।

(१) **राष्ट्रीय** एकता को बनाएँ रखें ।

(२) देशवासियों में **अपनत्व** का भाव है ।

(३) भारत के **प्राकृतिक** दृश्य अवर्णनीय हैं ।

(४) हिमालय की **ऊँचाई** देखते ही बनती है ।

राष्ट्रीय, अपनत्व, प्राकृतिक, ऊँचाई इन शब्दों में मूल शब्द राष्ट्र, अपना, प्रकृति, ऊँचा हैं । इनमें राष्ट्र (संज्ञा), अपना (सर्वनाम), प्रकृति (संज्ञा) और ऊँचा (विशेषण) है । ये शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषणों में प्रत्यय लगाने पर बने हैं । अतः ये '**तद्‌धित**' हैं ।

✲ निम्न गद्‌यांश को पढ़कर तद्‌धित तथा कृदंत प्रत्यय छाँटो तथा उसका विग्रह करके तालिका में लिखो-

एक लकड़हारा था । वह एक दिन लकड़ियाँ बेचने हाट की ओर जंगल के रास्ते निकला । रास्ता पथरीला, कँटीला, टेढ़ा-मेढ़ा और डरावना था । वह दोपहर में थकान के कारण सो गया । कुछ समय के बाद आगे बढ़ा । वह जब जंगल से गुजर रहा था तो कुछ डाकुओं ने उसे घेर लिया और धमकी दी । वह बोला-''मैं कोई धनवान नहीं हूँ, अपनी कमाई से पेट पालता हूँ ।'' यह सुनकर डाकू वहाँ से चल पड़े ।

क्र.	शब्द	तद्‌धित		शब्द	कृदंत	
		मूल शब्द	प्रत्यय		मूल शब्द	प्रत्यय
१.	लकड़हारा	लकड़ी	हारा	थकान	थकना	आन
२.						
३.						
४.						

● सुनो, समझो और सुनाओ :

९. एक सैर ऐसी भी

इस संवाद में लेखक ने बड़ों के आदेश, नियमों के पालन, अनुशासन एवं देशप्रेम की भावना को बढ़ावा दिया है ।

स्वयं अध्ययन

स्थान, समय, दिन, दिनांक, शुल्क आदि से संबंधित अपनी शालेय सैर का सूचना पत्र बनाओ ।

558ZJB

(क्रिसमस का अवकाश था । जॉन, अच्युत, अर्चना, विप्लव, प्राची, तबस्सुम, इब्राहिम सभी लावण्या के घर इकट्ठा होकर आपस में बातचीत कर रहे हैं ।)

जॉन : मित्रो ! छुट्टियाँ चल रही हैं । विद्‌यालय में 'अपनी सैर' पर दस से पंद्रह वाक्य लिखने के लिए कहा गया है । चलो, आज ही नदी में नाव की सैर करके आते हैं । शुभ कार्य में देरी क्यों ?

अर्चना : नदी तो यहाँ से दूर है । बस से जाना पड़ेगा ।

विप्लव : वहाँ आने-जाने में पूरा दिन लग जाएगा ।

अच्युत : इतने पैसे भी अपने पास नहीं हैं । खाना भी नहीं खाया है । भूखे भजन न होंहि गोपाला ।

प्राची : घरवालों से बिना पूछे इतनी दूर जाना उचित नहीं है ।

इब्राहिम : साथ में कोई बड़ा भी तो होना चाहिए ।

जॉन : मार्था आंटी घर पर ही हैं । उनको साथ ले सकते हैं । वही हमारी नायक होंगी ।

लावण्या : तुम्हारी बात ठीक है । तुम अपनी आंटी को कल के लिए तैयार करो । आवश्यक खर्च के लिए पैसे एवं खाने-पीने के सामान लेकर कल प्रातः आठ बजे एस.टी. स्टैंड पर सभी मिलेंगे ।

(सभी अपने-अपने घर जाते हैं । सूचनानुसार तैयारी के साथ दूसरे दिन बस स्थानक पर सभी एकत्रित होते हैं । बस आते ही सभी बच्चे दौड़ पड़ते हैं ।)

❑ संवाद का मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से संवाद के प्रमुख मुद्दे स्पष्ट करें । संवाद का नाट्यीकरण कक्षा में कराएँ । किसी सैर पर जाने के पूर्व क्या-क्या तैयारी करनी चाहिए, सूची बनवाएँ । राष्ट्रीय संपत्ति की सूची बनवाएँ ।

सुनो तो जरा

किसी हस्तकला प्रदर्शनी का निरीक्षण करो तथा अपने अनुभव कक्षा में सुनाओ :

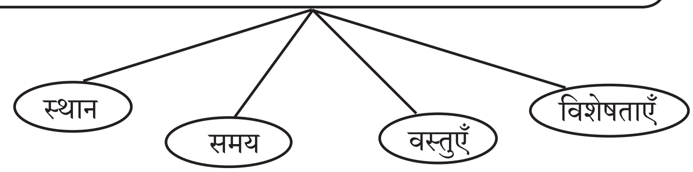

मार्था आंटी : रुको, सुनो सभी बच्चो !

लावण्या : क्या हुआ आंटी जी ? यही बस नदी तक जाएगी ।

जॉन : हम अंदर जाकर फटाफट सीट पकड़ते हैं ।

प्राची : जगह पकड़ने के लिए खिड़की से सीट पर अपना सामान रख देते हैं ।

मार्था आंटी : शांत हो जाओ सब ! विद्‌यालय में तुम लोगों को क्या यही सिखाया-पढ़ाया गया है ? पंक्तिबद्‌ध होकर बस में चढ़ो । उससे पहले वरिष्ठ नागरिकों और महिलाओं को चढ़ने दो ।

(सभी झेंप जाते हैं । महिलाओं और वृद्‌धों के चढ़ने के बाद बस में चढ़ते हैं । सभी बैठ जाते हैं । अच्युत को देखकर सभी खुसर-फुसर करते हैं फिर हँसने लगते हैं ।)

अच्युत : तुम सब मुझे देखकर हँस क्यों रहे हो ?

विप्लव : तुम जिस सीट पर बैठे हो वह 'महिलाओं के लिए आरक्षित' है ।

जॉन : अर्चना तो 'दिव्यांग के लिए आरक्षित' सीट पर बैठी है ।

मार्था आंटी : इसीलिए कहा गया है- 'जल्दी का काम शैतान का काम होता है' । सभी लोगों को पहले ही ध्यान देकर बैठना चाहिए । **(सभी उचित जगह पर बैठते हैं । कंडक्टर बस में प्रवेश करता है । जॉन जोश में आकर बस की घंटी बजाने की कोशिश करता है । जोर से खींचने के कारण रस्सी टूट जाती है ।)**

कंडक्टर चाचा: तुम्हें मालूम नहीं कि बस सार्वजनिक संपत्ति है ? हर सार्वजनिक संपत्ति राज्य/राष्ट्र की संपत्ति है । इसे हानि पहुँचाना राष्ट्र को हानि पहुँचाना है ।

तबस्सुम : हाँ ! मैंने रेलवे में भी इसी तरह लिखा हुआ पढ़ा है ।

मार्था आंटी : केवल पढ़ने से कुछ नहीं होता । उनका पालन करना भी आवश्यक होता है । जॉन तुमने राष्ट्र की संपत्ति को नुकसान पहुँचाया है । चलो, कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगो ।

(जॉन कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगता है ।)

लावण्या : अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।

मार्था आंटी : कंडक्टर साहब ! जो नुकसान हुआ है, कृपया उसका पैसा मुझसे ले लीजिए ।

कंडक्टर चाचा: बच्चो ! इन्हीं छोटी-छोटी बातों से हम जीवन के आदर्श और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी सीखते हैं । चलो अब सब अपना-अपना टिकट लो ।

(सभी टिकट लेते हैं । बड़े ही अनुशासित ढंग से नदी किनारे घूमते हैं । स्वच्छता का ध्यान रखते हैं । नाव में बैठकर नदी की सैर करते हैं । अँधेरा होने के पहले अपने-अपने घर वापस आ जाते हैं ।)

- ❑ संवाद में किन-किन बच्चों ने क्या ऐसा किया जो नहीं करना चाहिए था, एकल, गुट में बताने के लिए कहें । कंडक्टर चाचा ने मार्था आंटी से पैसे लिए होंगे या नहीं, चर्चा कराएँ । 'सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा' पर बारह से पंद्रह वाक्य लिखने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

विचार मंथन

।। स्वातं सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा ।।

नया शब्द

दिव्यांग = विकलांग

मुहावरे

खुसर-फुसर करना = आपस में फुसफुसाकर बोलना

जल्दी का काम शैतान का = बिना सोचे-विचारे काम करना

कहावतें

भूखे भजन न होंहि गोपाला = खाली पेट काम नहीं होता है

अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत = समय चूक जाने पर पश्चात्ताप निरर्थक होता है

जरा सोचो ...... बताओ

एक दिन के लिए यातायात के सभी साधन बंद रहें तो ...

अध्ययन कौशल

शालेय पर्यटन के लिए किसी पर्यटन स्थल की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करो ।

https//www.maharashtra.gov.in

बताओ तो सही

घर के बड़े हमें सलाह देते हैं, उनसे तुम कितने सहमत हो ; बताओ ।

वाचन जगत से

रेल स्थानक और बस स्थानक पर लगे निर्देश, सूचना फलक पढ़ो और उनका पालन करो ।

मेरी कलम से

संवाद लिखो ।

- पॉलिथिन और कपड़े की थैली
- नारियल और आम का वृक्ष

खोजबीन

अपने तहसील/जिले की 'बाँध परियोजना' संबंधी जानकारी प्राप्त करो और टिप्पणी लिखो ।

✼ पाठ के आधार पर कारण लिखो :

(क) बच्चे सैर पर जाना चाहते थे ।
(ख) घरवालों की इजाजत लेनी पड़ी ।
(ग) बच्चों ने मार्था आंटी को साथ में लेना चाहा ।
(घ) मार्था आंटी ने बच्चों को डाँटा ।
(च) जॉन ने कंडक्टर चाचा से क्षमा माँगी ।
(छ) अच्युत को देखकर बच्चे हँस रहे थे ।

सदैव ध्यान में रखो

स्वच्छता में स्वास्थ्य निहित है ।

भाषा की ओर

तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी, संकर शब्द पढ़ो और शब्दों के स्रोत समझो :
अ.= अरबी, अं. = अंग्रेजी, पु. = पुर्तगाली, फ्रां. = फ्रांसीसी, ची. = चीनी, जा. = जापानी

संस्कृत → हिंदी

पुस्तक → पुस्तक
कन्या → कन्या
अहंकार → अहंकार
राजा → राजा
नित्य → नित्य

✼ संस्कृत से सीधा चला आता हूँ ।
हिंदी में ज्यों का त्यों लिखा जाता हूँ ।
मैं हूँ **'तत्सम'** शब्द ....

संस्कृत → हिंदी

हस्त → हाथ
कपाट → किवाड़
क्षेत्र → खेत
पुत्र → पूत
दीप → दीया

✼ संस्कृत से चला आता हूँ ।
हिंदी में परिवर्तित होकर लिखा जाता हूँ ।
मैं हूँ **'तद्‌भव'** शब्द ....

ग्राम्य क्षेत्र बोलियाँ → हिंदी

झाड़ू → झाड़ू
दमड़ी → दमड़ी
ठेठ → ठेठ
चीकट → चीकट
निस → निस

✼ ग्राम्यक्षेत्र से है मेरा नाता ।
देशी भाषाओं से चला आता ।
मैं हूँ **'देशज'** शब्द ....

विदेशी भाषा → हिंदी

बाजार(फा.) → बाजार
राशन (अं.) → राशन
साबुन (पु.) → साबुन
काजू (फ्रां.) → काजू
चाय (ची.) → चाय

✼ अरबी, अंग्रेजी, फारसी आदि से हाथ मिलाता हूँ ।
हिंदी में प्रचलित होकर चला आता हूँ ।
मैं हूँ **'विदेशी'** शब्द ....

भिन्न भाषा → हिंदी

किताब(अ.)+घर (हिं.) → किताबघर
रेल (अं.)+यात्री(सं.) → रेलयात्री
माल (अ.)+गोदाम (अं.) → मालगोदाम
बीमा (अ.)+पॉलिसी (अं.) → बीमापॉलिसी
बस (अं.)+ चालक (हिं.) → बसचालक

✼ दो भिन्न भाषाओं से मेल खाता हूँ । हिंदी में नए शब्द के रूप में चला आता हूँ ।
मैं हूँ **'संकर'** शब्द ....

● **पढ़ो और गाओ :**

१०. (अ) दो गजलें

-डॉ. कुँअर बेचैन

जन्म : १ जुलाई १९४२, मुरादाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** शामियाने काँच के, धूप चली मीलों तक, शब्द एक लालटेन, पर्स पर तितली, मरकत द्वीप की नीलमणि आदि **परिचय :** कुँअर जी विविध सम्मान-पुरस्कारों से पुरस्कृत तथा गजलकारों में प्रमुख हस्ताक्षर हैं ।
प्रस्तुत गजलों में बेचैन जी ने बेटियों के महत्त्व और जिंदगी जीने के तरीके को बड़े ही मार्मिक एवं सुंदर ढंग से दर्शाया है ।

5SHVKY

बेटियाँ

हैं ये पूजाघर का आँगन बेटियाँ
हैं ऋचाओं जैसी पावन बेटियाँ ।

अब तो सारी दुनिया ही कहने लगी
जग की दौलत से बड़ा धन बेटियाँ ।

सामने आईं तो याद आ जाएगा
हैं बड़े-बूढ़ों का बचपन बेटियाँ ।

दो घरों की छबि बनाने के लिए
दो घरों की एक दर्पन बेटियाँ ।

अपनी मेहनत से, बना लेती हैं ये
एक जंगल को भी उपवन बेटियाँ ।

खुश्क रेगिस्तान-सी है जिंदगी
और रिमझिम मस्त सावन बेटियाँ ।

जन्म से ही साथ लाती हैं 'कुँअर'
फूल-सा तन, मोम-सा मन बेटियाँ ।

असर

जिंदगी की राहों में, खुशबुओं के घर रखना
आँख में नई मंजिल, पाँव में सफर रखना ।

सिर्फ छाँव में रहकर फूल भी नहीं खिलते
चाँदनी से मिल कर भी, धूप की खबर रखना ।

दाग सिर्फ औरों के, देखने से क्या हासिल
अपना आईना है तू, खुद पे भी नजर रखना ।

लोग जन्म लेते ही, पंख काट देते हैं
है बहुत-बहुत मुश्किल, बाजुओं में खम रखना ।

ये न हो कि तेरे ये शब्द अर्थ खो बैठें
ऐ 'कुँअर' तू सच कहकर, बात में असर रखना ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ उपरोक्त गजलों का गायन करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में अनुकरण गायन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से गजलों के भाव स्पष्ट करें । विद्यार्थियों को कोई गजल गाने के लिए प्रेरित करें ।

● पढ़ो और समझो :

(ब) एक मटका बुद्‌धि

इस कहानी में कहानीकार ने बुद्‌धिबल एवं चतुराई के महत्व को स्थापित करने का प्रयास किया है ।

बादशाह अकबर ने अपने दरबार में कुछ प्रतिभाशाली और बुद्‌धिमान लोगों को नियुक्त किया था, जो 'नवरत्न' अर्थात नौ रत्नों के नाम से जाने जाते थे । इन सबमें बहुमूल्य रत्न थे बीरबल, वे एक हाजिर जवाब मंत्री थे । एक बार श्रीलंका के राजा, बादशाह अकबर के दरबारियों की बुद्‌धि की परीक्षा लेना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपना दूत इस विशेष कार्य के लिए अकबर के दरबार में भेजा ।

''हे महान राजा! श्रीलंका के राजा ने अपनी शुभकामनाएँ भेजी हैं । उन्होंने आपके सम्मान तथा स्नेह के प्रतीक बहुमूल्य उपहार भेजा है । बादशाह सलामत, मैं यहाँ एक विशेष अनुरोध लेकर आया हूँ,'' दूत ने कहा । ''आपका दरबार सर्वश्रेष्ठ बुद्‌धिवाले दरबारियों के कारण प्रसिद्‌ध है । श्रीलंका के राजा ने अनुरोध किया है कि आप इस बुद्‌धिमत्ता का छोटा-सा अंश हमें भी दे दें । वे चाहते हैं कि 'एक मटका बुद्‌धि' उनके लिए भेज दें,'' दूत ने निवेदन किया ।

इस प्रकार के अजीब अनुरोध के कारण दरबारी बहुत चिंतित हो गए । उन्होंने घबराकर एक-दूसरे की ओर देखा । ''हमने जो सुना है वह क्या ठीक है? एक मटका बुद्‌धि ?'' एक दरबारी ने गुस्से से कहा । ''यह अनुरोध तो बिलकुल बे-सिर-पैर का है ! श्रीलंका के राजा का दिमाग जरूर खराब हो गया है जो उन्होंने इस तरह का मूर्खतापूर्ण अनुरोध किया है ।'' सभी दरबारी उसके इस कथन से सहमत थे ।

''मुझे लगता है इस दरबार में एक बुद्‌धिमान व्यक्ति है जो कुछ-न-कुछ युक्ति अवश्य निकाल सकता है,'' एक मंत्री ने बीरबल की ओर देखते हुए कहा । वह दरबारी बीरबल से बहुत ईर्ष्या करता था । उसे लगा कि बीरबल को नीचा दिखाने का वह सही अवसर था । उधर राजदूत इस बात का खूब मजा ले रहा था कि उसने अकबर के दरबार में तनाव तथा गड़बड़ी की सृष्टि कर दी थी ।

बादशाह अकबर भी अपने अन्य दरबारियों की तरह इस अजीब अनुरोध से भौचक्के रह गए । उन्होंने बीरबल से कहा, ''तुम्हारे पास सभी समस्याओं का हल होता है और मुझे आशा है कि तुम इस समस्या को भी सुलझा सकोगे ।'' बीरबल ने अकबर के सामने अपना सिर झुकाया और कहा, ''बादशाह सलामत, हमारे राज्य में काफी बुद्‌धि है और मुझे विश्वास है कि हम 'बुद्‌धि भरा मटका' श्रीलंका भिजवा ही देंगे ।'' दूत ने कहा, ''जैसे ही मुझे 'बुद्‌धि भरा मटका' मिल जाएगा मैं अपने देश के लिए प्रस्थान करूँगा ।''

''बादशाह सलामत 'बुद्‌धि भरा मटका' तैयार करने में थोड़ा समय लगेगा,'' बीरबल ने अकबर को बताया । दूत अपनी धूर्तता पर मुस्कराता हुआ बोला, ''अच्छी बात है, बादशाह सलामत, मैं इंतजार करूँगा । आपकी सूचना मिलने पर आऊँगा ।''

बीरबल घर वापस आए । उन्होंने अपने माली से खेत में कुछ कुम्हड़ों के बीज बोने को कहा । कुछ समय बाद वे बेलें बड़ी हो गईं और उनमें छोटे-छोटे फल आ गए । बीरबल उन फलों को देखकर बहुत खुश हुए और उन्होंने माली को बुलाया । उन्होंने माली को कुछ मटके दिए और कहा, ''हर मटके में एक कुम्हड़ा बढ़ जाए ऐसे एक-एक मटका लगा दो ।'' उन्होंने माली को विशेष निर्देश दिया कि बेलों की अच्छी तरह से देखभाल करे और कुम्हड़ों को मटकों के अंदर ही बढ़ने दे ।

कुछ सप्ताहों के बाद कुम्हड़े अपने पूरे बड़े आकार

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी परिच्छेद का आदर्श वाचन कराएँ । विद्‌यार्थियों को कहानी के अंत का अनुमान लगाते हुए मुखर एवं मौन वाचन करने के लिए कहें । इस कहानी में आए निवेदन, प्रश्न और आदेशवाले वाक्य अलग करके लिखवाएँ ।

के हो गए और उनसे मटके पूरी तरह से भर गए थे । बीरबल ने बहुत सावधानी से कुम्हड़ों को मटकों सहित पौधों से अलग कर दिया । उन्होंने बादशाह अकबर को खबर भिजवाई कि 'बुद्‌धि भरा मटका' तैयार है । अगले दिन बादशाह अकबर ने श्रीलंका के राजदूत को राजदरबार में बुलवाया ।

श्रीलंका के राजदूत को विश्वास था कि बीरबल 'बुद्‌धि भरा मटका' तैयार करने में सफल नहीं हो सके होंगे । जब सब लोग दरबार में उपस्थित हो गए तो बादशाह अकबर ने कहा, ''बीरबल, राजदूत के लिए 'बुद्‌धि भरा मटका' लाओ ।'' बीरबल ने अपने सेवक को मटका लाने का इशारा किया । मटके को एक तश्तरी पर रखा गया था तथा एक सुंदर कपड़े से ढँककर लाया गया था । दरबार में चुप्पी छाई थी क्योंकि किसी को विश्वास नहीं हुआ कि राज्य में 'बुद्‌धि भरा मटका' नाम की कोई चीज भी थी ।

बीरबल बोले, ''बादशाह सलामत, श्रीलंका के राजा द्‌वारा की गई फरमाइश यानि 'बुद्‌धि भरा मटका' हाजिर है । क्या इस मटके से संबंधित एक आवश्यक बात मैं अपने माननीय अतिथि को बता सकता हूँ ?''

''हाँ जरूर, बीरबल,'' बादशाह ने कहा ।

राजदूत की ओर देखकर बीरबल बोले, ''इस मटके में 'बुद्‌धि का फल' रखा है । यह फल मटके को तोड़े बिना या फल को काटे बिना बाहर निकालना होगा । 'बुद्‌धि का फल' निकालने के बाद आप यह मटका हमें वापस कर दें । लेकिन उसपर एक खरोंच भी नहीं लगनी चाहिए ।''

राजदूत ने कपड़ा हटाकर अंदर झाँककर देखा । मटके में एक बड़ा-सा कुम्हड़ा था । उस छोटे-से मुँहवाले मटके में कुम्हड़ा कैसे रखा गया ! और वह उस कुम्हड़े को मटके को तोड़े बिना या उसे काटे बिना बाहर कैसे निकालेगा ? राजदूत के पास कहने को शब्द नहीं थे । वह बीरबल की चतुराई से हार मान चुका था । उसने सम्मान पूर्वक बादशाह अकबर को सलाम किया और कहा, ''आपके इस उपहार ने मुझे कृतार्थ कर दिया । आपका राज्य बुद्‌धिमान लोगों से परिपूर्ण है और बीरबल उन सबमें अधिक बुद्‌धिमान हैं ।'' इन शब्दों के साथ राजदूत ने अपना 'बुद्‌धि भरा मटका' लेकर दरबार से विदा ली और श्रीलंका वापस चला गया ।

अब अकबर तथा उनके दरबारी सभी जानने को उत्सुक थे कि मटके में क्या था । बीरबल ने बाकी मटके दरबार में लाने का आदेश दिया और बादशाह अकबर तथा दरबारियों के सामने मटके पेश किए गए ।

जब बादशाह ने मटके के भीतर झाँककर देखा तो वे हँसते-हँसते लोटपोट हो गए । बादशाह बीरबल की बुद्‌धिमानी से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत से मूल्यवान उपहार दिए ।

❑ इस कहानी का कक्षा में नाट्‌यीकरण कराएँ । विद्‌यार्थियों को अपनी बुद्‌धिमानीवाले कोई कार्य बताने के लिए प्रेरित करें । तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्‌यार्थियों से पूछें कि वे बीरबल की सूचनानुसार कुम्हड़ा कैसे बाहर निकालेंगे ?

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

११. प्रगति

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखक ने विद्‌यार्थियों के भविष्य निर्माण में उनकी अभिरुचि एवं रुझान को विशेष महत्त्व प्रदान किया है ।

स्वयं अध्ययन

किसी अपठित कविता का पाठ करो और उसके आधार पर टिप्पणी लिखो ।

5SRRHL

पात्र परिचय –

समीक्षा–९ साल की बेटी, ज्ञानेश–१२ साल का बेटा, माँ, पिता जी, बुआ जी, दादी माँ, मामा जी, प्रधानाध्यापक ।

प्रथम दृश्य

[दो बच्चे–समीक्षा और ज्ञानेश, समीक्षा चौथी कक्षा में और ज्ञानेश सातवीं में पढ़ रहा है । परदा खुलते ही एक मध्यम वर्ग के परिवार का दृश्य उपस्थित होता है । माँ अपने घरेलू कार्य में व्यस्त है । समीक्षा का रोते हुए आगमन]

बुआ जी : क्या बात हुई ? कौन–सा आसमान टूट पड़ा जो रोए चली जा रही है ?

समीक्षा : ज्ञानेश ने मुझे मारा ।

माँ : यह तो मैं जानती हूँ, एक दिन की छुट्‌टी क्या आती है मेरी तो शामत आ जाती है । सुबह से तुम्हारी तू–तू, मैं–मैं शुरू हुई है । एक पल का चैन नहीं । क्यों मारा ज्ञानेश ने ?

समीक्षा : पापा ने मुझे बैडमिंटन का रैकेट लाकर दिया था । मैंने रैकट उसे नहीं दिया तो लगा मारने ।

बुआ जी : और तूने मार खा ली ?

समीक्षा : मैं उसे मारूँगी तो आप कहेंगी कि तुम छोटी हो, वह बड़ा है, बड़ों पर हाथ नहीं उठाना चाहिए । वरना मैं उसे वह मजा चखाती कि याद रखता ।

दादी माँ : **(हँसकर)** अच्छा–अच्छा । रो मत रानी बेटी, मैं अभी उसे बुलाकर डाँटती हूँ । ज्ञानेश–ओ–ज्ञानेश !

ज्ञानेश : **(डरा–डरा, धीरे–धीरे आता है ।)** क्या है माँ ?

माँ : मैंने तुझे हजार बार कहा है कि छोटी बहन को मत सताया करो । क्यों मारा तुमने समीक्षा को ?

ज्ञानेश : पहले इसने अपना रैकेट मुझे नहीं दिया और मैं छीनने लगा तो इसने मुझे जोर से धक्का दिया ।

माँ : पर रैकेट तो इसका है न, तुमने क्यों छीना ?

ज्ञानेश : पापा ने कहा था कि दोनों इससे खेलना । मुझे तो अभी खेलना था ।

माँ : ठीक है, कल मैं तुझे अलग रैकेट लाकर दूँगी । आइंदा छोटी बहन को मारना मत, समझे ।

ज्ञानेश : मुझे अभी पैसे दे दो मम्मी, मैं बाजार से नई रैकेट लेकर आऊँगा ।

माँ : देखो बेटे, जिद नहीं किया करते । **(प्यार से)** मेरा अच्छा बेटा, माँ का कहना मानेगा न !

ज्ञानेश : समीक्षा चल, हम दोनों खेलते हैं ।

समीक्षा : हाँ, चलो । **(दोनों खेलने के लिए भाग जाते हैं ।)**

माँ : चलो, थोड़ी देर तो पिंड छूटा ।

❑ उचित हाव–भाव, आरोह–अवरोह के साथ इस पाठ के किसी एक बड़े संवाद का आदर्श वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । एकांकी का कक्षा में नाट्‌यवाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के मुद्‌दों को स्पष्ट करें ।

जरा सोचो ..... बताओ ।

यदि सभी बच्चे एक-दूसरे से झगड़ना बंद कर दें तो ...

दूसरा दृश्य

(घर में पति-पत्नी बातचीत करते हुए)

माँ : आप तो ऑफिस चले जाते हैं और मैं इन दोनों से तंग आ जाती हूँ । समीक्षा तो थोड़ा कहना मान भी लेती है पर ज्ञानेश तो सारा दिन तोड़-फोड़ में लगा रहता है ।

पिता जी : समीक्षा शांत स्वभाव की है । वह जिज्ञासु और खोजी वृत्ति की है पर ज्ञानेश थोड़ा गरम मिजाज का है ।

माँ : ज्ञानेश तो हर समय कुछ-न-कुछ करता रहता है । कल बैठे-बैठे टी. वी. का रिमोट खोल दिया ।

पिता जी : अच्छा ! लेकिन क्यों ?

माँ : पूछा तो बताया, रिमोट कैसे चलता है, देखना चाहता हूँ ।

पिता जी : अरे, समझ लो कि उसमें जिज्ञासा कूट-कूट कर भरी हुई है । बड़ा चुस्त और चंचल वृत्ति का है ।

[मामा जी का प्रवेश]

मामा जी : नमस्कार ! क्या चल रहा है ?

पिता जी : आइए, बहुत दिनों के बाद याद आई अपनी बहन की ।

मामा जी : मैं ऑफिस के काम से एक सप्ताह के लिए बाहर गया था, दीदी ! बच्चे दिखाई नहीं दे रहे हैं ?

माँ : अरे, यहीं कहीं खेल रहे होंगे । आप लोग बैठिए, मैं चाय लाती हूँ ।

(चाय लाने अंदर जाती हैं ।)

पिता जी : आपकी बहन जी ज्ञानेश से परेशान हैं, थोड़ा नटखट है न ।

मामा जी : वैसे अपना ज्ञानेश है बड़ा चुस्त ! पचासों बातें एक साथ पूछता है ।

बुआ जी : कई बार समीक्षा विज्ञान की बातें पूछने लगती है । मुझे विज्ञान की ज्यादा जानकारी नहीं है ।

मामा जी : विज्ञान की ढेर सारी पुस्तकें मिलती हैं । इंटरनेट पर भी पढ़ना चाहिए ।

माँ : पढ़ना तो पड़ेगा वरना ये बच्चे पता नहीं कब क्या पूछ बैठें ?

[समीक्षा और ज्ञानेश का प्रवेश]

ज्ञानेश, समीक्षा : प्रणाम मामा जी !

मामा जी : खुश रहो बच्चों, कैसे हो ?

समीक्षा : अच्छी हूँ । मामा जी मालूम है । मामी जी से बात हुई तो उन्होंने बताया कि अनन्य भैया डॉक्टर बनेंगे ।

मामा जी : अच्छा ! ठीक है डॉक्टर बनेगा तो हम सब उससे दवा लेंगे ।

❑ अंतरजाल की सहायता से सैनिक विद्यालय में प्रवेश के नियमों की जानकारी प्राप्त करने के लिए कहें । वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, बताने के लिए कहें । पाठ में आए कर्ता, कर्म, करण के चिह्नों के पहले आए शब्दों की सूची बनवाएँ ।

मेरी कलम से

पाठ्यपुस्तक की किन्हीं चार-पाँच पंक्तियों का मराठी में अनुवाद करो एवं अंग्रेजी में लिप्यंतरण करो ।

ज्ञानेश : दवा तो बीमार लेते हैं । आप बीमार थोड़े हैं ? **(सब हँसते हैं, माँ चाय लेकर आती हैं ।)**

माँ : इससे पूरे दिन बात करते रहो यह थकेगा नहीं ।

दादी जी : ज्ञानेश ! मामा जी को बताओ, तुम बड़े होकर क्या बनोगे ?

ज्ञानेश : बड़ा होकर ? बड़ा होकर मैं-मैं सेना में कप्तान बनूँगा ।

समीक्षा : मामा जी बड़ी होकर मैं वैज्ञानिक बनूँगी ।

मामा जी : शाबाश ! ज्ञानेश तुझे कप्तान और समीक्षा को वैज्ञानिक बनाएँगे । **[बच्चे अंदर जाते हैं ।]**

पिता जी : **(पत्नी से)** सुन लिया आपके ज्ञानेश जी तो सेना में कप्तान बनेंगे और बिटिया वैज्ञानिक होगी ।

मामी जी : यह सेना में न जाने कब कप्तान बनेगा, घर में तो शैतान बना हुआ है ।

मामा जी : प्रधानाध्यापक से पता लगाना चाहिए कि ये बच्चे कौन-कौन-से क्षेत्र में सफल हो सकते हैं ।

पिता जी : ठीक है, आपकी राय दुरुस्त है । एक दिन बच्चों के स्कूल जाकर उनसे बात करूँगा ।

मामा जी : जरूर कीजिए, मुझे भी बताइए । अच्छा नमस्कार । मैं चलता हूँ ।

तीसरा दृश्य

(प्रधानाध्यापक का कक्ष, माँ और पिता जी उनके कक्ष में जाते हैं ।)

माँ-पिता जी : नमस्कार !

प्रधानाध्यापक : नमस्कार ! नमस्कार !! बैठिए, कहिए कैसे आना हुआ ?

पिता जी : आज समय निकाला । सोचा स्कूल जाकर बच्चों की प्रगति के बारे में पूछ लूँ ।

प्रधानाध्यापक : हमें अभिभावकों के सहयोग की बहुत आवश्यकता होती है । आप लोगों की सहायता से विद्‌यालय की कई गतिविधियों को सुचारु ढंग से चला सकते हैं ।

माँ : सर ! ज्ञानेश और समीक्षा की विशेष रुचि किन विषयों में हैं ?

प्रधानाध्यापक : ज्ञानेश खेल-कूद अन्य गतिविधियों में बहुत तेज है । नेतृत्व के अच्छे गुण उसमें हैं । समीक्षा की रुचि तो विज्ञान में बहुत अधिक है ।

पिता जी : इसी विषय में मुझे निर्णय लेना है । इनके लिए कौन-सा क्षेत्र ठीक रहेगा ? आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है ।

प्रधानाध्यापक : **(चार्ट ध्यान से देखते हैं ।)** समीक्षा को विज्ञान में आगे बढ़ने देना ठीक होगा ।

पिता जी : क्या ज्ञानेश को अगले वर्ष सैनिक विद्‌यालय में भर्ती करना उचित होगा ?

माँ : इसके लिए क्या-क्या करना पड़ेगा ?

प्रधानाध्यापक : मैं आपको जानकारी दे दूँगा । आप निश्चिंत रहिए ।

पिता जी : मैं आपका आभारी रहूँगा ।

प्रधानाध्यापक : आभार किस बात का ? यह मेरा कर्तव्य है । मेरे स्कूल में पढ़ने वाला बच्चा प्रगति करे इससे ज्यादा खुशी मेरे लिए और क्या हो सकती है ?

[माँ-पिता जी, प्रधानाध्यापक जी के कक्ष से निकलते हैं । परदा बंद होता है ।]

❑ संवाद के अव्ययों को ढूँढ़कर लिखवाएँ । अव्ययों का वर्गीकरण कराके उनकी सूची बनवाएँ । विविध व्यवसायों के संबंध में उनसे चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों की अभिरुचि/रुझान के बारे में समुपदेशक से मार्गदर्शन कराएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

शामत आना = मुसीबत आना

सुचारु = सुंदर

मुहावरे

आसमान टूट पड़ना = संकट आना

पिंड छूटना = मुक्ति पाना

नाक में दम करना = परेशान करना

सुनो तो जरा

बालविज्ञान परिषद संबंधी जानकारी सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

एक शब्द से अनेक शब्द बनाने की पहेलियाँ बूझो/बुझाओ ।
जैसे- अहमदनगर= अहमद, नगर, मदन, अगर ।

वाचन जगत से

किसी कहानी के बारे में स्व मत लिखो ।

विचार मंथन

।। सीमा की रक्षा, देशवासियों की सुरक्षा ।।

अध्ययन कौशल

अंतरजाल/पुस्तक से जानकारी पढ़ो और टिप्पणी लिखो :

- थलसेना
- वायुसेना
- नौसेना

खोजबीन

भारत के प्रसिद्‌ध शहरों के प्राचीन नाम ढूँढ़ो और बताओ ।

✼ **किसने किससे कहा है ?**

(क) ''वरना मैं उसे मजा चखाती ।''

(ख) ''आइए, बहुत दिनों के बाद याद आई अपनी बहन की ।''

(ग) ''कई बार समीक्षा विज्ञान की बातें पूछने लगती है ।''

(घ) ''मैं आपको जानकारी दे दूँगा ।''

(च) ''जरूर कीजिए, मुझे भी बताइए ।''

(छ) ''इनके लिए कौन-सा क्षेत्र ठीक रहेगा ?''

सदैव ध्यान में रखो

विद्‍यार्थियों के भविष्य की नींव विद्‍यालय में डाली जाती है ।

भाषा की ओर

परिच्छेद पढ़ो,कारक पहचानकर उनकी विभक्तियाँ और प्रत्येक कारक का एक-एक वाक्य लिखो ः

मेरा घर सड़क के किनारे है । एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी । अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ी गई और बड़े जोर से चिल्लाने लगी, ''काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले !''

कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की पिटारी लिए लंबा-सा काबुलीवाला धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था । जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी भीतर भाग गई । उसे डर लगा कि कहीं वह उसे पकड़ न ले जाए । उसके मन में बात बैठ गई थी कि काबुलीवाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो-चार बच्चे मिल जाएँगे । काबुली ने मुसकराते हुए मुझे सलाम किया । मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा फिर वह बोला, ''बाबू साहब, आप की लड़की कहाँ गई ?''

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया । काबुलीवाला ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देना चाहा पर उसने कुछ न लिया । डरकर वह मेरे घुटनों से चिपट गई । कुछ दिन बाद, किसी जरूरी काम से मैं बाहर जा रहा था देखा कि मिनी काबुलीवाले से खूब बातें कर रही है । काबुलीवाला मुसकराता हुआ सुन रहा है ।

कारक	कारक की विभक्ति	वाक्य
(१) -----------	-----------	--------------------------
(२) -----------	-----------	--------------------------
(३) -----------	-----------	--------------------------
(४) -----------	-----------	--------------------------
(५) -----------	-----------	--------------------------
(६) -----------	-----------	--------------------------
(७) -----------	-----------	--------------------------

● **सुनो, समझो और दोहराओ :**

१२. जादुई अँगूठी

इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने अंधविश्वास की निरर्थकता एवं मेहनत की महत्ता को दर्शाया है ।

5T1HP9

जरा सोचो ..... बताओ

अगर तुम 'शक्तिमान' बन जाओ तो ...... ।

चंदन एक खिलाड़ी और मस्त-मौला किस्म का लड़का था । पूरे-पूरे दिन संतरंगी तितलियों के पीछे -पीछे भागता रहता । कभी किसी बाग में चोरी से घुस जाता और रखवाले की आँख बचाकर फल चुरा लाता । इस तरह के कामों में उसे बड़ा आनंद आता । पिता जी उसे पढ़ने के लिए कह-कहकर थक जाते पर उसके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती ।

उसका दिमाग नित नई शैतानी करने के तरीके सोचता रहता । पढ़ाई में उसका मन बिलकुल नहीं लगता था । स्कूल में रोज उसे डाँट सुननी पड़ती । उसी की कक्षा में शेखर भी पढ़ता था । वह एक तेज, मेधावी छात्र था । सभी अध्यापक-अध्यापिकाएँ उसकी प्रशंसा करते थे ।

शेखर सदैव बाएँ हाथ की अँगुली में एक लाल नगवाली अँगूठी पहने रहता था । चंदन के दिल में यह विश्वास बैठ गया था कि वह कोई जादुई अँगूठी है जिसके कारण शेखर सदैव पढ़ाई में आगे रहता है ।

चंदन दिन-रात यही मनसूबे बनाता कि किसी तरह उसे भी कोई ऐसी ही जादुई अँगूठी मिल जाए तो वह शेखर को हर चीज में पिछाड़ दे । स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होने वाला था । फुटबॉल चंदन का प्रिय खेल था । अतः उसकी चिंता बढ़ती जा रही थी । अंत में उसने शेखर से यह पता लगाने का फैसला किया कि उसे वह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ?

अगले ही दिन चंदन, शेखर के पास जाकर बहुत प्यार से बोला ''शेखर, तुम्हें यह जादुई अँगूठी कहाँ से मिली ? मुझे बताओ जरा ।''

शेखर हँसता हुआ बोला, ''अरे, यह साधारण अँगूठी है । जादुई अँगूठी तो बस किस्से-कहानियों में होती है, तुम किस चक्कर में पड़े हो ?''

शेखर के बहुत समझाने पर भी चंदन को विश्वास नहीं हुआ । उसे लगा, शेखर उसे बताना नहीं चाहता है । उन दोनों की बातें पास खड़ा पवन ध्यान से सुन रहा था । उसे चंदन को मूर्ख बनाने का अच्छा मौका मिला । चंदन उसे कई बार परेशान कर चुका था । वह पास आकर बोला, ''चंदन, मैं एक बाबा जी को जानता हूँ, तुम चाहो तो मैं तुम्हें उनसे मिलवा सकता हूँ ।'' चंदन

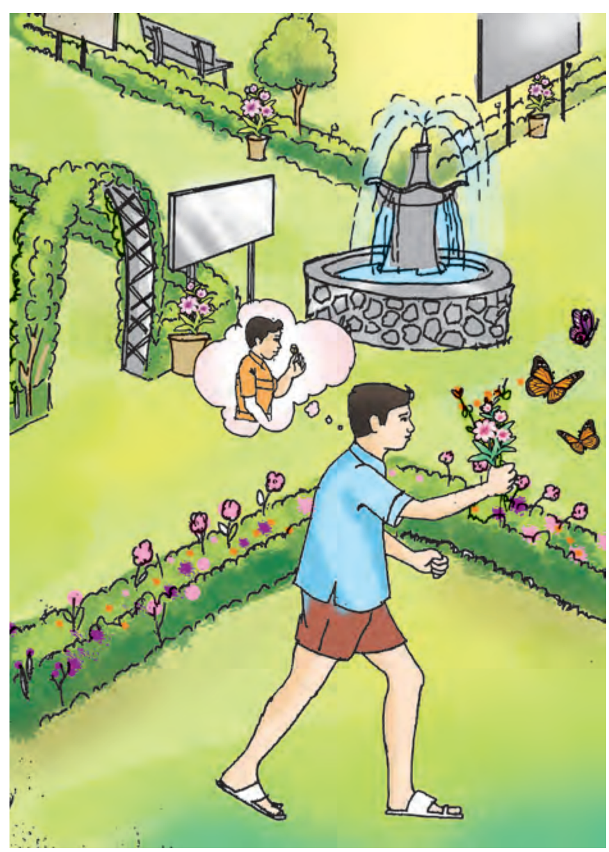

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी का मुखर वाचन करवाएँ । विद्यार्थियों को कहानी के आशय से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें । कहानी का कौन-सा पात्र और घटना अच्छी लगी, क्यों ? पूछें । कक्षा में कथा-कथन के कार्यक्रम का आयोजन करें ।

मेरी कलम से

'जंगल का पत्र मनुष्य के नाम' इस विषय पर पत्र लिखो ।

की आँखें खुशी से चमक उठीं परंतु शेखर ने पूछा, ''अगर तुम जानते हो तो तुमने अपने लिए क्यों नहीं खरीदी जादुई अँगूठी ?''

पवन जल्दी से बोला, ''वह अँगूठी महँगी है । मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं । अगर चंदन के पास हैं तो उसे लेने दो, तुम्हें क्या परेशानी है ?''

शेखर के लाख समझाने पर भी चंदन पवन के साथ चल दिया और घर जाकर अपने गुल्लक के सारे पैसे निकाल लाया । पूरे सौ रुपये थे । उसे लेकर वे सड़क के किनारे बैठे एक आदमी के पास पहुँचे । वह एक बड़े कागज के टुकड़े पर अनेक नगीने और अँगूठियाँ रखे हुए था । दोनों उसके पास जाकर अँगूठी देखने लगे ।

पवन ने एक अँगूठी उठाकर दिखाई, ''देखो ये कितनी चमक रही है, यही ले लो, बहुत सुंदर है ।''

चंदन सिर हिलाते बोला, ''यह जादुई नहीं है ।''

''तुम्हें कैसे पता ?''

''पवन, इनके नगीनों के रंग देख रहे हो, कोई भी लाल नहीं है ।''

अँगूठीवाला आदमी ध्यान से दोनों की बातें सुन रहा था । बोला, ''तुम्हें क्या जादुई अँगूठी चाहिए ?''

''हाँ'' दोनों एक साथ बोल उठे । अपने झोले से उसने एक गुलाबी नगीने की अँगूठी निकाली और बोला, ''यह है जादुई अँगूठी । रंग से कुछ नहीं होता लेकिन बेटा, यह पूरे दो सौ रुपये की है ।''

''मेरे पास तो केवल सौ रुपये ही हैं ।'' चंदन सिर झुका कर बोला । वह बहुत निराश हो गया था ।

उसपर दया दिखाते हुए वह आदमी बोला, ''ठीक है, तुम्हें सौ रुपये में ही दे देता हूँ, ले जाओ ।''

चंदन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था । अगले दिन स्कूल की फुटबॉल टीम का चयन होना था । चंदन खुशी-खुशी अँगूठी पहनकर अपनी साइकिल पर सवार होकर स्कूल की ओर चल दिया । अपनी धुन में वही टीम का कैप्टन बनने का सपना देखता चला जा रहा था कि उसकी साइकिल एक पत्थर पर चढ़ गई और वह साइकिल समेत गिर पड़ा । उसे काफी चोट आई । एक राहगीर उसे उठाकर अस्पताल ले गया । उसके एक पैर पर प्लास्टर चढ़ाना पड़ा । वह आश्चर्य चकित-सा अपनी जादुई अँगूठी को देख रहा था । कैप्टन बनना तो दूर की बात, वह तो चयन प्रक्रिया में भी शामिल नहीं हो सका था ।

शेखर उसे देखने आया । चंदन ने उससे विनती की कि वह उसे सही जादुई अँगूठी का पता बता दे । शेखर उसे बहुत देर तक समझाता रहा । शेखर जैसे ही उसके कमरे से बाहर निकला, चंदन के पिता ने उससे पूछा कि यह जादुई अँगूठी का क्या किस्सा है ? पूरी बात जानकर उन्होंने एक योजना बनाई । थोड़ी देर बाद चंदन की माँ की ओर देखकर बोले, ''कई दिनों से सोच रहा हूँ कि चंदन के लिए जादुई अँगूठी खरीद दूँ ।''

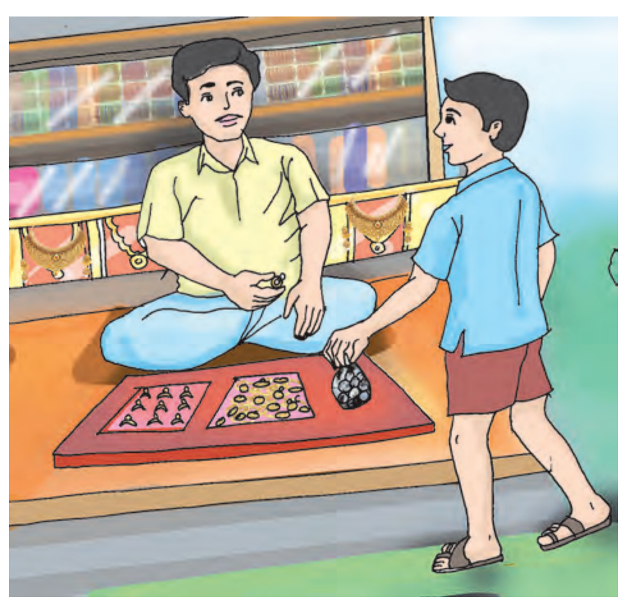

❑ अंधविश्वास फैलाने वाली बातों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों को कहानी के केंद्रीय विचार का लेखन करने के लिए प्रेरित करें । उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रश्नों की विविधता को ध्यान में रखकर इस कहानी से पाँच प्रश्नों की निर्मिति कराएँ ।

खोजबीन

वर्षाजल का संग्रह करने हेतु चलाई जाने वाली सरकारी योजनाओं संबंधी जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

खुशी से चहककर चंदन बोला, ''क्या आप सच कह रहे हैं?'' माँ ने बात बीच में ही काटी, ''अरे ! वह तो बहुत महँगी आती है, एक हजार रुपये की है ।''

''पैसे की कोई बात नहीं है, अँगूठी तो मैं खरीद दूँगा लेकिन समस्या उसे पहनने की शर्त है ।''

चंदन जल्दी से बोल पड़ा , ''पिता जी जादुई अँगूठी पहनने की हर शर्त मैं मानने को तैयार हूँ ।''

''बेटा, उस अँगूठी को पहनने वाले को सभी काम समय से करने पड़ते हैं । हमेशा सच बोलना पड़ता है । खेलने का समय, पढ़ने का समय सब कुछ नियम से बँध जाता है ।'' पता नहीं, इतना कड़ा नियम तुम पालन कर पाओगे या नहीं । ऐसा न करने पर उस अँगूठी की जादुई ताकत कम हो जाती है ।''

''मैं वादा करता हूँ पिता जी । आपका विश्वास नहीं तोड़ूँगा ।'' पिता जी ने उसे अँगूठी ला दी । लाल रंग की चमचमाती हुई अँगूठी पाकर चंदन की खुशी का ठिकाना नहीं था परंतु उसे अपना वादा भी याद रहा । उसने पढ़ना शुरू किया । उसका सब काम पूरा हो गया । साथ ही उसका पढ़ाई में मन भी लगने लगा ।

वह मुग्ध भाव से अपनी जादुई अँगूठी को देखता और अपने अंदर आ रहे परिवर्तन को महसूस करता । उसे लगता वह धीरे-धीरे शेखर जैसा होता जा रहा है । उसकी कमियाँ दूर भाग रही हैं । धीरे-धीरे वह पुनः स्कूल जाने लगा । अब वह कक्षा में प्रश्नों के उत्तर देता, अध्यापकगण उसकी प्रशंसा करते । शेखर के प्रति उसके मन का मैल धुल चुका था ।

आज उसका परीक्षाफल निकला था । कक्षा में हमेशा की तरह शेखर प्रथम आया था परंतु द्‌वितीय स्थान पर अपना नाम सुन कर चंदन की आँखों से खुशी के आँसू निकल पड़े । हमेशा किसी तरह से पास होने वाला वह कक्षा में पोजीशन ले आएगा, कौन कल्पना कर सकता था ?

खुशी से उछलता हुआ चंदन घर पहुँचा तो उसके माता-पिता बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे । अपना परीक्षाफल पिता जी को देकर चंदन बोला, ''पिता जी यह देखिए इस जादुई अँगूठी का कमाल । आपके रुपये बरबाद नहीं गए । मैं कक्षा में द्‌वितीय आया हूँ ।''

पिता ने उठकर उसे गले लगा लिया और बोले, ''बेटा, जादू इस अँगूठी में नहीं था । जादू तो था तेरी मेहनत में । तुम्हारी मेहनत का जादू ही आज रंग लाया है ।'' ''क्या ?'' आश्चर्य से चंदन बोला ।

तब तक शेखर वहाँ आ गया था । बोला, ''हाँ चंदन, यह अँगूठी तो सिर्फ एक रुपये की है । तुम्हारे पिता जी के कहने पर मैंने ही इसे ला कर दी थी ।''

अब चंदन को सारी बात समझ में आ गई थी । उसका आत्मविश्वास जग गया था । मुस्कराकर बोला, ''पिता जी आपने तो मुझे जादुई अँगूठी के बजाय मेहनत का जादुई खजाना ही दे दिया ।''

चारों के चेहरे पर खुशी की मुसकान खिल उठी ।

❑ कहानी में आए उपसर्ग एवं प्रत्ययवाले शब्दों को ढुँढ़वाकर उनका वर्गीकरण कराएँ । पाठ में आए विराम चिह्नों के नाम बताने के लिए प्रेरित करें । अंधविश्वास निर्मूलन संबंधी संवाद प्रस्तुत करने के लिए कहें । पास-पड़ोस से अंधविश्वास दूर करने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मेधावी = बुद्धिमान
मनसूबे = युक्ति, विचार, योजना
मुग्ध = प्रसन्न

मुहावरे

कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ असर न होना
खुशी का ठिकाना न होना = अत्यधिक प्रसन्न होना

स्वयं अध्ययन

तुम्हें कौन-से खेल पसंद हैं ? उनके बारे में दिए गए मुद्दों के आधार पर विस्तारपूर्वक चर्चा करो :

- नाम
- खिलाड़ियों की संख्या
- खेल का मैदान
- खेल की विधि

विचार मंथन

।। बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताय ।।

सुनो तो जरा

इन शब्दों का प्रयोग करते हुए नई कहानी बनाकर सुनाओ :

- गिलास
- सिक्के
- बुढ़िया
- कलाकार

बताओ तो सही

किसी अंतरशालेय स्पर्धा के उद्‌घाटन समारोह का सूत्र संचालन कैसे करोगे ?

वाचन जगत से

निम्न व्यक्तियों की सफलता संबंधी जानकारी पढ़ो :

- शिक्षाविद
- खिलाड़ी
- कलाकार

अध्ययन कौशल

हिंदी-अंग्रेजी मुहावरों का द्‌विभाषी लघुकोश बनाओ तथा अपने लेखन में प्रयोग करो ।
जैसे - जैसे को तैसा = Tit for tat.

✲ **निम्न वर्णन किनके हैं, लिखो :**

(क) मेधावी छात्र = ---------

(ख) साइकिल पर सवार होने वाला = ----------

(ग) चंदन को मूर्ख बनाने वाला = ----------

(घ) चमचमाती अँगूठी लाने वाले = ----------

(च) बेसब्री से प्रतीक्षा करने वाले = ----------------

(छ) परीक्षा में द्‌वितीय स्थान पाने वाला = --------------

सदैव ध्यान में रखो

जादू केवल मनोरंजन का साधन है ।

✲ शब्द पहेली हल करो :

१		२				३		४
				५				
६			७			८		
			९	१०				
११		१२					१३	
						१४		
१५		१६						
		१७			१८		१९	
२०				२१				

बाएँ से दाएँ : १. जुगाली करना (४ अक्षर), ३. उगना (३), ५ अनेक प्रकार के (३), ६. छोटी (२), ८. भारत का राष्ट्रध्वज (३), ९. जन्मभूमि (३), १२. खेती करने वाला (३), १४. चुप रहना (२), १५. गौरव (३), १७. आकाश (२), २०. विस्तार (३), १७. आकाश १८. प्रकाश देने वाला एक साधन (४), २०. विस्तार (३), २१. खोपड़ी (२) ।

ऊपर से नीचे : १. हवा (३ अक्षर), २. देश (२), ३. प्रगति (३), ४. प्रशंसा का गीत (४), ७. व्यव-साय करने वाला (४), १०. शरीर (२), ११. रंगहीन (३), १३. जानकारी (२), १४. ऋतु (३), १६. मनुष्य (३), १८ भारत का राष्ट्रीय पक्षी (२), १९. बालक (२) ।

भाषा की ओर

निम्न शब्दों के युग्म ढूँढ़ो तथा इनका प्रयोग करते हुए उचित वाक्य कॉपी में लिखो :

चहल – पहल

.... – पड़ोस

टेढ़ा – ......

जीवन – ....

चढ़ाव – ....

चाल – ....

.... – भाटा

लेन – ....

● सुनो, पढ़ो और गाओ :

१३. मेरे देश के लाल

– बालकवि बैरागी

जन्म : १० फरवरी १९३१, रामपुर, मंदसौर (म.प्र.) **रचनाएँ :** सूर्य उवाच, हैं करोड़ों सूर्य, दीपनिष्ठा को जगाओ, प्रतिनिधि रचनाएँ, बाल कविताएँ आदि **परिचय :** सांसद, पत्रकार, शिक्षाविद, हिंदी कवि और फिल्मी गीतकार के रूप में बैरागी जी ने बहुत ख्याति अर्जित की है ।

प्रस्तुत गीत के माध्यम से कवि ने सेनानियों की आन-बान-शान एवं हमारे स्वाभिमान को दर्शाया है ।

बताओ तो सही

अपने राष्ट्रध्वज की जानकारी बताओ । जैसे- राष्ट्रध्वज का आकार, रंगों का क्रम, चक्र की विशेषताएँ आदि ।

पराधीनता को जहाँ समझा श्राप महान
कण-कण के खातिर जहाँ हुए कोटि बलिदान
मरना पर झुकना नहीं, मिला जिसे वरदान
सुनो-सुनो उस देश की शूर-वीर संतान

आन-मान अभिमान की धरती पैदा करती दीवाने
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

दूध-दही की नदियाँ जिसके आँचल में कलकल करतीं
हीरा, पन्ना, माणिक से है पटी जहाँ की शुभ धरती
हल की नोकें जिस धरती की मोती से माँगे भरतीं
उच्च हिमालय के शिखरों पर जिसकी ऊँची ध्वजा फहरती

रखवाले ऐसी धरती के हाथ बढ़ाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । उचित हाव-भाव के साथ विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट में एवं एकल पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से कविता में आए भावों एवं विचारों को स्पष्ट कराएँ ।

सुनो तो जरा

आकाशवाणी/सी. डी./दूरदर्शन पर 'ए मेरे वतन के लोगों' गीत सुनो ।

आजादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी
मेघ साँवले बरसाते हैं जहाँ अहिंसा का पानी
अपनी माँगे पोंछ डालती हँसते-हँसते कल्याणी

ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

जहाँ पढ़ाया जाता केवल माँ की खातिर मर जाना
जहाँ सिखाया जाता केवल करके अपना वचन निभाना
जियो शान से, मरो शान से, जहाँ का है कौमी गाना
बच्चा-बच्चा पहने रहता जहाँ शहीदों का बाना

उस धरती के अमर सिपाही पीठ दिखाना क्या जानें
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें ।

❑ स्वाधीनता और पराधीनता पर चर्चा करें । 'पराधीनता एक अभिशाप है' इस विषय पर दस से पंद्रह वाक्य लिखवाएँ । कविता में 'मोती से माँगे भरती' माँ के खातिर मर जाना' में 'मोती' और 'माँ' शब्द किन के संदर्भ में आए हैं, चर्चा कराएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द
हठीले = हठी, जिद्‌दी
कौमी = राष्ट्रीय
चुनरिया = चूनरी
बाना = पहनावा, पोशाक

विचार मंथन

।। पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ।।

मेरी कलम से

'मेरा देश' इस विषय पर चार पंक्तियों की कविता लिखो ।

जरा सोचो ..... बताओ

यदि तुम्हें २६ जनवरी के 'राष्ट्रीय संचलन' में हिस्सा लेने का अवसर प्राप्त हो जाए तो ...

स्वयं अध्ययन

अपने राज्य की सुरक्षा व सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए कौन-से विभाग कार्य करते हैं ? बताओ और लिखो ।

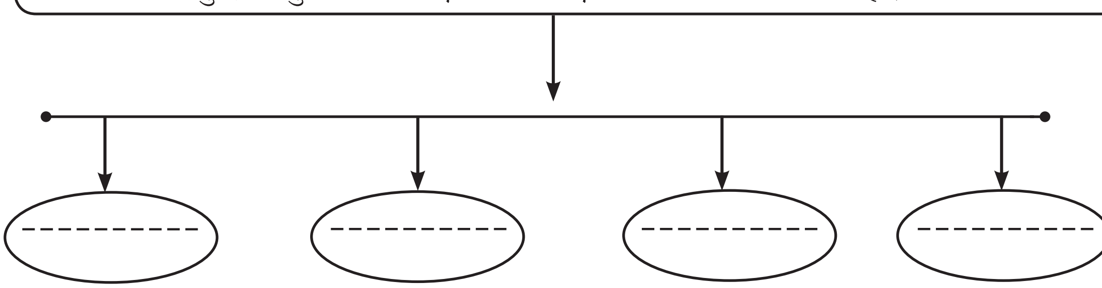

वाचन जगत से

किसी एक प्रयाणगीत का वाचन करो । गुट बनाकर शालेय समारोह में सुनाओ ।

खोजबीन

आजाद भारत के प्रधानमंत्रियों के क्रमशः नाम और कार्यकाल की जानकारी ढूँढ़ो और चार्ट बनाओ ।

अध्ययन कौशल

पढ़े हुए किसी निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखो ।

✲ कविता के आधार पर भारत की विशेषताएँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

देशहित के प्रति सदैव जागरूक, कर्मनिष्ठ रहो ।

भाषा की ओर

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के सभी प्रकारों के वाक्य बनाकर लिखो और कोष्ठक में भेद लिखो :

संज्ञा के भेद	मयूरी	(१) मयूरी दौड़ती है ।	(व्यक्तिवाचक)
	लड़की	(२) ----------------------	(----------)
	थकान	(३) ----------------------	(----------)
	पानी	(४) ----------------------	(----------)
	दर्शकगण	(५) ----------------------	(----------)
सर्वनाम के भेद	वह	(१) वह पाठशाला जाती है ।	(पुरुषवाचक)
	कोई	(२) ----------------------	(----------)
	वही	(३) ----------------------	(----------)
	क्या	(४) ----------------------	(----------)
	स्वयं ही	(५) ----------------------	(----------)
विशेषण के भेद	मीटर	(१) साड़ी लगभग पाँच मीटर लंबी है ।	(परिमाणवाचक)
	कुशल	(२) ----------------------	(----------)
	ये	(३) ----------------------	(----------)
	पाँच	(४) ----------------------	(----------)
	यह	(५) ----------------------	(----------)
क्रिया के भेद	तैरती है	(१) मोहिनी तैरती है ।	(अकर्मक)
	कूद पड़ी	(२) ----------------------	(----------)
	सिखाना	(३) ----------------------	(----------)
	सिखवाना	(४) ----------------------	(----------)
	खाता	(५) ----------------------	(----------)

अभ्यास-१

१. प्रत्येक ऐप्स के प्रयोग एवं उपयोग की प्रक्रिया सुनो और समझो ।

२. दैनिक व्यवहारों में इन ऐप्स का प्रयोग कब और कैसे करोगे, यह बताओ ।

३. इसी प्रकार के अन्य उपयोगी ऐप्स की जानकारी ढूँढ़ो और पढ़ो ।

४. चित्रों का निरीक्षण करो । इनसे संबंधी अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करो और लिखो :

[मान्यता प्राप्त ऐप्स का ही प्रयोग करो । नियमों की जानकारी प्राप्त करके ही ऐप्स डाऊनलोड करो ।]

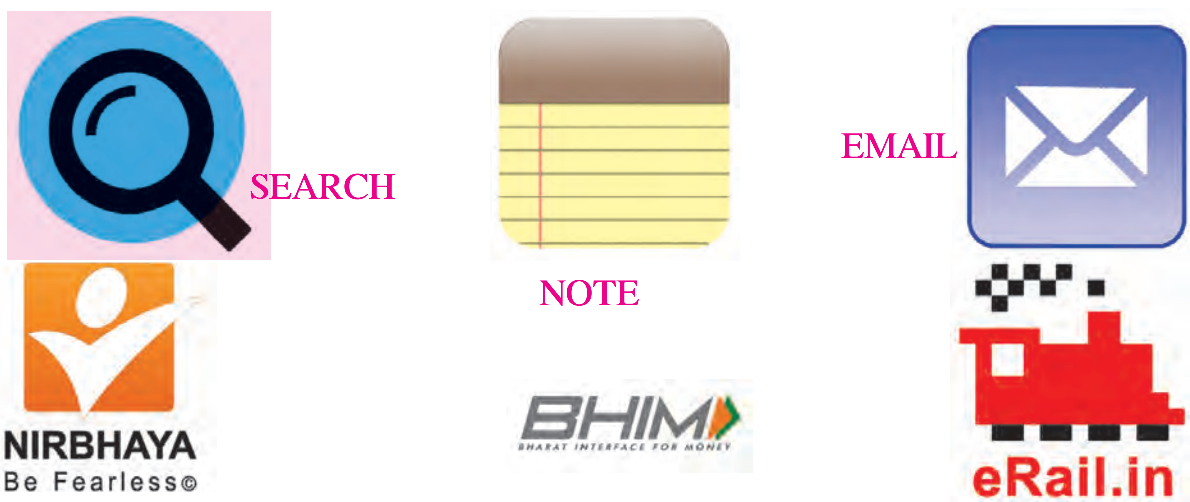

५. सम्मोच्चारित हिंदी शब्द समझो और लिखो तथा उनसे सार्थक वाक्य बनाओ ।

समूह — दल — पर्णदल

( ) — चोटी — ( )

( ) — चंदा — ( )

( ) — पर — ( )

( ) — पद — ( )

( ) — अलंकार — ( )

✻ पुनरावर्तन – १ ✻

१. किसी एक वर्ण के सभी मात्राओंवाले शब्द सुनाओ । जैसे– म–मन, मा–मामा ....

२. पुण्यश्लोक आहिल्याबाई होळकर का कार्य बताओ । (इतिहास और नागरिक शास्त्र सातवीं कक्षा पृष्ठ ५३)

३. 'सच्चाई, ईमानदारी, परिश्रम' पर घोषवाक्य बनाकर पढ़ो ।

४. पाँच कवियों के मूलनाम और उपनाम लिखो ।

५. शब्द पहेली में स्वतंत्रता सेनानियों के नाम ढूढ़ो और लिखो :

द	चं	जा	द्र	र	ख	शे	आ	
स	सु	बो	द्र	स	बा	चं		
द	त	श	ग	भ	ही	ह	सिं	
के	त	ड़	ब	फ	ल	वं		
र	हा	र	फ	ब	ह	ज	दु	शा

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________

कृति

दादी/नानी से जन्म पर गाए जाने वाले गीत (सोहर) सुनो ।

पिछली कक्षा में कौन–कौन–से उपक्रम किए थे, बताओ ।

उपक्रम

प्रति सप्ताह पाँच सुवचनों का वाचन करो ।

प्रकल्प

अपनी पसंद के किसी विषय पर एकल या गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

● **निरीक्षण करते हुए चर्चा करो :**

१. कृषि प्रयोगशाला

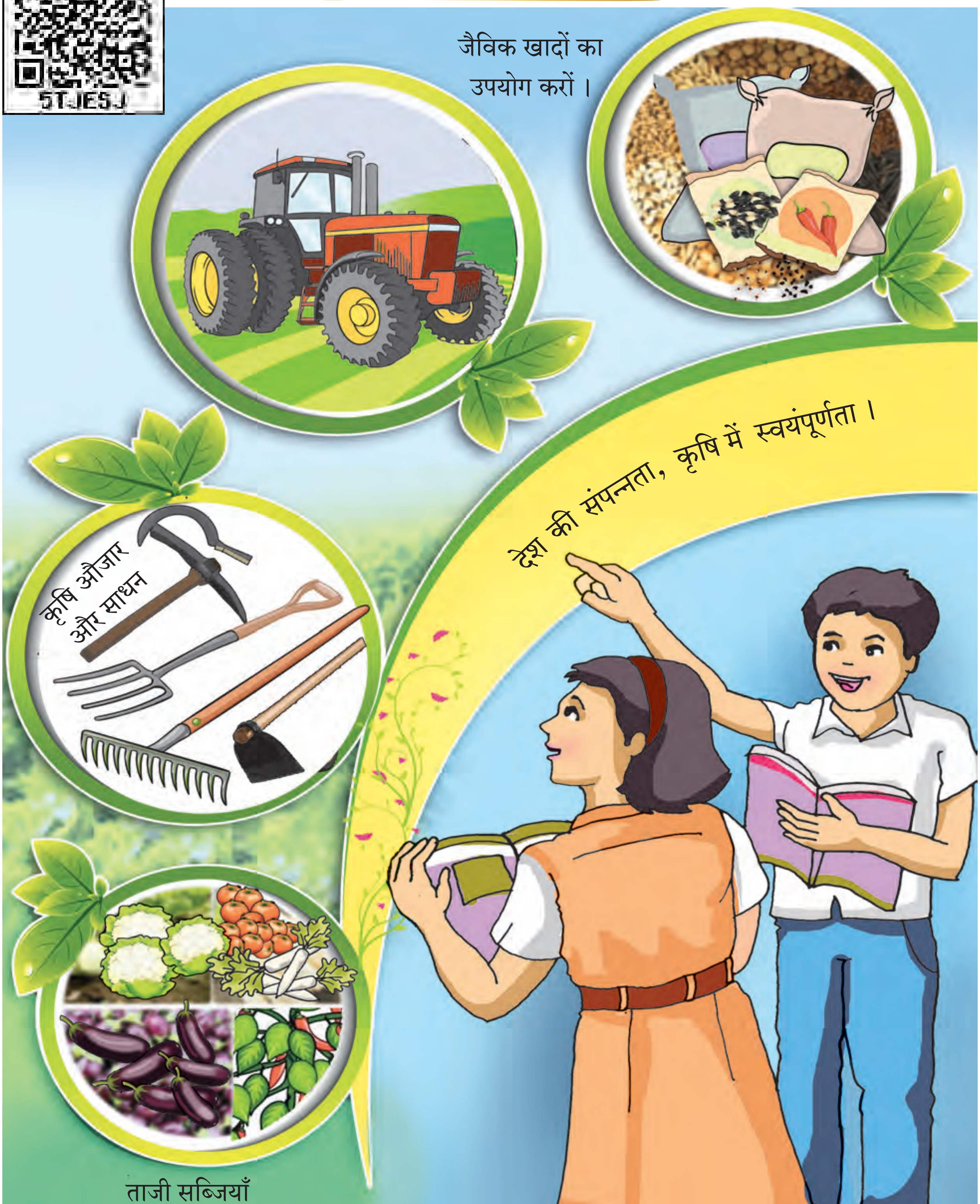

❑ भारत में कृषि के क्षेत्र में हो रहे नए-नए प्रयोग बताएँ । विद्‌यार्थियों को अंतरजाल से इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु कहें । चित्र में दिखाई देने वाली वस्तुएँ, वाक्यों के संदर्भ में चर्चा कराके उनके महत्त्व और कार्य आदि के बारे में पूछें ।

● **पढ़ो और गाओ :**

२. मधुऋतु

-आनंद विश्वास

जन्म : जुलाई १९४९ शिकोहाबाद (उ.प्र.) **रचनाएँ :** मिटने वाली रात नहीं, पर कटी पाँखे, देवम, गरमागरम थपेड़े लू के, चिड़िया फुर्र
परिचय : आनंद विश्वास जी अंधविश्वास और मुश्किलों के बोझ से दबे जीवन के प्रति विद्रोही स्वर रखने वाले कवि हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने वसंत ऋतु में पृथ्वी पर होने वाले विविध परिवर्तनों का सजीव शब्दों में वर्णन किया है ।

5TTAU7

सुनो तो जरा

यू ट्यूब/ऑडियो पर कोई कविता सुनो और आरोह-अवरोह के साथ सुनाओ ।

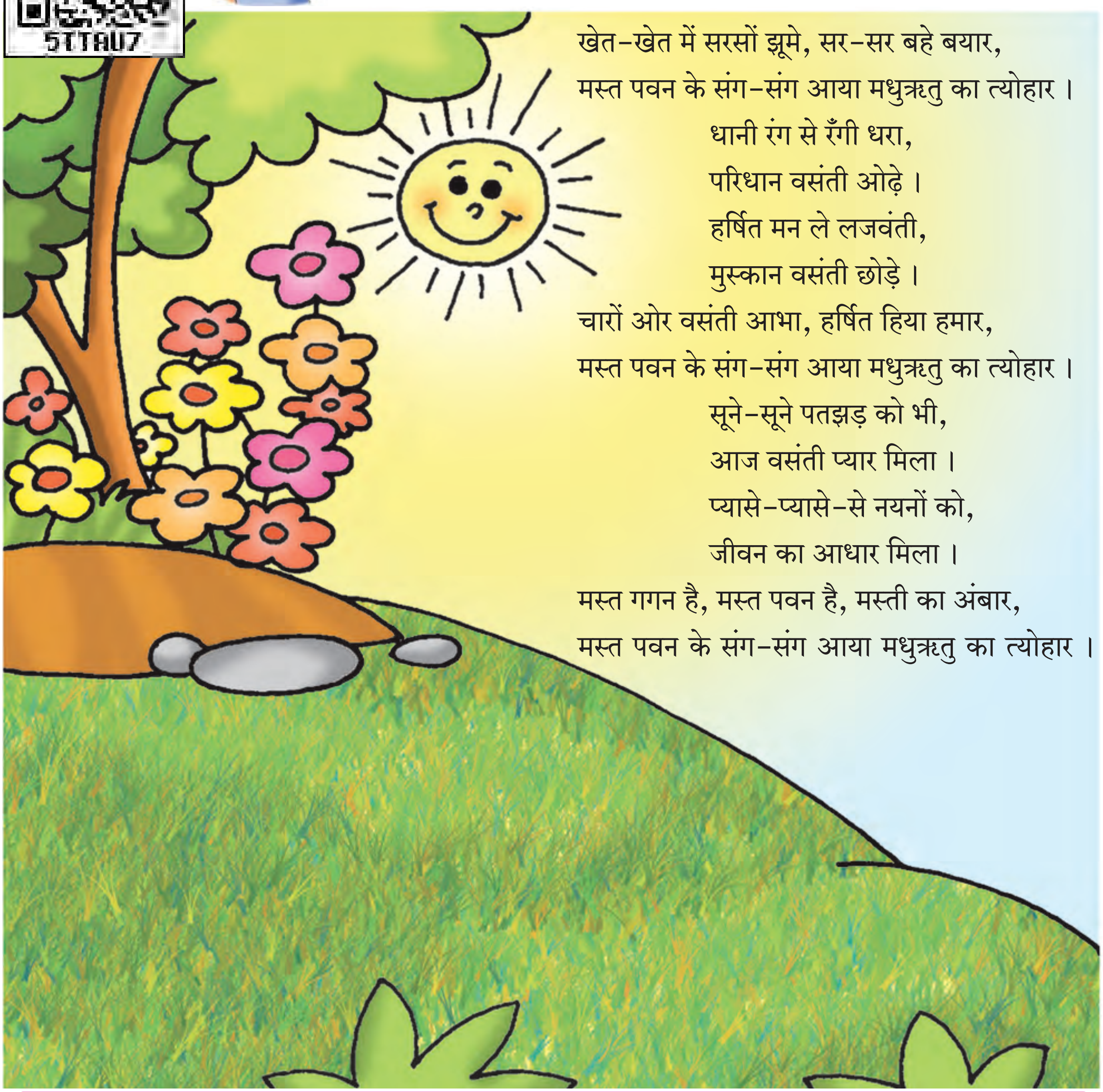

खेत-खेत में सरसों झूमे, सर-सर बहे बयार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।
धानी रंग से रँगी धरा,
परिधान वसंती ओढ़े ।
हर्षित मन ले लजवंती,
मुस्कान वसंती छोड़े ।
चारों ओर वसंती आभा, हर्षित हिया हमार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।
सूने-सूने पतझड़ को भी,
आज वसंती प्यार मिला ।
प्यासे-प्यासे-से नयनों को,
जीवन का आधार मिला ।
मस्त गगन है, मस्त पवन है, मस्ती का अंबार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

❑ हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का आदर्श पाठ करें । विद्यार्थियों से गुट में, एकल साभिनय कविता पाठ कराएँ। कविता में आए भावों को प्रश्नोत्तर के माध्यम से स्पष्ट करें । 'पृथ्वी' विषय पर आधारित अन्य कविता पढ़ने के लिए कहें ।

बताओ तो सही

अपने पसंदीदा मौसम से संबंधित चर्चा करो :

- मौसम का नाम
- कालावधि
- प्रकृति पर प्रभाव
- खान-पान के पदार्थ

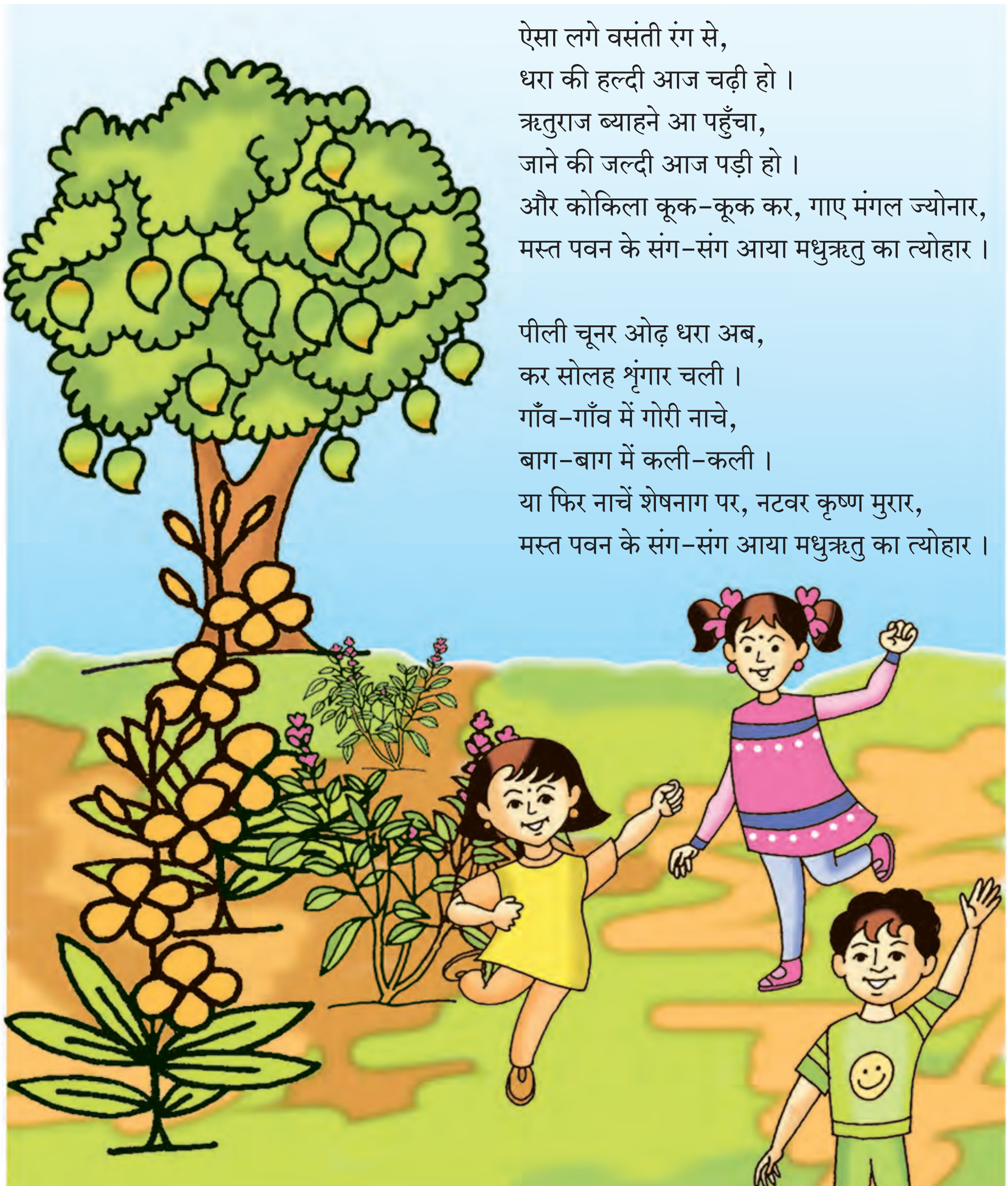

ऐसा लगे वसंती रंग से,
धरा की हल्दी आज चढ़ी हो ।
ऋतुराज ब्याहने आ पहुँचा,
जाने की जल्दी आज पड़ी हो ।
और कोकिला कूक-कूक कर, गाए मंगल ज्योनार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

पीली चूनर ओढ़ धरा अब,
कर सोलह शृंगार चली ।
गाँव-गाँव में गोरी नाचे,
बाग-बाग में कली-कली ।
या फिर नाचें शेषनाग पर, नटवर कृष्ण मुरार,
मस्त पवन के संग-संग आया मधुऋतु का त्योहार ।

❑ मौसम और ऋतुओं पर चर्चा करें । प्रत्येक मौसम और ऋतुओं के महीनों के नाम लिखवाएँ । वसंत ऋतु के समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों पर चर्चा कराएँ । वसंत ऋतु पर बारह से पंद्रह वाक्य/निबंध लिखने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

मधुऋतु = वसंत ऋतु
धरा = पृथ्वी
परिधान = वस्त्र
अंबार = ढेर
हर्षित = प्रसन्न
हिया = हृदय
ऋतुराज = वसंत
मंगल = शुभ
ज्योनार = विवाह में भोजन के समय गाया जाने वाला गीत

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि ऋतु परिवर्तन ना हो तो ....

विचार मंथन

।। सुंदरतम यह देश हमारा ।।

खोजबीन

दोहे लिखने वाले कवियों के नाम ढूँढ़ो और सूची बनाओ ।

अध्ययन कौशल

गणतंत्र दिवस पर वक्तृत्व के लिए टिप्पणी बनाओ :

- कब से प्रारंभ
- मनाने की विधि
- हमारा कर्तव्य

स्वयं अध्ययन

स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी का 'जयोस्तुते' गीत चार्ट पर लिखो और समारोह में सुनाओ ।

वाचन जगत से

स्वामी विवेकानंद जी का कोई भाषण पढ़ो और मुख्य विचार लिखो ।

मेरी कलम से

दूरदर्शन पर देखे किसी 'कार्टून कथांश' का वर्णन अपने शब्दों में लिखो ।

✲ कविता के किसी एक चरण का अर्थ अपने शब्दों में लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

ऋतुएँ, प्रकृति और मानव के लिए वरदान होती हैं ।

भाषा की ओर

शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़ो तथा रिक्त गोलों में उचित शब्द लिखो :

✲ पत्तों की सरसराहट सुनकर हिरन देखते-ही-देखते ---------- हो गया ।

(पलायन, ओझल, विलुप्त)

✲ हमें साक्षात्कार लेने के लिए आपकी ---------- चाहिए ।

(अनुमति, विनती, आदेश)

✲ भरी सभा में अध्यक्ष जी की बात का सभी ने ---------- किया ।

(स्वीकृत, अनुमोदन, मान्यता)

✲ हर माँ के लिए उसकी संतान ---------- रत्न होती है ।

(अनमोल, बहुमूल्य, कीमती)

✲ भारतीय संस्कृति हमारी ---------- है ।

(अमानत, पूँजी, धरोहर)

✲ आजकल हर व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं का ---------- लेना चाहता है ।

(उपभोग, उपयोग, प्रयोग)

✲ अच्छे विचारों की ---------- रखने वाला व्यक्ति सबसे धनी होता है ।

(संपन्नता, अमीरी, ऐश्वर्य)

✲ बछड़ा अपनी माँ से मिलने के लिए ---------- हुआ जा रहा था ।

(बीमार, बेचैन, आकुल)

● सुनो, समझो और सुनाओ :

३. काकी

– सियारामशरण गुप्त

जन्म : १८९५ चिरगाँव(उ.प्र.) **मृत्यु :** १९६३, **रचनाएँ :** मौर्य–विजय, बापू, अमृत पुत्र **(काव्यकृतियाँ)** गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी **(उपन्यास)**, मानुषी **(कहानी संग्रह) परिचय :** आपका वैयक्तिक तथा साहित्यिक रूप गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित रहा है ।
प्रस्तुत मनोवैज्ञानिक कहानी में कथाकार ने अबोध बालक के जीवन की करुण घटना एवं बालसुलभ कल्पना को साकार किया है ।

विचार मंथन

।। स्वामी तिन्हीं जगाचा, आईविना भिकारी ।।

विचार मंथन की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

* विद्‌यार्थियों से 'माँ' के बारे में चर्चा कराएँ ।
* किसी दिन माँ के घर में न होने पर उनके अनुभव कहलवाएँ ।
* माँ की महानता से संबंधित सुवचन बताने के लिए कहें ।

उस दिन बड़े सबेरे जब श्यामू की नींद खुली तब उसने देखा, घरभर में कुहराम मचा हुआ है । उसकी काकी उमा नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कंबल पर भूमि शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेरकर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं ।

लोग जब उमा को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया । लोगों के हाथों से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा । बोला, ''काकी सो रही है । इसे इस तरह उठाकर कहाँ लिए जा रहे हो ? मैं इसे न ले जाने दूँगा ।'' वह अपनी माँ को काकी कहा करता था । लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया । काकी के अग्नि संस्कार में भी वह न जा सका । एक दासी राम–राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही ।

यद्‌यपि बुद्‌धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गई है परंतु असत्य के वातावरण में सत्य बहुत समय तक छिपा न रह सका । आसपास के अबोध बालकों के मुँह से ही वह प्रकट हो गया । यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गई है । काकी के लिए कई दिन लगातार रोते–रोते उसका रुदन तो

❑ किसी एक परिच्छेद का उचित आरोह–अवरोह के साथ वाचन करें । आदर्श मुखर वाचन कराएँ । कहानी का मौन वाचन कराके उसके आशय पर चर्चा करें । माँ, चाची, दादी और नानी के लिए वे क्या–क्या करते हैं, उनसे कहलवाएँ ।

वाचन जगत से

प्रेमचंद द्‌वारा लिखित ‘बूढ़ी काकी’ पढ़ो तथा उसका सारांश सुनाओ ।

धीरे-धीरे शांत हो गया परंतु शोक शांत न हो सका । वर्षा के अनंतर एक, दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी अगोचर हो जाता है; परंतु भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अंतस्तल में शोक जाकर बस गया था । वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता ।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी । न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा । पिता के पास जाकर बोला, ‘‘काका, मुझे एक पतंग मँगा दो । अभी मँगा दो ।’’

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे । ‘‘अच्छा, मँगा दूँगा,’’ कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गए ।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था । वह अपनी इच्छा किसी तरह न रोक सका । एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था । श्यामू ने इधर-इधर देखकर उसके पास एक स्टूल सरकाकर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोलीं, एक चवन्नी पाकर वह तुरंत वहाँ से भाग गया ।

सुखिया का लड़का भोला, श्यामू का समवयस्क साथी था । श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, ‘‘अपनी जीजी से कहकर चुपचाप एक पतंग और डोर मँगा दो । देखो, खूब अकेले में लाना, कोई जान न पाए ।’’

पतंग आई । एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी । श्यामू ने धीरे से कहा, ‘‘भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ ।’’

भोला ने सिर हिलाकर कहा, ‘‘नहीं, किसी से न कहूँगा ।’’

श्यामू ने रहस्य खोला, कहा- ‘‘मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा । उसको पकड़कर काकी नीचे उतरेगी । मैं लिखना नहीं जानता, नहीं तो इसपर उसका नाम लिख देता ।’’

भोला श्यामू से अधिक समझदार था । उसने कहा, ‘‘बात तो तुमने बड़ी अच्छी सोची परंतु एक कठिनाई है । यह डोर पतली है । इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती । इसके टूट जाने का डर है । पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाए ।’’

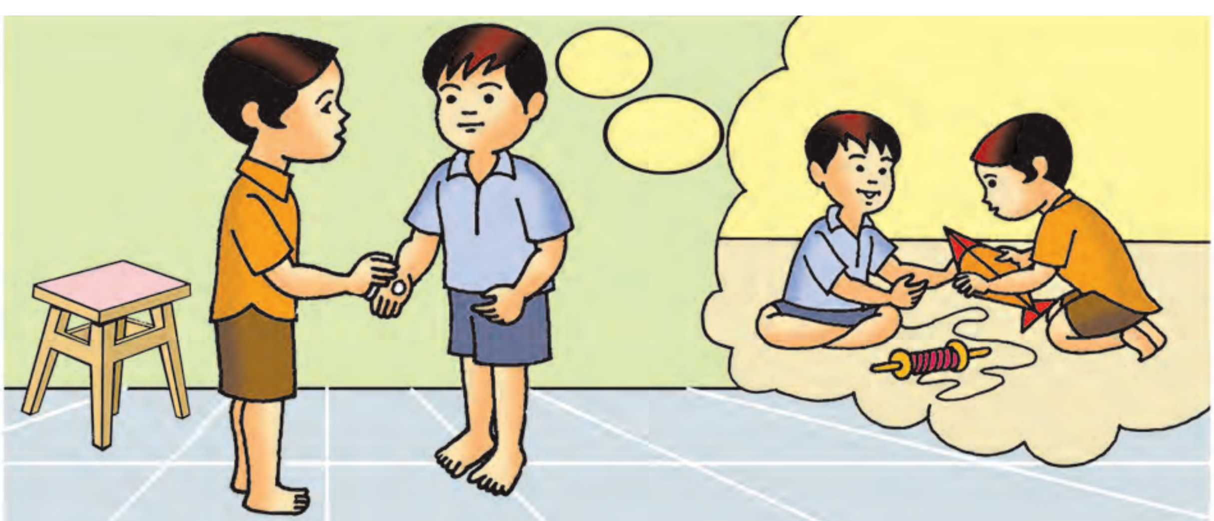

- विशेष वर्णों का उच्चारण करवाएँ और उनके उच्चारण पर ध्यान दें । कहानी में से मात्रावाले शब्द खोजवाकर लिखवाएँ और उनमें से कुछ शब्दों का वाक्य में प्रयोग करवाएँ । यह कहानी उन्हें अपने शब्दों में कहने के लिए प्रेरित करें ।

स्वयं अध्ययन

'पतंगोत्सव' संबंधी जानकारी प्राप्त करो और बताओ :

- कब
- कारण
- पतंगों के प्रकार
- व्यंजन

श्यामू गंभीर हो गया । मतलब यह बात लाख रुपये की सुझाई गई, परंतु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगाई जाए । पास में दाम नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-माया के जला आए हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं । उस दिन श्यामू को चिंता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आई ।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला । उसे ले जाकर भोला को दिया और बोला, ''देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए । अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे । एक रस्सी छोटी पड़ेगी । जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूँगा । नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जाएगी ।''

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे । अकस्मात उग्र रूप धारण किए विश्वेश्वर शुभ कार्य में विघ्न की तरह वहाँ आ घुसे । दोनों को धमकाकर वे बोले, ''तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है ?''

भोला सकपकाकर एक ही डाँट में मुखबिर हो गया । वह बोला, ''श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था ।''

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, ''चोरी सीखकर जेल जाएगा ? अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह समझाता हूँ ।'' कहकर फिर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली । अब रस्सियों की ओर देखकर उन्होंने पूछा, ''ये किसने मँगाई ?''

भोला ने कहा, ''इन्होंने मँगाई थी । ये कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे ।''

विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गए । उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी । उसपर चिपके हुए कागज पर लिखा था ... 'काकी' ।

- कागज पर 'काकी' लिखा देखकर विश्वेश्वर के मन में कौन-कौन-से भाव/विचार आए होंगे, विद्यार्थियों को बताने के लिए कहें । कहानी के अंतिम प्रसंग का कक्षा में विविध गुट बनाकर नाट्यीकरण कराएँ । अन्य कहानी कहलवाएँ ।

मैंने समझा

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि सच में पतंग 'काकी' तक पहुँच गई होती तो ...

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुहराम = कोलाहल

प्रफुल्ल = प्रसन्न

विलाप = रोना

अकस्मात = एकाएक

अगोचर = अदृश्य

सकपकाकर = डरकर

मुखबिर = खबर देने वाला जासूस

मुहावरा

हतबुद्धि होना = कुछ समझ में न आना

सुनो तो जरा

भ्रमणध्वनि के नंबर डायल करने के बाद व्यस्त होने पर सुनाई देने वाली उद्घोषणाएँ सुनो और सुनाओ ।

खोजबीन

भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं दो त्योहारों की जानकारी प्राप्त करो और निम्न मुद्दों के आधार पर लिखो :

- राज्य
- कब और विधि
- वैज्ञानिक कारण
- अन्य राज्यों से तुलना

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन बनाओ :

- सामग्री
- विषय
- संदेश

अध्ययन कौशल

'डेंगू, मलेरिया' संबंधी टेलीफिल्म देखो और इनसे बचने के लिए आवश्यक सावधानियाँ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

माँ वात्सल्य का सागर होती है ।

※ कहानी के इन पात्रों का आपस में रिश्ता लिखो :

रिश्ता

- जवाहर और श्यामू
- सुखिया और भोला
- श्यामू और भोला
- विश्वेश्वर और श्यामू
- श्यामू और उमा
- विश्वेश्वर और उमा

भाषा की ओर

नीचे दिए वाक्य पढ़ो और प्रत्येक वाक्य से ऐसे दो शब्द ढूँढ़कर लिखो; जो एक-दूसरे के विरुद्‌धार्थी हैं । कॉपी में इसी प्रकार के अन्य वाक्य बनाओ :

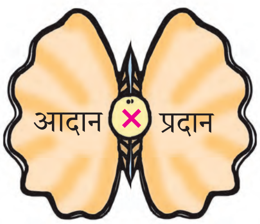

१. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का प्रभावी साधन है ।

२. हमेशा सज्जनों की संगति में रहें और दुर्जनों से दूर ।

३. विज्ञान का सही उपयोग वरदान है अन्यथा वह अभिशाप है ।

४. आज विश्व को अशांति की नहीं शांति की आवश्यकता है ।

५.बगीचे में चारों तरफ फूलों की इतनी सुगंध है कि वहाँ दुर्गंध का नामोनिशान नहीं ।

६. निरर्थक शब्द विचारों को स्पष्ट नहीं करते, सार्थक शब्द ही करते हैं

७. यदि प्रशंसा नहीं कर सकते हैं तो कम-से-कम निंदा तो न करें ।

८. गाँव जाना अभी तो अनिश्चित है; निश्चित हो जाने पर बताएँगे ।

९. अच्छे संस्कार बच्चों को अवनति से बचाकर उन्नति की ओर ले जाते हैं ।

१०. उचित और अनुचित का चुनाव स्वयं को ही करना चाहिए ।

● **सुनो, समझो और सुनाओ :**

४. संदेश

–पुष्पा अशोककुमार दुबे

जन्म : १ जुलाई १९६० मुंबई (महाराष्ट्र) **परिचय :** समसामयिक विषयों एवं विद्यालयीन गतिविधियों में विशेष अभिरुचि । आप राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापिका हैं । नए-नए उपक्रमों में सहभागिता निभाने वाली समस्त विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं ।

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से लेखिका ने पत्रों के प्रकारों पर प्रकाश डाला है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर दूरध्वनि एवं भ्रमणध्वनि न होते तो ......

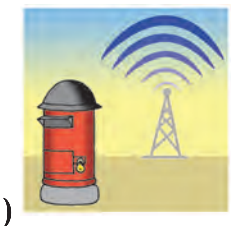

गुरु जी : **(कक्षा में प्रवेश करते ही)** नए वर्ष की शुभकामनाएँ, बच्चो ! तुम सबका नया साल सुखमय और आनंदमय हो । सभी यशस्वी हो ।

सभी विद्यार्थी : धन्यवाद गुरु जी । आपको भी नए वर्ष की बहुत-बहुत बधाई ।

गुरु जी : अच्छा यह बताओ कि नए वर्ष के उपलक्ष्य में तुम्हें किसी का पत्र मिला क्या ? **(सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगते हैं । खुसर-फुसर करने लगते हैं ।)**

उज्ज्वल : गुरु जी, मेरे भाई को नियुक्ति पत्र आया था । उसे रेलवे में नौकरी मिल गई है । बधाई का तो नहीं देखा ।

प्रवर : गुरु जी, मेरे पिता जी को पत्र द्‌वारा पदोन्नति की सूचना प्राप्त हुई । उनका प्रमोशन हो गया है ।

सुव्रता : अरे वाह ! उज्ज्वल की तो चाँदी हो गई । गुरु जी ! उसे कहिए कि वह हम सब को पार्टी दे । **(उज्ज्वल झुककर सुव्रता को अँगूठा दिखाता है ।)**

मुक्ता : गुरु जी मेरी मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है ।

गुरु जी : शाबाश बच्चो ! तुम सबने देखा कि प्रवर के घर पदोन्नति पत्र, उज्ज्वल के यहाँ नियुक्ति का पत्र और मुक्ता की मौसी के लड़के की शादी का निमंत्रण पत्र आया है । क्या तुम जानते हो कि पत्र कितने प्रकार के होते हैं ?

मुक्ता : गुरु जी निमंत्रण पत्र, नियुक्ति पत्र, पदोन्नति पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! इन पत्रों के बारे में तो हम अभी-अभी चर्चा कर ही रहे थे ।

उज्ज्वल : गुरु जी, वही सुनकर तो यह नकलची फटाफट बता दी ।

गुरु जी : प्रवर ! बहुत बुरी बात । ऐसा नहीं बोलते । तुम क्यों नहीं बोले ? चलो ! मुक्ता से क्षमा माँगो ।

उज्ज्वल : सॉरी मुक्ता ! मुझे क्षमा कर दो ।

मुक्ता : जाओ मैंने तुम्हें माफ किया ।

अध्ययन : गुरु जी, आप ही बताएँ । हमारे ध्यान में तो नहीं आ रहा है ।

गुरु जी : सोचो-सोचो । **(कुछ बच्चे सर खुजलाने लगते हैं । कुछ सिर नीचे कर लेते हैं ।)** प्रवर, तुम्हारे भाई को नियुक्ति पत्र मिला है । पत्र मिलने के पहले उसने कुछ तो किया होगा ?

अध्ययन : प्रार्थना पत्र दिया होगा ।

गुरु जी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्‌धि चलने लगी है । **(सभी विद्यार्थी हँस पड़ते हैं ।)**

❑ विद्यार्थियों से संवाद का वाचन कराएँ । कक्षा में संवाद का नाट्यीकरण कराएँ । पत्रों के प्रकारों एवं उनकी विषय वस्तु पर चर्चा कराएँ । पत्र लेखन के प्रारूप पर चर्चा करें । विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार पत्र लेखन के लिए प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

दक्खिनी हिंदी की कोई कविता सुनो और सुनाओ ।

गुरु जी : रत्ना ! खड़ी हो जाओ । क्या बात है ? क्या सोच रही हो ?

रत्ना : गुरु जी ! मैं सोच रही थी कि पाँचवीं कक्षा में हम लोगों ने 'शुभकामना कार्ड' बनाना सीखा था । मैंने मुक्ता को दीपावली पर बधाई पत्र भेजा था । वह भी तो एक प्रकार हुआ न ?

गुरु जी : बिलकुल सही रत्ना । शाबाश ! तुम्हारी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है । शाबाश ! शाबाश !

अरुण : गुरु जी ! मेरी मम्मी बताती हैं कि जब टेलीफोन/मोबाइल नहीं थे तो उस समय हाल-चाल लेने के लिए चिट्ठी लिखते थे ।

गुरु जी : हाँ ! पहले कुशल-क्षेम पूछने के लिए पत्र व्यवहार ही प्रमुख साधन था ।

सौम्या : गुरु जी मेरे भाई ने अपने लिए बहुत सी पुस्तकें वी.पी.से मँगाई थी । उसमें एक पुस्तक फटी हुई थी । अब उसे क्या करना चाहिए ?

गुरु जी : सौम्या, अपने भाई से कहो कि वह प्रकाशक को शिकायती पत्र लिखे और पूरी जानकारी दे ।

प्रवर : गुरु जी, इस तरह तो यह व्यवसाय संबंधी काम हो गया ।

गुरु जी : वाह प्रवर ! तुम इस प्रश्न से हमें पत्र के प्रकार के संकलन की तरफ ले आए हो ? ऐसे पत्र जिसमें व्यापारिक बातें, वस्तु/माल की आपूर्ति, इनसे संबंधी शिकायती बातें हों उन्हें व्यावसायिक पत्र कहा जाता है ।

अध्ययन : गुरु जी, वे कुशल-क्षेम वाले पत्र क्या हैं ?

गुरु जी : बच्चो ! ऐसे पत्र जिसमें पारिवारिक बातें, हाल-चाल, शुभकामना, संदेश देने आदि की बातें होती हैं, ऐसे पत्र व्यक्तिगत पत्र कहे जाते हैं ।

मुक्ता : गुरु जी ! फिर तो निमंत्रण पत्र भी एक प्रकार हुआ न !

गुरु जी : हाँ ! जन्मदिन, विवाह, शुभकार्य आदि के लिए जब हम अपने मित्रों-संबंधियों को पत्र देकर बुलाते हैं तो इसे निमंत्रण पत्र कहा जाता है ।

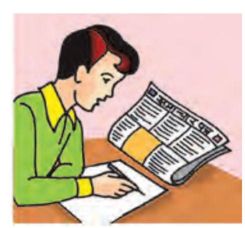

प्रवर : गुरु जी ! मेरे भाई ने प्रार्थना पत्र भेजा था । उसका कौन-सा प्रकार हुआ ?

गुरु जी : अधिकारी, प्रशासक, संस्थाप्रधान आदि से जब हम कोई पत्राचार करते हैं तो उसे आवेदन पत्र कहते हैं ।

सौम्या : गुरु जी ! और कोई शेष है क्या ? कोई छूट तो नहीं गया ?

गुरु जी : हाँ सौम्या । राज्यशासन, केंद्रीय शासन के शासकीय, कार्यालयीन पत्रों को सरकारी पत्र कहते हैं । अच्छा, अब बताओ हमने कितने प्रकार के पत्रों के बारे जानकारी प्राप्त की ?

सभी एक साथ: व्यक्तिगत पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र, सरकारी पत्र, व्यावसायिक पत्र ।

गुरु जी : शाबाश ! लेकिन अब इन पत्रों के नए रूप भी आ गए हैं । इन नए पत्रों के नाम कौन बताएगा ?
(सब सोचने लगते है । कोई उत्तर नहीं देता । सब शांत हो जाते हैं ।)

गुरु जी : अरे भाई ! एस. एम. एस., ई-मेल, फैक्स तो हम अक्सर ही करते हैं । चलो, आज हमने सब पत्रों के प्रकार जानें । अब तुम भी पत्रों के प्रारूप और इसके अंगों के बारे में जानकारी संकलित करना । अगली बार हम इसकी जानकारी पढ़ेंगे । **(सभी बच्चे एक साथ- धन्यवाद गुरु जी)**

❑ विविध प्रकार के पत्रों एवं महापुरुषों के पत्र पढ़ने एवं उनके संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । डाक विभाग से कौन-कौन-से पत्र आते हैं, पूछें । पत्र लेखन की परंपरा समाप्त हो रही है, कारणों पर चर्चा करें । 'कुरियर सेवा' समझाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

प्रमोशन = पदोन्नति

नकलची = नकल करने वाला

मुहावरे

चाँदी होना = बड़ा लाभ होना

अँगूठा दिखाना = चिढ़ाना

स्वयं अध्ययन

अपने मुख्याध्यापक/मुख्याध्यापिका को छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र लिखो ।

वाचन जगत से

अंतरजाल/पुस्तक से भारतीय डाक सेवा का इतिहास ज्ञात करो :

- पुरातन सेवाएँ
- विकास
- आधुनिक सेवाएँ

अध्ययन कौशल

भारत के औद्योगिक मानचित्र से ज्ञात करो कि वस्त्रोद्‌योग की मिलें कहाँ-कहाँ हैं, सूची बनाओ :

- राज्य
- वस्त्रों के प्रकार
- निर्यात

विचार मंथन

पत्र बोलते हैं, भावों के मर्म खोलते हैं ।

बताओ तो सही

सुवचन, उद्‌धरणों का संकलन करो और संबंधित आशय बताओ ।

मेरी कलम से

किसी पसंदीदा विषय पर आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

खोजबीन

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक के संदेश वाहकों के नाम ढूँढ़ो और बताओ ।

✼ पाठ के आधार पर शब्द पहेली से पत्र के प्रकार ढूँढ़ो और लिखो :

व्य	पा	नि	आ	ई	मे
व्या	क्ति	रि	मं	वे	ल
व	यि	ग	त्र	फै	द
सा	क	ण	त	क्स	न

= .... = ...

= .... = ...

= .... = ...

= .... = ...

= .... = ...

सदैव ध्यान में रखो

महापुरुषों द्‍वारा लिखे गए पत्र हमारी साहित्यिक धरोहर हैं ।

भाषा की ओर

दिए गए हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखो और दोनों शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके लिखो तथा इसी तरह के अन्य शब्द ढूँढ़ो ।

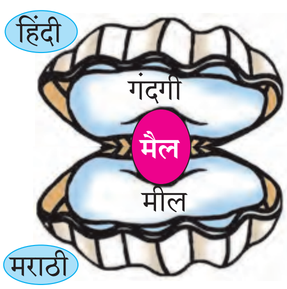

१. मेरे मन में कोई गंदगी नहीं है ।

२. मैं आज चार मील पैदल चला ।

१.---------------

२.---------------

१.---------------

२.---------------

१.---------------

२.---------------

१.---------------

२.---------------

१.---------------

२.---------------

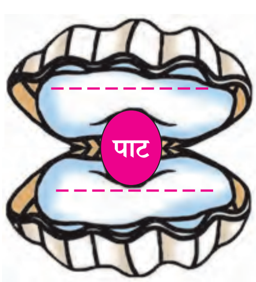

१.---------------

२.---------------

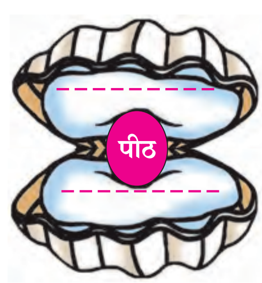

१.---------------

२.---------------

● **पढ़ो और समझो :**

५. आलस का सुख

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक विकृतियों पर कुठाराघात किया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि तुम बिना कुछ किए दो दिन बैठे रहे तो ...

जरा सोचो तो की कृति करवाने के लिए आवश्यक सोपान :

- विद्यार्थियों से उनकी दिनचर्या संबंधी प्रश्न पूछें ।
- बिना कुछ किए दिन कैसे व्यतीत होगा, चर्चा कराएँ ।
- 'आलस्य मानव प्रगति में बाधक है' विषय पर विचार प्रकट करने के लिए कहें ।
- वे आलसी या कृतिशील बनेंगे ? क्यों ? बताने का अवसर दें ।

प्राचीन काल से ही लोग परिश्रम को महत्त्व देते रहे हैं । परिश्रमी और सफल लोगों का सम्मान करते हैं । वे कभी आलसी लोगों पर विशेष ध्यान ही नहीं देते हैं । समाज में आलस को सामाजिक और व्यक्तिगत बुराई माना जाता रहा है । ''जो सोवत हैं, वो खोवत हैं जो जागत हैं, सो पावत हैं'' जैसी कहावतों के माध्यम से आलसी लोगों को धमकाने और ''आलसस्य कुतो विद्या'' जैसे श्लोकों के जरिए उनको सामाजिक रूप से जलील करने/ताने कसने के प्रयास अनंतकाल से जारी हैं फिर भी उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगती । ये आलसी सर्वव्यापी हैं । वे आप को पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सब जगह मिल जाएँगे ।

अपने संचार माध्यमों के चैनलों को ही देख लीजिए । आज तक (चैनल नहीं) आलस और आलसियों का वजूद 'सेट मैक्स चैनल' पर 'सूर्यवंशम फिल्म' की तरह जस का तस बना हुआ है, जो ये दर्शाता है कि बुराई का विरोध करने से वो ज्यादा बढ़ती है । इसीलिए बुराइयों को कोसें नहीं बल्कि प्यार से पालें-पोसें और बड़ा होने पर उनके हाथ पीले और लाल करके घर से विदा कर दें । पुनः वापस न आने दें ।

दरअसल हर युग में अवतरित हुए जरूरत से ज्यादा लेकिन आवश्यकता से कम 'श्याणे-लोग' इस बात को समझने में नाकाम रहे हैं कि आलस कोई दुर्गुण नहीं है बल्कि ये तो दुनियादारी और मोहमाया से मुँह मोड़ लेने का एक आसान आध्यात्मिक तरीका है जिसमें व्यक्ति बिना किसी को तकलीफ दिए, 'बिना किसी गिव या टेक' के, सारे प्रलोभनों को 'ओवरटेक' करके, 'सिक्स लेन' वाले 'मोक्ष मार्ग' पर बिना कोई टोल टैक्स दिए अपनी गाड़ी और कल्पनाओं के घोड़े दौड़ा सकता है । न हींग लगे न फिटकरी, सब रंग चोखा ही चोखा । जिस दिन जालिम दुनिया ये समझ लेगी उसी दिन से सारी समस्याएँ बेईमानों की ईमानदारी की तरह छू मंतर हो जाएँगी । लेकिन ऐसा लगता है कि न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।

आलसी लोगों को चाहे कोई कितना भी भला-बुरा क्यों ना कहे लेकिन वे उसका कभी बुरा नहीं

❑ इस व्यंग्य के किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से इस व्यंग्य में आए विचारों को स्पष्ट करें । विद्यार्थियों से एकल, समूह में मुखर एवं मौन वाचन कराएँ ।

विचार मंथन

।। समय का खोना, जीवन भर का रोना ।।

मानते। वे बहुत ही समझदार और भले लोग हैं । वे जानते हैं कि बुरा मानने के बाद गुस्सा उपजता है, जो कि झगड़े और कलह (और कलह से सुलह का रास्ता काफी दुर्गम होता है) को जन्म देता है । लोग एक-दूसरे का मुँह देखना पसंद नहीं करते, जिससे रिश्तों में दरार आने की संभावना रहती है और इस दरार को रोकने के लिए वो 'खंबुजा-सीमेंट' की तरह काम करती है । टीवी विज्ञापनों में कई सीमेंट में जान बताई जाती है । कुछ लोग कितने नासमझ होते हैं । वे विज्ञापनों पर भरोसा कर लेते हैं । उन्हें ऐसे सारे विज्ञापनों के खिलाफ ज्ञापन देने की जरूरत है क्योंकि दरअसल 'जान' किसी सीमेंट में नहीं होती है बल्कि आलसी लोगों में होती है क्योंकि संबंधों के लिए वे अपना 'अहम' त्याग देते हैं लेकिन अपना आलस त्याग देंगे ऐसा 'वहम' किसी कीमत पर नहीं उपजने देते हैं । वैसे आजकल बहुत से लोग सयाने हो गए हैं । विज्ञापन

देखते हैं और भूल जाते हैं । विज्ञापनों पर विश्वास नहीं करते । सुनते सबकी हैं, करते अपने मन की हैं ।

आज के भौतिकतावादी युग में सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने में आलसी महापुरुष अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं । जहाँ अधिकतर लोग सफलता मिलने के बाद बदल जाते हैं और इवन-डे पर अपनी मँहगी कार में और ओड-डे पर अपने अभिमान पर सवारी करने लगते हैं वहीं आलसी लोगों से सभ्य समाज को ऐसा कोई खतरा नहीं हैं । काम और सफलता इन दो शब्दों से आलसी लोगों का वही संबंध होता है जो कि 'लाल-किला बासमती चावल' से लाल किले का है । लेखक और प्रकाशक की 'संयुक्त-गलती' से 'काम और सफलता' जैसे शब्द आलसियों की डिक्शनरी में होते तो हैं लेकिन उन्हें देखते ही वो पन्ना पलट देते हैं ताकि उनकी किस्मत का पासा न पलट पाए और वो आलस के अलावा किसी अभिमान या स्वाभिमान का शिकार न हो पाएँ ।

यहाँ पर ये 'अस्पष्ट' कर देना जरूरी है कि आलसी लोग किसी भी कार्य या मेहनत से नहीं घबराते हैं । वे भला बिस्तर से नहीं घबराते, पड़े-पड़े खाने से नहीं घबराते, टीवी. पर कार्यक्रम, पिक्चर देखने से नहीं घबराते तो कार्य से क्या घबराएँगे । उनको केवल इस बात का डर सताता है कि उनके काम करने से कहीं 'सोने' के भाव कम ना हो जाए । ये लोग इतने दयालु और परहित स्वभाव के होते हैं कि हर क्षेत्र में बढ़ती हुई 'गला-काट' प्रतिस्पर्धा को कम करने के उद्देश्य से काम ही नहीं करते हैं । न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी । जब वे मैदान में उतरेंगे ही नहीं तो स्पर्धा किससे करेंगे ।

- इस पाठ में आलस्य के साथ-साथ किन-किन पर व्यंग्य किया गया है, सूची बनवाएँ । इस सूची के किन-किन मुद्दों से विद्यार्थी सहमत/असहमत हैं, पूछें । विद्यार्थियों को कोई व्यंग्य चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । अन्य व्यंग्य लेख पढ़ने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

कोई हास्य घटना पढ़ो और उसपर आधारित संवाद बनाकर प्रस्तुत करो ।

वस्तुतः वे लोग चाहते हैं कि 'काबिल' लोगों को मौका मिले और वे सफल होकर 'ड्यू डेट' से पहले अपने सभी 'बिल' भर सकें । इसके बदले इनको किसी सम्मान की आशा नहीं होती बल्कि ये तो केवल इतना ही चाहते हैं कि काबिल लोग अपनी सफलता का शोर मचा कर इनकी नींद खराब न करें । काबिल लोग जो करते हैं उसके खिलाफ लोग तो कभी आवाज नहीं उठाते फिर आलसी लोगों को ये क्यों बदनाम करते हैं । इसके अलावा आलसी लोगों पर कभी अपेक्षाओं और उम्मीदों पर खरा ना उतर पाने का आरोप नहीं लगता क्योंकि सपने में भी इनसे कोई उम्मीद या अपेक्षा नहीं रखी जाती । ये कभी किसी का दिल भी नहीं तोड़ते क्योंकि इन्हें दिन-रात खटिया तोड़ने से ही फुर्सत नहीं मिलती । वे इस दुनियादारी से कोई मतलब ही नहीं रखते उन्हें किसी से क्या लेना देना । बस अपने काम से काम । खाना-पीना, पड़े रहना बस ! वे दुनिया के झंझटों में नहीं पड़ना चाहते । यहाँ आकर वे गांधीजी के बंदर बन जाते हैं । इन बंदरों का अपना अर्थ लगा लेते हैं । वे न कुछ देखते हैं, न सुनते हैं और न ही बोलते हैं ।

वैसे वे किसी से डरते नहीं । आलसी लोग बिना दब के, कब के, समाज के हर तबके में अपनी पैठ सियाचिन की बर्फ की तरह जमा चुके हैं । मैंने पहले ही कहा है कि ये सर्वव्यापी हैं । ये आलसी यत्र-तत्र--सर्वत्र मिल जाएँगे । एक खोजो हजार मिलेंगे । तुम्हें फिल्में बहुत प्रिय हैं न । अब तुम अपनी फिल्मों को ही देख लो । कुछ फिल्म निर्देशक तो इतने आलसी होते हैं कि फिल्म की स्क्रिप्ट करने में ही तीन-चार साल निकाल देते हैं । वैसे ये डायरेक्टर्स हिम्मत करके थोड़ा आलस और दिखाएँ तो सरकारें पंचवर्षीय योजनाएँ बनाने और क्रियान्वित करने में भी इनकी मदद ले सकती हैं ताकि कर्मचारी, अधिकारी अपने ऑफिस के वातानुकूलित कार्यालयों में थोड़ा आराम कर सकें । उन्हें दौरों पर न जाना पड़े । वैसे उन्हें केवल अकाल और बाढ़ के ही दौरे अधिक पसंद हैं । सामान्य दौरों के खयाल से ही उन्हें दौरा पड़ने लगता है ।

अब तुम्ही सोचो कि ये आलसी कितने महत्वपूर्ण होते हैं । यदि ये महत्त्वपूर्ण न होते तो भला उनपर इतना लंबा लेख लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ती ? तुम भी इतने मग्न होकर उनके बारे में क्यों पढ़ते ? सच बताना, तुम्हें ये आलसी लोग पसंद आ रहे हैं न ! क्या कहा, हाँ या न ? चलो छोड़ो । जाने दो इन आलसियों को । अब अपने दूसरे भी काम करो । कितना समय दे रहे हो इनको । जरा अपना कान मेरे पास लाओ । एक राज की बात बतानी है । राज की बात यह है कि 'तुम कभी आलसी मत बनना ।'

विकारी शब्दों के भेदों पर चर्चा करें । पाठ में आए विकारी शब्दों की सूची बनवाएँ, वर्गीकरण कराएँ । प्रत्येक का अलग-अलग वाक्य बनाकर बताने के लिए कहें । संज्ञा, सर्वनामों में कारक लगने के पश्चात उनके जो रूप बनते हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक समझने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

वजूद = अस्तित्व

जालिम = जुल्म करने वाला

तबके = वर्ग

वहम = गलत सोच, शक

काबिल = योग्य

मुहावरे

जलील करना = अपमानित करना

ताना कसना = व्यंग्य मारना

कान पर जूँ तक न रेंगना = कुछ भी प्रभाव न पड़ना

कहावत

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी = न बड़ा प्रबंध होगा न बड़ा कार्य होगा ।

स्वयं अध्ययन

नियोजन बनाओ और उसपर अमल करो :
'शिक्षक दिवस'/ 'विश्व हिंदी दिवस'

कार्य विभाजन | कार्यक्रम

सुनो तो जरा

नाट्यांश सुनो और सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत करो ।

बताओ तो सही

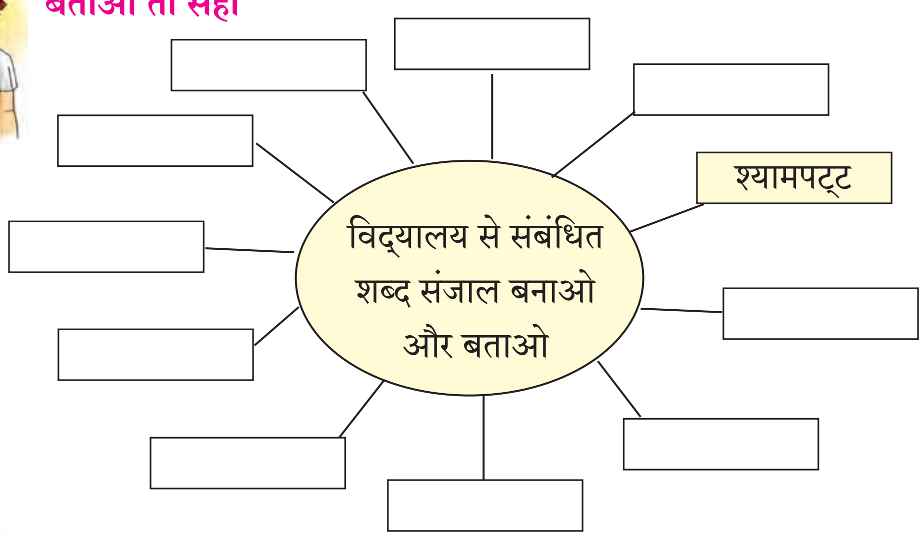

मेरी कलम से

अपने विद्‌यालय के वार्षिकोत्सव की निमंत्रण पत्रिका तैयार करो ।

खोजबीन

अंतरजाल से खोजकर व्यंग्य चित्रकारों के नामों का चार्ट तैयार करो ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय प्रतियोगिता का सूचना पत्र बनाओ ।

✲ **पाठ के आधार पर आलसी व्यक्ति की विशेषताएँ लिखो ।**

सदैव ध्यान में रखो

आलस्य मनुष्य की प्रगति में बाधक है ।

भाषा की ओर

सूचना के अनुसार दिए गए अविकारी शब्दों की सहायता से वाक्य बनाकर उनके नाम लिखो :

अविकारी शब्द	निर्देश	वाक्य	प्रकार
धीरे-धीरे	[पुल्लिंग ए. व.]	रमेश धीरे-धीरे चलता है ।	क्रियाविशेषण अव्यय
आहिस्ता-आहिस्ता	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
कारण	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
परंतु	[पुल्लिंग ए. व.]		
अरे रे !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
अलावा	[पुल्लिंग ए. व.]		
और	[स्त्रीलिंग ए. व.]		
भली-भाँति	[पुल्लिंग ए. व.]		
वाह !	[स्त्रीलिंग ए. व.]		

● पढ़ो और गाओ :

६. अक्लमंदी

यहाँ हास्य के माध्यम से कवि ने प्रकृति में जो जिस रूप में है, उसी रूप में स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है ।

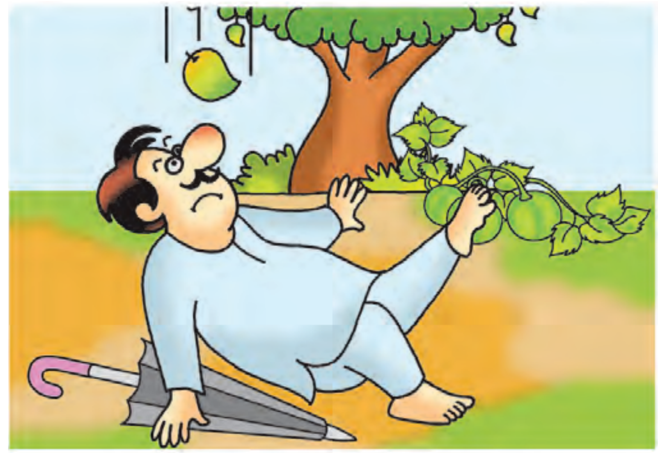

किसी गाँव मिट्ठू नामक, एक मियाँ जी रहते थे ।
बात-बात में खुद को, खूब अक्लमंद कहते थे ।।
बात दुरुस्त न लगे किसी की, आता काम पसंद नहीं ।
नाक चढ़ाकर हिज्जेबाजी, करते रहते जहाँ-कहीं ।।
एक दिवस ससुराल पहुँचने की उसने मन में ठानी ।
कपड़े पहन, उठाकर थैला, फिर सिर पर छतरी तानी ।।
तेज धूप में चलते-चलते तन से स्वेद लगा झरने ।
फाड़-फाड़ कर आँखें मिट्ठू, वृक्ष तलाश लगा करने ।।
पाकर सुंदर वृक्ष आम का, वह आनंद विभोर हुआ ।
उसकी ठंडी छाया में बस, खूब मजे से लेट गया ।।
हरा-भरा खेत पास में, लहर-लहर लहराता था ।
देख-देख वह शोभा उसकी, फूला नहीं समाता था ।।
बड़े-बड़े तरबूज खेत में, देख-देख वह ललचाया ।
कुछ मीठे तरबूज वहाँ से, तुरंत तोड़कर ले आया ।।
खाकर के तरबूज मियाँ ने, ऊपर को जब देखा तो ।
मीठे-मीठे और रसीले, आम लगे थे ऊपर को ।।

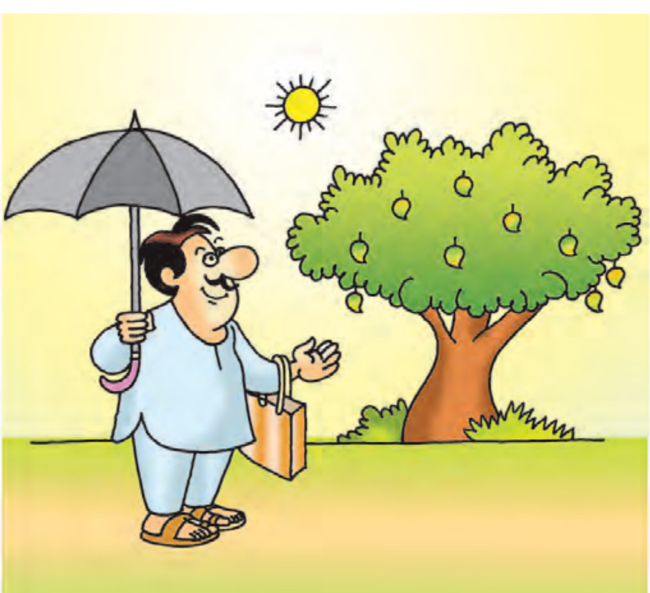

आम तोड़ने चढ़ा गिर पड़ा, लिए तुड़ा घुटने-टखने ।
हाथ न आते देख आम, तब त्योरी तान लगा बकने-
''खुदा बड़ा ही बेवकूफ है, कैसे उसको समझाऊँ ?
अगर कहीं मिल जाए मुझको, तो कच्चा ही खा जाऊँ ।।
देखो, बेवकूफ ने बेलों पर तरबूज लगाए हैं?
कितने छोटे आम, दरख्तों पर ऊँचे लटकाए हैं ।।
अगर खुदा मैं होता तो, सब गलती देता दूर भगा ।
पेड़ों पर तरबूज व बेलों पर चट देता आम लगा ।।''
देता रहा खुदा को गाली, आया मन में खेद नहीं ।
ठंडी हवा चली मिट्ठू को, निधड़क आई नींद वहीं ।।
उसी समय ऊपर से, एक आम अचानक टूट गिरा ।
टूटी नाक मियाँ मिट्ठू की, खून बह निकला बहुतेरा ।।
ऐसी हालत में मिट्ठू से दरद न झेला जाता था ।
फूट-फूट कर रोता था, औ नाक, नाक चिल्लाता था ।।
आँसू और खून की उसके, मुख पर धार लगी बहने ।
हाथ जोड़ फिर रोता-रोता, होकर खड़ा लगा कहने-
''खुदा, बड़े तुम अक्लमंद हो, मुझे लगा है आज पता ।
नहीं बुराई कभी करूँगा, कर दो मेरी माफ खता ।।
अगर आम के बदले ऊपर, ये तरबूज लगे होते ।
मेरा निकल कचूमर जाता, घरवाले किसको रोते ?''

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से सामूहिक, गुट एवं एकल साभिनय पाठ करवाएँ । अन्य हास्य कविता कक्षा में सुनाने के लिए प्रेरित करें । चुटकुलों एवं हास्यगीतों का संग्रह करवाएँ । कक्षा में पहेलियाँ बुझवाएँ ।

● पढ़ो और समझो :

७. साक्षात्कार

– डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

जन्म : ३ मार्च १९४० **मृत्यु :** १४ नवंबर २०१३ **रचनाएँ :** डाकू का बेटा, भगतसिंह, उड़ती तश्तरियाँ, स्वानयात्रा, गिरना स्काइलैब का आदि **परिचय :** हिंदी के बालसाहित्यकार और संपादक । कविता, कहानी, नाटक, आलोचना आदि की २५० पुस्तकें प्रकाशित ।

इस पाठ में साक्षात्कार के माध्यम से अच्छी विज्ञान कथा की विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है ।

बताओ तो सही

किसी व्यक्ति का साक्षात्कार लेने से पहले कौन-कौन-सी पूर्व तैयारी करनी पड़ेगी, बताओ ।

व्यक्ति का चयन | समय निश्चिति | मुद्दे | आवश्यक सामग्री

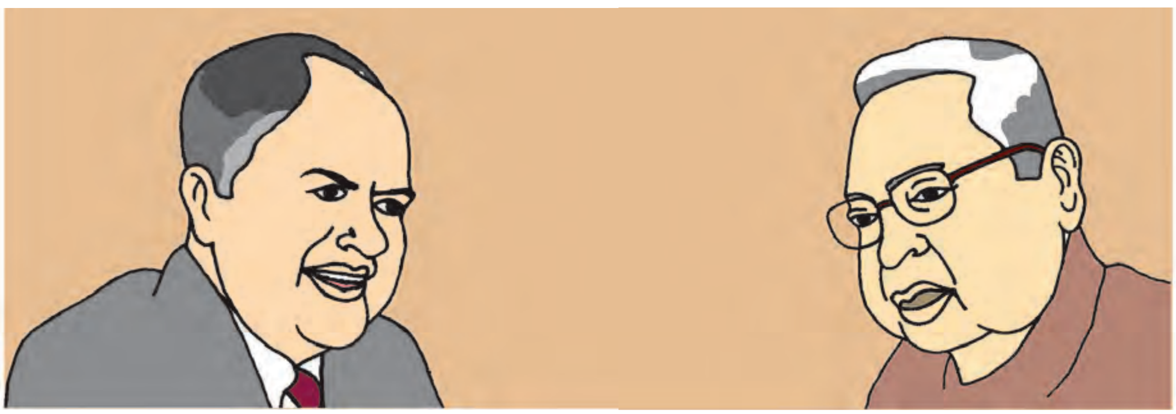

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! आपने बड़ी संख्या में विज्ञान कथाएँ लिखी हैं और उनमें से कई पर फिल्में भी बनी हैं तो हम अपनी चर्चा सीधे-सीधे इसी बात से शुरू करते हैं कि एक अच्छी विज्ञान कथा में कौन-कौन-सी विशेष बातें होनी चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : मेरा मत यह है कि जिस उद्देश्य से विज्ञान कथा मैं लिखता हूँ, वह यह है कि जो पाठक हैं, उन्हें हम विज्ञान के बारे में कुछ बताएँ । कारण यह है कि आज पाठक विज्ञान को बहुत दूर की चीज समझता है, विज्ञान से डरता है, सोचता है कि ये मेरी समझ से परे है । पर उसे ऐसा लगना चाहिए कि विज्ञान हमारे जीवन का अंग बन चुका है । वह किस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित करता है, यह बात अगर हम उसे किसी वास्तविक कथा से बता सकें तो विज्ञान के बारे में उसे कुछ रुचि हो सकती है । इस विचार से विज्ञान के जो नियम हैं, उनको स्पष्ट करने वाले कुछ कथानक मैं चुनता हूँ, जिसका वास्तविक जीवन से संबंध हो सके । विज्ञान कथा के माध्यम से मैं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार करना चाहता हूँ । लेकिन मुझे लगता है कि हमारे देश में विज्ञान का लोकप्रियकरण एक प्रमुख बुनियादी आवश्यकता है । जब तक लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं आता, हम भविष्य के भारत की कल्पना कैसे कर सकते हैं ? इसलिए विज्ञान प्रसारकों के सामने यह बड़ी चुनौती है कि विभिन्न माध्यमों से विज्ञान का प्रचार-प्रसार कैसे किया जाए ? मैं अपनी यही भूमिका विज्ञान कथाओं के माध्यम से पूरी करने के प्रयास में लगा हूँ ।

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । कुछ विद्यार्थियों से मुखर वाचन कराएँ । संपूर्ण पाठ का मौन वाचन करवाएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा करें । डॉ. नारळीकर जी की विज्ञान कथाएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

अध्ययन कौशल

किसी वैज्ञानिक की लघु जीवनी पढ़ो और टिप्पणी बनाओ ।

डॉ. देवसरे : विदेशों में विज्ञान कथाओं का विपुल साहित्य लिखा गया है, जैसे– उड़नतश्तरियों, दूसरे ग्रहों से आने वालों या दूसरे ग्रहों में जाने वालों को लेकर और इसी आधार पर तमाम विज्ञान सीरियल, विज्ञान फिल्में बन रही हैं । क्या ये कथाएँ हमें किसी प्रकार से वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं देतीं ?

डॉ. नारळीकर : ऐसी कुछ कथाएँ अवश्य हैं जिसमें दूसरे ग्रहों से लोग आए या हमारे यहाँ के लोग दूसरे ग्रहों पर गए हैं, जैसे 'स्टार ट्रेक' धारावाहिक में हुआ या अन्य कुछ फिल्मों में । इनमें से कुछ में ही विज्ञान अच्छी तरह से यानी तर्कसंगत रूप से देखने को मिलता है, लेकिन ऐसे कथानक अधिकांश रूप से अपवाद ही हो सकते हैं, जैसे– एच.जी. वेल्स का 'वार ऑफ दि वर्ल्डस' । सामान्य रूप से जो कुछ हम देखते हैं, वे ऐसे नहीं होते और उनसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण की आशा करना कठिन होता है । वे मनोरंजन कर सकती हैं, पर विज्ञान में आपकी रुचि नहीं जगा सकतीं ।

डॉ. देवसरे : अब यहीं पर सवाल उठता है कि विज्ञान तो सत्य पर आधारित होता है और कथा का आधार कल्पना होती है, तो किसी विज्ञान कथा में इन दोनों की मात्रा कितनी हो और इसमें कैसा तालमेल होना चाहिए ?

डॉ. नारळीकर : इस बारे में मैं कहना चाहूँगा कि जिस दृष्टिकोण से मैं लिखता हूँ उसमें कुछ फैंटसी का अंश आ सकता है । लेकिन वह भी इस प्रकार आता है–मान लीजिए, आज हम विज्ञान का एक रूप देख रहे हैं, वह भविष्य में कैसा होगा, इसके बारे में वैज्ञानिकों को कुछ कल्पनाएँ करनी चाहिए जिसे भविष्य की योजना बनाना कहते हैं, वह होनी चाहिए यानी आगे समाज किस मार्ग से जाए, इसके बारे में कुछ विचार–मंथन आज करना चाहिए । तो आज जो विज्ञान हम देखते हैं, उसके ऊपर उसका तर्क–विस्तार (एक्सस्ट्रापोलेट) करने, यानी आगे वह कैसा होगा, इस प्रकार की कल्पनाएँ की जाती हैं ।

डॉ. देवसरे : डॉ. नारळीकर ! प्रश्न यह है कि एच.सी. वेल्स या जूल्स वर्न उन कथाओं में ऐसी कल्पनाएँ कैसे कर सके कि वे कई सालों बाद सत्य निकलीं ?

डॉ. नारळीकर : कुछ लोग वे होते हैं, जिन्हें हम युगद्रष्टा या भविष्यद्रष्टा कहते हैं । हालाँकि ऐसे गिने–चुने लोगों में आगे का समाज किस मार्ग से जाएगा, विज्ञान किस मार्ग से जाएगा, इसको परखने–देखने की शक्ति होती है । जूल्स वर्न ने चंद्रमा पर जो लोग गए, उनका जो वर्णन किया है और बाद में जब अपोलो–२ यान वहाँ गया, तब जो वर्णन वास्तव में हमने चंद्रमा का पढ़ा उसमें काफी समानताएँ दिखाई देती हैं ।

डॉ. देवसरे : एक वैज्ञानिक यदि विज्ञान कथा लिखता है, तो निश्चित रूप से वह बहुत सशक्त होगी, लेकिन कोई अन्य लेखक यदि विज्ञान कथा लिखता है या लिखना चाहता है, तो उसकी विज्ञान में गहरी पकड़ होनी अनिवार्य है, तभी संभवतः वह एक अच्छी विज्ञान कथा की कल्पना कर पाएगा ?

❑ पाठ में आए वैज्ञानिक शब्दावली ढूँढ़कर उनपर चर्चा करवाएँ । पाठ में आए एकवचन, बहुवचन, पुल्लिंग–स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान कराके सूची बनाने के लिए प्रेरित करें । इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवाएँ । वाक्य में होने वाले परिवर्तन पर चर्चा कराएँ ।

जरा सोचो .....बताओ

अगर तुम्हें शालेय विज्ञान प्रदर्शनी का प्रमुख बनाया जाए तो... ।

डॉ. नारळीकर : देवसरे जी ! विज्ञान कथा के दो पहलू हैं । पहला यह कि विज्ञान का भाग अच्छा और सही होना चाहिए । लेकिन उसके साथ ही यदि आपका उद्‌देश्य यह है कि पाठक इसे मन लगाकर पढ़ें तो उसमें अच्छी कथा के जो साहित्यिक गुण होते हैं, वे होने चाहिए । इसलिए अच्छी विज्ञान कथा में विज्ञान और अच्छी कथा के गुणों का संगम होना चाहिए ।

डॉ. देवसरे : विश्व की विज्ञान कथाओं और उनके लेखकों में आप किसे श्रेष्ठ समझते हैं ?

डॉ. नारळीकर : विदेशी विज्ञान कथाओं में आर्थर सी. क्लार्क एक सशक्त कथाकार हैं । फ्रेड हॉयल मेरे गुरु हैं जिनसे मैंने पी एच. डी. की ट्रेनिंग ली, उनसे ही मैंने विज्ञान कथा लिखने की प्रेरणा पाई ।

डॉ. देवसरे : आपकी जो एक सशक्त विज्ञान कथा है 'अंतरिक्ष में विस्फोट', जिसको किशोरों ने बहुत पसंद किया और जिसका अनुवाद भी कई भाषाओं में हुआ है, उसमें आपने वही बात कही है जो इस चर्चा के आरंभ में आपने कही कि आप, लोगों को भविष्य की वह कल्पना देना चाहते हैं, जो संभवतः भविष्य में एक वैज्ञानिक सत्य के रूप में आ सकती है । इस कथा के बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : ऐसा हुआ था कि पहले मैंने इसे एक छोटी-सी कथा के रूप में मराठी में लिखा था । फिर मुझे लगा कि इसे किशोरों के लिए छोटे उपन्यास के रूप में बढ़ाया जा सकता है । इसी बीच दिल्ली से साहित्य अकादमी का पत्र आया कि आप हमारे लिए किशोर पाठकों के लिए कोई विज्ञान उपन्यास लिखें । तो मैंने यह उपन्यास लिखा । इसमें मैंने यह दिखाना चाहा है कि तारे में भी विस्फोट होता है । यह विस्फोट तारे की आयु में बहुत छोटा-सा क्षण माना जाता है, क्योंकि सूर्य जैसा तारा यदि दस से बारह अरब वर्ष जिएगा, तो उसके हिसाब से दो-तीन हजार वर्ष मानव के जीवनकाल में बहुत बड़ी अवधि होती है । इसीलिए मैंने सम्राट हर्षवर्धन के समय से तीन हजार वर्ष का कालखंड उसमें दिखाया है कि विस्फोट का प्रभाव कितना हो सकता है । हम लोग ऐसा समझते हैं कि हम इस पृथ्वी के स्वामी हैं, इसको कंट्रोल कर सकते हैं, जो कि गलत है । अंतरिक्ष के जिस वातावरण में हम रहते हैं उसमें यदि कोई खतरनाक चीज आ जाए तो हम लोग उसका मुकाबला नहीं कर पाएँगे ।

डॉ. देवसरे : आज भी पत्रिकाएँ और लोग मानते हैं कि बच्चों को परीकथाएँ, भूत-प्रेतों, चुड़ैलों आदि की कहानियाँ पढ़नी चाहिए तो विज्ञान कथाओं के संदर्भ में इनके बारे में आपका क्या विचार है ?

डॉ. नारळीकर : मैं यही कहूँगा कि जो बच्चे परीकथाएँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ आदि पढ़ते हैं, उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण जागृत होने में बाधा पड़ सकती है क्योंकि वे अंधविश्वासी अधिक बन सकते हैं । हमारे देश में अंधविश्वास ने अपनी जड़े कितनी गहरी जमा रखी है, यह वे लोग अधिक अच्छी तरह जानते हैं जो विज्ञान प्रसारक हैं । इसलिए मैं ऐसे बच्चों को सलाह दूँगा कि वे विज्ञान कथाएँ अवश्य पढ़ें । हम जब विज्ञान की नजर से कुछ पढ़ते हैं तो समझ में आ जाता है कि संभव क्या है, असंभव क्या है ? विज्ञान कथाएँ नई दृष्टि, सोच और भविष्य की सार्थक कल्पना देती हैं ।

❑ किसी महान विभूति का साक्षात्कार पढ़ने के लिए प्रेरित करें । साक्षात्कार के महत्त्व एवं इसकी विशेषता पर चर्चा करें । उनसे परिसर में रहने वाले किसी सैनिक, सामाजिक कार्यकर्ता के साक्षात्कार के लिए प्रश्न निर्मिति करवाकर साक्षात्कार लेने के लिए कहें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

चुनौती = आह्वान

फैंटसी = कल्पना

पहलू = पक्ष, अंग

मुहावरा

समझ से परे होना = समझ में न आना

विचार मंथन

।। बिना परिश्रम न मिले मंजिल ।।

वाचन जगत से

डॉ. नारळीकर जी की कोई विज्ञानकथा पढ़ो और अपने मित्रों को बताओ ।

सुनो तो जरा

दूरदर्शन से प्रसारित होने वाला कोई साक्षात्कार सुनो और उसका महत्वपूर्ण अंश सुनाओ :

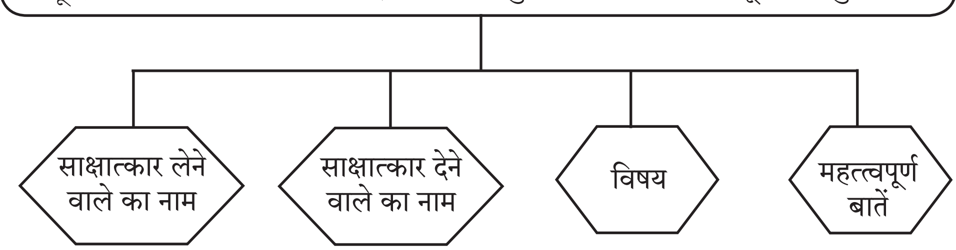

मेरी कलम से

किन्हीं दस वैज्ञानिकों और उनके आविष्कारों के नामों की तालिका बनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से राज्यों के स्थापना दिवस ज्ञात करो और सूची बनाओ :
जैसे– महाराष्ट्र = १ मई, १९६० ई.

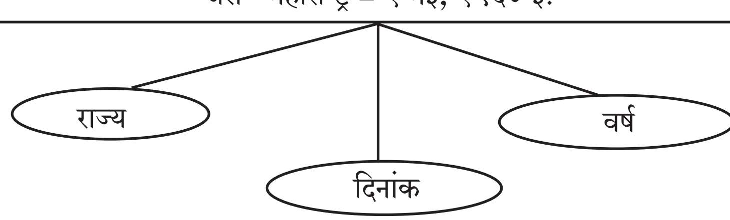

स्वयं अध्ययन

प्राचीन काल तथा वर्तमान में प्रयुक्त वजन–मापों के नामों की तालिका बनाओ ।

✲ **उचित पर्याय को गोल बनाओ :**

(क) हमारे देश की बुनियादी आवश्यकता है ।

१. विज्ञान का लोकप्रियकरण २. विज्ञान का प्रयोग ३. वैज्ञानिक लेखन

(ख) डॉ. नारळीकर जी के गुरु; जिनसे उन्होंने पीएच. डी. की ट्रेनिंग ली ।

१. आर्थर सी. कार्ल्क २. ज्यूल्स वर्न ३. फ्रेड हॉयल

(ग) किशोरवयीन बच्चों द्‍वारा पसंद की हुई विज्ञान कथा ।

१. ब्लैक क्लाउड २. अंतरिक्ष में विस्फोट ३. उड़ती तश्तरियाँ

सदैव ध्यान में रखो

वाणी से संस्कार छलकते हैं ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित में से तत्सम, तद्‍भव, देशी, विदेशी और संकर शब्द शब्दकोश की सहायता से छाँटकर लिखो :

पलंग, पेट, साग, खेत, मशीन, लॉटरी, पानी, घृत, तोप, छतरी, कार्य, लड़का, सायं, घी, गड़बड़, हस्त, आग, स्नान, इंजन,मिनट, शर्करा, प्रक्षालन, यूनिवर्सिटी, पवित्र, खिड़की, झाड़ू, ग्राम, रेडियो, कॉलेज, पाठशाला, पूँजीपति, घड़ीसाज, पगड़ी, रात, अंत, साइकिल, दीपक, गरीब, पार्टीबाजी, अखबार, ऊँट, स्टेशन, मूस, रेलगाड़ी ।

शब्दसंपदा

तत्सम	तद्‍भव	देशज	विदेशी	संकर
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------
--------	--------	--------	--------	--------

● पढ़ो और समझो :

८. पद

यहाँ दोहों एवं पदों के माध्यम से संतो ने नीतियों एवं अपने आराध्य के प्रति समर्पण को दर्शाया गया है ।

विचार मंथन

।। संत न छाड़ें संतई ।।

दादू

घीव दूध मैं रमि रह्या, व्यापक सब ही ठौर ।
दादू बकता बहुत हैं, मथिकाढ़ै ते और ।।
सब हम देख्या सोधि करि, दूजा नाहीं आन ।
सब घट एकै आत्मा, क्या हिंदू-मुसलमान ।।

×× ××

मीरा

पायो जी, मैंने राम-रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत गुरु, किरपा करि अपनायो ।
जनम-जनम की पूँजी पाई जग में सबै खोवायो ।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ।
सत की नाव खेवटिया सत गुरु, भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरखि-हरखि जग गायो ।

×× ××

नानक देव

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
सुख-सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ।।
नहिं निंदा नहिं स्तुति जाके, लोभ, मोह, अभिमान ।
हरष-सोक तें रहै नियारो, नाहि मान-अपमान ।।

×× ××

❑ उचित लय-ताल से पद एवं दोहों का पाठ करें । एकल, गुट में सस्वर पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से इनमें आए भावों को स्पष्ट करें । कुछ दोहों एवं पदों के भावार्थ लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए देशज शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

किसी प्राचीन कवि की जानकारी प्राप्त करो :

- परिचय
- लेखन की भाषा
- विधाएँ
- मुख्य ग्रंथ

वृंद

फेर न ह्वे हैं कपट सों जो कीजै व्यौपार ।
जैसे हाँड़ी काठ की चढ़ै न दूजी बार ।।
भले-बुरें सब एक सों जौं लौ बोलत नाहिं ।
जानि परतु हैं काक पिक-रितु वसंत के माँहि ।।

×× ××

रैदास

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी । जाकी अंग-अंग बास समानी ।।
प्रभु जी तुम वन घन हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ।।
प्रभु जी तुम माली हम बागा । जैसे सोनहि मिलत सुहागा ।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा । ऐसी भगति करै रैदासा ।।

×× ××

रसखान

धूरि भरे अति सोभित स्याम जू वैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरै अँगना पग पैंजनियाँ कटि पीरी कछोटी ।।
वा छवि को रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सौ लै गयो माखन रोटी ।।

×× ××

❑ कक्षा में 'सस्वर दोहे-प्रस्तुति' प्रतियोगिता का आयोजन करें । सूर, कबीर, तुलसी, मीरा के अन्य दोहे-पद पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें । विद्यार्थियों को कुछ नीतिपरक दोहों के संकलन करने तथा हाव-भाव से गाने के लिए प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

हरष = खुशी	**तरि** = तैर
नियारो = अनोखा	**हरखि** = प्रसन्न होकर
सम = बराबर	**जस** = यश
बास = खुशबू	**विलोकत** = देखकर
सोनहि = सोना, स्वर्ण	**वारत** = न्योछावर
अमोलक = अमूल्य	**काम** = कामदेव
सत = सत्य	**काग** = कौआ
भवसागर = संसार सागर	**हरि** = कृष्ण, विष्णु

सुनो तो जरा

किसी एक कहावत के अर्थ का अनुमान लगाते हुए संबंधित आशय सुनाओ ।

बताओ तो सही

तुम्हें पठित पदों में से कौन-सा पद अच्छा लगा और क्यों ? बताओ ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

अगर तुम किसी बाग के बागवान होते तो ......

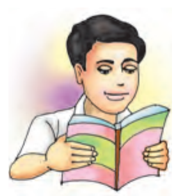

वाचन जगत से

किसी बाल उपन्यास का लघु अंश पढ़ो और कक्षा में बताओ ।

अध्ययन कौशल

संकेत स्थल की संरचना ज्ञात करो और अध्ययनपूरक वीडियो क्लिप्स डाउनलोड करो और पढ़ो ।

मेरी कलम से

अपने विद्यालय में मनाए गए संविधान दिवस का वृत्तांत तैयार करो ।

खोजबीन

हजारी प्रसाद द्‌विवेदी लिखित 'कबीर ग्रंथावली' से दस दोहे ढूँढ़कर अर्थसहित चार्ट पेपर पर लिखो ।

* पाठ के किसी एक पद का सरल अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

संत साहित्य समाज के लिए पथ प्रदर्शक का काम करता है ।

भाषा की ओर

वाक्य में रेखांकित शब्दों के शुद्ध रूप बनाकर वाक्य पुनः लिखो :

वह पाठशाला नहीं आया **क्युंकि** वह बीमार है ।

आज **बहोत** गर्मी है ।

भारिश के होने से जंगल हरा-भरा हो गया ।

उसने पूछा **की** क्या साहब अंदर हैं ?

मैं कल मुंबई **जाउँगा** ।

राकेश **ओर** उसका भाई साथ-साथ खेलते हैं ।

वे अपना काम स्वयं करते **है** ।

मय अपनी पढ़ाई पूरी करके खेलने जाती हूँ ।

किसी की **निदा** नहीं करनी चाहिए ।

उसके पास साइकिल है **इसलिये** वह जल्दी आता है ।

● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

९. ऐसे उतारी आरती

प्रस्तुत संवाद के माध्यम से आधुनिक तकनीकी ज्ञान, उसके उपयोग एवं जीवन के कार्यों की सहजता को दर्शाया गया है ।

बताओ तो सही

अपने भाई/बहन के बारे में बताओ ।

स्वभाव/गुण

तुम्हारे प्रति व्यवहार

दिनचर्या/विशेष प्रसंग

64DCYB

दृश्य १

(रात के आठ बज गए हैं । प्रतीक ने अभी तक खाना नहीं खाया है । उसका मन बहुत खिन्न है । मुँह लटकाए, उदास मन कमरे में बैठा है ।)

मॉं : **(आवाज देते हुए)** प्रतीक कहाँ हो ? आठ बज गए । अभी तक तुमने खाना नहीं खाया । जल्दी आओ खाना खा लो । **(प्रतीक कोई उत्तर नहीं देता । बिस्तर पर लेट जाता है । कुछ देर बाद माँ फिर आवाज देती हैं ।)**

माँ : प्रतीक तुम सुन क्यों नहीं रहे हो ? खाना खा लो । अभी बरतन साफ करने हैं । कल की पूरी तैयारी भी करनी है । **(प्रतीक धीरे-से आता है । बरतन साफ करने लगता है । उसी समय पिता प्रद्‌युम्न घर में प्रवेश करते हैं ।)**

पिता जी : वाह बेटा प्रतीक ! तुम कितने अच्छे हो । माँ के हर काम में सहयोग देते हो । **(पत्नी जाह्नवी को आवाज लगाते हुए)** जाह्नवी ऽ ऽ ! देखो ! हमारा बेटा बरतन साफ कर रहा है । तुम्हारा हाथ बँटा रहा है । हमारा लाड़ला बेटा कितना अच्छा है !

माँ : अरे ! इस बच्चे का मैं क्या करूँ । मेरी एक बात नहीं सुनता ।

पिता जी : तुम ऐसा क्यों कहती हो ? यह बेचारा तो तुम्हारा सहयोग ही कर रहा है ।

माँ : अपना बेटा अच्छा है । घर के हर काम में सहयोग करता है; यह भी सही है पर अभी तक उसने खाना भी नहीं खाया है । मैं कब से उसे आवाज लगा रही हूँ ।

पिता जी : **(प्रतीक के सिर पर हाथ फेरते हुए)** बेटे ! क्या बात है ? अभी तक खाना क्यों नहीं खाया ? **(प्रतीक पिता जी को पकड़कर फफककर रोने लगता है ।)**

माँ : अरे ! क्या हुआ बेटा ? क्यों रो रहे हो ? मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए ?

प्रतीक : **(सुबकते हुए)** कल रक्षाबंधन है । दीदी अभी तक आई ही नहीं ।

माँ : अरे बेटा ! इसमें रोने की क्या बात है ? दीदी ने तो तुम्हें पहले ही राखी भेज दी है ?

पिता जी : बेटा तुम्हारी दीदी हर साल तो आती ही है । इस वर्ष उसके नाटक का मंचन है । वह नाटक की तैयारी कर रही है । उसने ई-रेल से टिकट भी आरक्षित करना चाहा पर उसे मिला नहीं इसीलिए नहीं आ पा रही है । अगले साल रक्षाबंधन पर तो आ ही जाएगी ।

प्रतीक : मुझे दीदी की बहुत याद आ रही है । वे घर पर रहती हैं तो घर में कितनी रौनक रहती है ? उनके बिना

❑ संवाद का मुखर वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्‌दों को स्पष्ट करें । कक्षा में संवाद का गुट में नाट्यीकरण करावाएँ । संचार के विविध माध्यमों एवं उनकी उपयोगिता पर चर्चा करें ।

सुनो तो जरा

यू ट्यूब/सी. डी. पर हिंदी कवि सम्मेलन की कविताएँ सुनो और सुनाओ ।

कैसा रक्षाबंधन ? उनके बिना मेरी आरती कौन उतारेगा ?

पिता जी : अच्छा तो ये बात है ? **(कुछ सोचते हैं...)** तो ठीक है, अब तुम खुश हो जाओ । तुम्हारी दीदी कल तुम्हारी आरती जरूर उतारेगी ।

प्रतीक : **(खुशी से उछलकर)** सच पिता जी ! दीदी मेरी आरती उतारेंगी ! पर कैसे ?

पिता जी : ये तुम मुझ पर छोड़ दो । खाना खाकर सो जाओ । कल दीदी तुम्हारी आरती अवश्य उतारेगी ।

(प्रतीक खाना खाकर सोने चला जाता है । प्रद्युम्न जाह्नवी को कुछ समझाते हैं । वह फोन पर प्रतीक की दीदी से काफी देर तक बात करती हैं ।)

माँ : अजी सुनते हो ! संगीता से बात हो गई है । वह तैयार है । आइए, आप भी खाना खाकर सो जाइए ।

पिता जी : खाना तो साथ ही खाएँगे । चलो कल की तैयारी में तुम्हारी कुछ मदद करता हूँ ।

दृश्य २

(दूसरे दिन सुबह के आठ बजे हैं । प्रतीक साफ-सुथरे कपड़े पहनकर तैयार है । पड़ोस में रहने वाली नूरजहाँ ने उसकी कलाई में राखी बाँध दी है । उसके माथे पर रोली-टीका लगा दिया है ।)

प्रतीक : कहाँ हैं दीदी ? मेरी आरती कब उतारी जाएगी ? **(प्रतीक मचल उठा ।)**

पिता जी : चिंता मत करो । तुम उस कुर्सी पर जाकर बैठ जाओ ।

(प्रतीक वैसा ही करता है । माँ संगणक के कुंजी पटल पर कुछ टाइप करती हैं । सामने स्क्रीन पर आरती की थाल लिए संगीता दिखाई पड़ती है ।)

प्रतीक : अरे वाह ! दीदी आ गई । प्रणाम दीदी । **(प्रतीक खुशी से झूम उठता है ।)**

दीदी : मेरे लाड़ले भैया ! खूब पढ़ो-खूब बढ़ो, बड़े बनो । अब सामने देखो । तुम्हारी आरती तो उतार लूँ ।

(संगीता ने प्रतीक की आरती उतारी । प्रतीक बहुत प्रसन्न था ।)

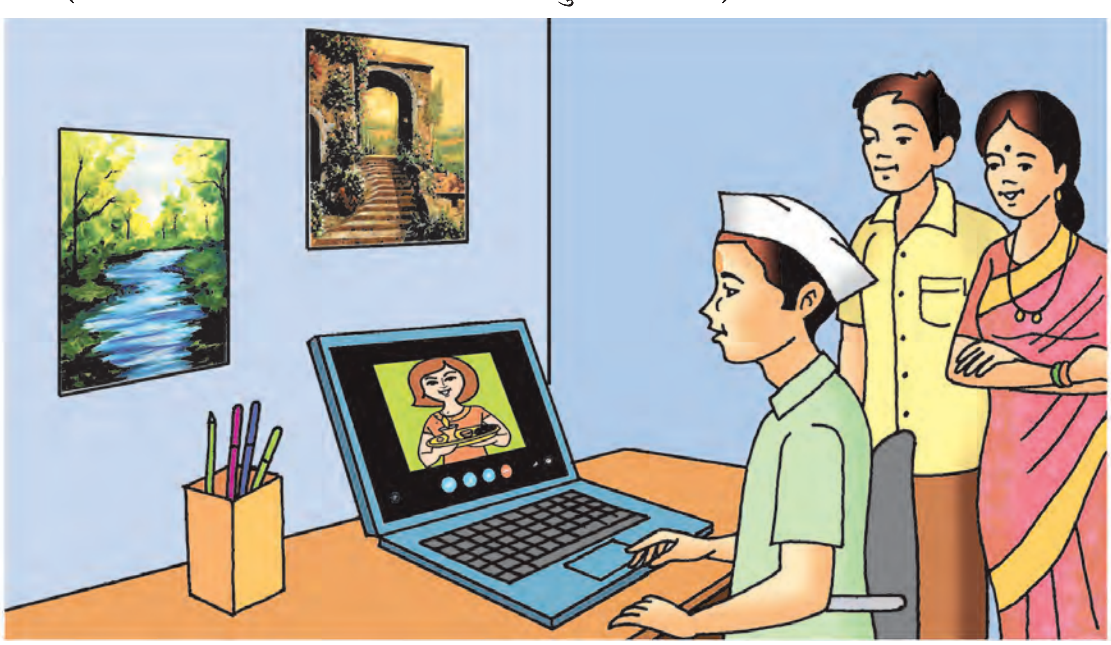

❑ संगणक प्रारंभ करने से लेकर ऑन लाईन बातचीत करने की की संगणकीय प्रक्रिया पर चर्चा करें । उक्त प्रक्रिया का अभ्यास करवाएँ । रेडियो, टी. वी. की क्रिकेट कमेंट्री की नकल कराएँ । 'मेरा प्रिय खिलाड़ी' विषय पर निबंध लेखन हेतु प्रेरित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नया शब्द
खिन्न = दुखी

मुहावरे
मुँह लटकाना = नाराज होना
हाथ बँटाना = सहयोग देना
फफककर रोना = फूट-फूट कर रोना

मेरी कलम से

आकाशकंदील एवं राखी बनाने की विधियाँ क्रमशः लिखो ।

सामग्री — कृति

विचार मंथन

विश्वास की नींव पर ही रिश्ते मजबूत बनते हैं ।

वाचन जगत से

पंडित जवाहरलाल नेहरू जी द्‍वारा लिखित 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक पढ़ो ।

खोजबीन

रक्षा बंधन से संबंधित ऐतिहासिक कहानी यू ट्यूब/अंतरजाल पर खोजकर पढ़ो ।

स्वयं अध्ययन

अपने देश में 'सात बहनें' के नाम से प्रसिद्‍ध राज्यों को किन नामों से जाना जाता है, बताओ और लिखो :

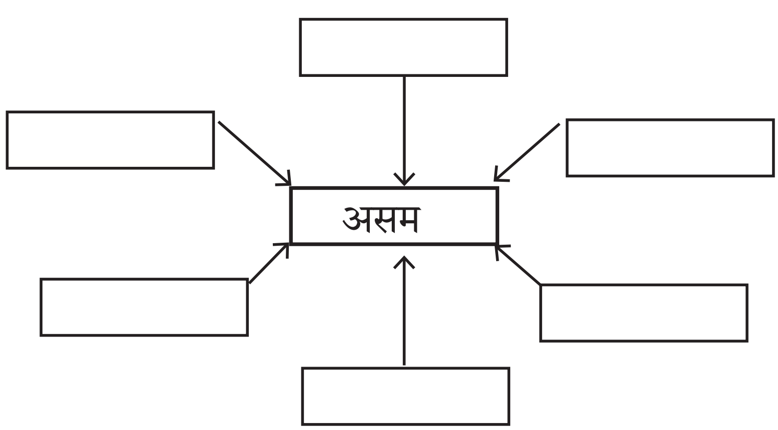

अध्ययन कौशल

किसी एक पाठ के आधार पर टिप्पणी लिखो ।

※ पाठ के आधार पर वाक्य का पहला हिस्सा लिखो :

(क) .... इसीलिए नहीं आ पा रही है । (ख) .... मदद करता हूँ ।

सदैव ध्यान में रखो

विविधता में एकता हमारी सांस्कृतिक विरासत है ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और अर्थ के अनुसार अन्य दो वाक्य बनाकर लिखो ।

१. विधानार्थक	अध्यापक कक्षा में पढ़ाते हैं ।	
	१	....
	२	....
२. निषेधार्थक	स्वाति नक्षत्र की बूँद जब तक सीप में नहीं गिरती, मोती नहीं बनती ।	
	१	....
	२	....
३. प्रश्नार्थक	क्या तुम दिए काम को कर सकोगे ?	
	१	....
	२	....
४. आज्ञार्थक	तुम्हें जो बताया गया है, उसे पूरा करो ।	
	१	....
	२	....
५. संकेतार्थक	बारिश जो आज आए, तो बुआई अच्छी हो ।	
	१	....
	२	....
६. विस्मयादिबोधक	तुमने जो खिलौना बनाया है, वह तो बहुत अच्छा है !	
	१	....
	२	....
७. इच्छा बोधक	वह जैसा भी रहे, सुख से रहे ।	
	१	....
	२	....
८. संदेश सूचक	बारात पहुँच चुकी होगी और शादी हो रही होगी ।	
	१	....
	२	....

● सुनो, समझो और सुनाओ :

१०. दिव्यांग

– संजय भारद्‌वाज

जन्म : ३० नवंबर १९६५ पुणे (महा.) **रचनाएँ :** योंही, मैं नहीं लिखता कविता, चेहरे **(कविता संग्रह)**, एक भिखारिन की मौत **(नाटक)**
परिचय : हिंदी प्रचार-प्रसार में विशेष अभिरुचि, रंगमंच से जुड़ाव, प्रखर लेखक एवं वक्ता के रूप में जाने जाते हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने दृष्टि दिव्यांगों की अशक्ति-शक्ति को निरूपित करते हुए समाज से समदृष्टि अपनाने की अपेक्षा की है ।

आँखें, जिन्होंने देखे नहीं
कभी उजाले
कैसे बुनती होंगी आकृतियाँ
भवन, झोंपड़ी
सड़क, फुटपाथ,
बादल, बारिश,
चूल्हा, आग,
पेड़, घास
धरती या आकाश की,
'रंग' शब्द से
कौन-से चित्र बनते होंगे
मन के दृष्टिपटल पर,
भूकंप से कैसा विनाश चितरता होगा,
बाढ़ की परिभाषा क्या होगी,
इंजेक्शन लगने से पहले भय से आँखें मूँदने का
विकल्प क्या होगा,
आवाज को घटना में बदलने का
पैमाना क्या होगा,
कुछ भी हो, इतना निश्चित है
ये आँखें बुन लेती हैं अद्‌वैत भाव,
समरस हो जाती हैं प्रकृति के साथ,
काश हो पातीं वे आँखें भी
अद्‌वैत और समरस
जो देखती तो हैं उजाले
पर बुनती रहती हैं अँधेरे !

64HBZV

❑ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ कविता का पाठ करें । उचित तान-अनुतान के साथ कविता का पाठ करवाएँ । कविता में आए भाव एवं विचारों को प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से स्पष्ट करें । इस प्रकार की कोई कविता लिखवाएँ ।

● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

११. रोजी और निक्की

–महादेवी वर्मा

जन्म : २६ मार्च १९०७ फरुक्खाबाद (उ.प्र) **मृत्यु :** ११ सितंबर १९८७ **रचनाएँ :** यामा, मेरा परिवार, पथ के साथी, अतीत के चलचित्र
परिचय : महादेवी वर्मा जी कवयित्री, स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद के रूप से प्रसिद्ध हैं । आपके रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध भी प्रसिद्ध हैं । इन रेखाचित्रों के माध्यम से लेखिका ने अपने बचपन की मधुर स्मृतियों एवं प्राणियों के स्वभाव को चित्रित किया है ।

खोजबीन

विभिन्न पशु-पक्षियों के आवास पर चर्चा करते हुए उनके निर्माण की विधि अंतरजाल की सहायता से प्राप्त करो ।

खोजबीन के लिए आवश्यक सोपान :

विद्‌यार्थियों ने कौन-कौन-से आवास देखे हैं, बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।
* आवास की आवश्यकता, महत्त्व तथा उनके प्रकार पर चर्चा करें ।
* आवास संबंधी जानकारी हम कहाँ-कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं, पूछें ।
* अंतरजाल से उपयोगी जानकारी समझकर उसको डाउनलोड करने के लिए कहें ।
* सूचनाओं/जानकारियों की सुरक्षा पर मार्गदर्शन करते हुए प्रयोग करवाएँ ।

64H52I

मेरे अतीत बचपन के कोहरे में जो रेखाएँ अपने संपूर्ण महत्त्व के विविध रंगों में उदय होने लगती हैं, उनके आधारों में तीन ऐसे भी जीव हैं, जो मानव समष्टि के सदस्य न होने पर भी मेरी स्मृति में छुपे-से हैं । वे हैं निक्की नेवला, रोजी कुतिया और रानी घोड़ी ।

रोजी की जैसे ही आँखें खुलीं, वैसे ही वह मेरे पाँचवें जन्मदिन पर पिता जी के किसी राजकुमार विद्‌यार्थी द्‌वारा मुझे उपहार रूप में भेंट कर दी गई । स्वाभाविक ही था कि हम दोनों साथ ही बढ़ते रहे । रोजी मेरे साथ दूध पीती, मेरे खटोले पर सोती, मेरे लकड़ी के घोड़े पर चढ़कर घूमती और मेरे खेल-कूद में साथ देती । रोजी सफेद थी किंतु उसके छोटे सुडौल कानों के कोने, पूँछ का सिरा, माथे का मध्य भाग और पंजों का अग्रांश कत्थई रंग का होने के कारण कत्थई किनारीवाली सफेद साड़ी की सबल रंगीनी का आभास मिलता था । वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी । हम सबने उसे ऐसा साथी मान लिया था, जिसके बिना न कहीं जा सकते थे और न कुछ खा सकते थे ।

सबसे छोटा भाई तो हमारी व्यस्तता में साथ देने के लिए बहुत छोटा था परंतु मैं, मुझसे छोटी बहिन और उससे छोटा भाई दोपहर भर बया चिड़ियों के घोंसले

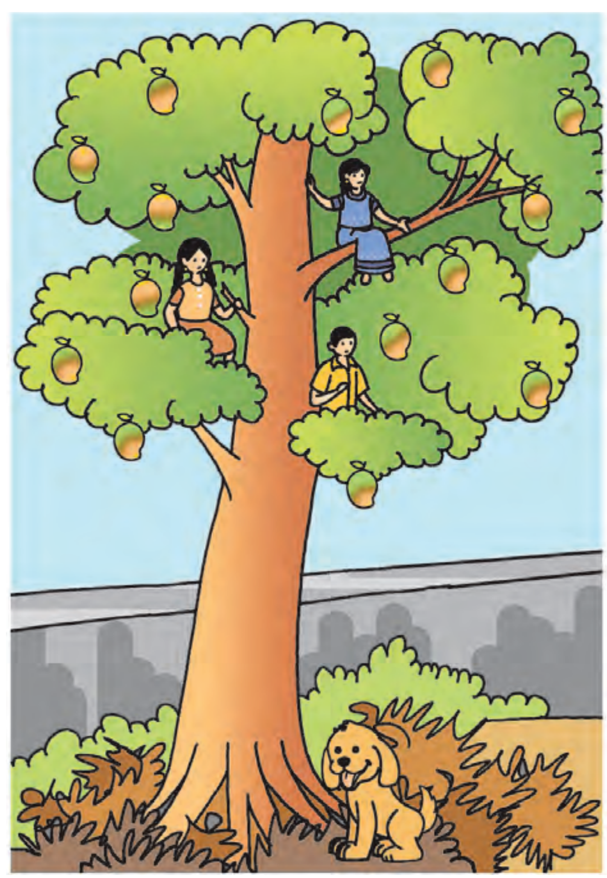

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ रेखाचित्र का मुखर वाचन करवाएँ । चर्चा एवं प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के प्रमुख मुद्‌दों को स्पष्ट करें । विद्‌यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए पाठ की किसी घटना को कहानी में रूपांतरित करके सुनाने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

पक्षी प्रेमी सलीम अली की पुस्तक का कुछ अंश पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो ।

देखते, बबूल की सूखी और बीजों के कारण बजने वाली छीमियाँ बीनते घूमते रहते ।

घूमते-घूमते थक जाने पर हमारा प्रिय विश्रामालय एक आम के वृक्षों से घिरा सूखा पोखर था, जिसका ऊँचा कगार पेड़ों की छाया में आठ-नौ फुट और खुली धूप में चार-पाँच फुट के लगभग गहरा था । कई आम के पेड़ों की शाखाएँ लंबी-नीची और सूखे पोखर पर झूलती थीं । सूखी पत्तियों ने झड़-झड़कर सूखी गहराई को कई फुट भर भी डाला था । हम डाल पर बैठकर झूलते रहते । घूमने के क्रम में यदि हमें कोई मकोई का पौधा या करौंदे की झाड़ी फूली-फली मिल जाती तो नंदनवन की प्रतीति होने लगती ।

हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती । जब हम डाल पर बैठकर झूलते रहते, वह कगार के सिरे पर हमारे पैरों के नीचे बैठी कूदने के आदेश की आतुर प्रतीक्षा करती रहती । जब हम पोखर की परिक्रमा करते, वह हमारे आगे-आगे मानो राह दिखाने के लिए दौड़ती और जब हम मकोई और करौंदे एकत्र करने लगते, तब वह किसी झाड़ी की छाया में बड़े विरक्त भाव से बैठी रहती । गर्मी के दिनों में आम के पेड़ों से छोटी-बड़ी अंबियाँ हवा के झोंके से नीचे गिरती रहतीं और पत्तियों के सरसराहट भरे समुद्र में से उसे वह खोज लाती । कच्ची कैरी की चेपी लग जाने से बेचारी का गुलाबी छोटा मुँह धबीला हो जाता परंतु वह इस खोज कार्य से विरत न होती ।

दोपहर को पिता जी कालेज में रहते और माँ घर के कार्य में या छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त रहतीं । रामा बाजार चला जाता और कल्लू की माँ या तो सोती या माँज-माँजकर बर्तन चमकाने में दत्तचित्त रहती । वे सब समझते कि हम लोग या तो अपने कमरे में सो रहे हैं या पढ़-लिख रहे हैं । हम कुछ ऊँची खिड़की की राह

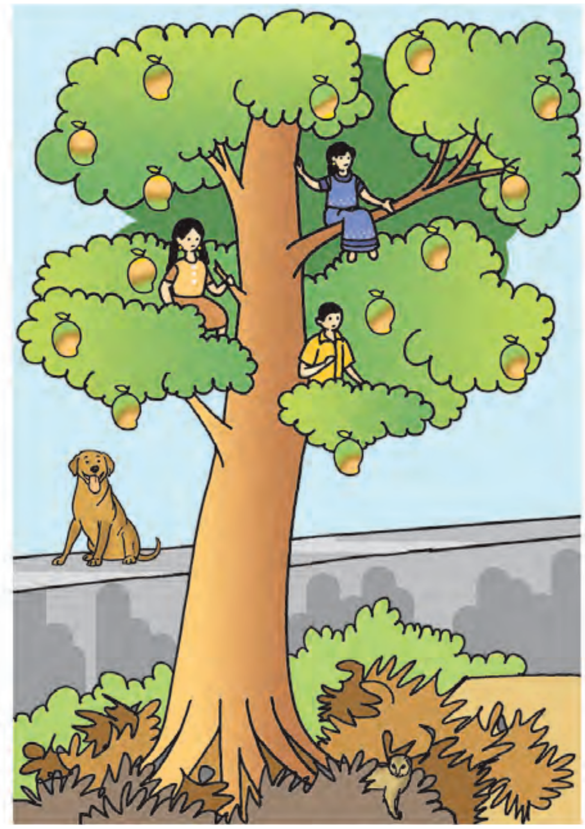

से पहले रोजी को उतार देते और फिर एक-एक करके तीनों बाहर बगीचे में उतरकर करौंदे की झाड़ियों में छिपते-छिपते अपने उसी सूने मुक्तिलोक में पहुँच जाते । तीनों में से किसी को भी कमरे में छोड़ना शंका से रहित नहीं था क्योंकि वह बिस्कुट, पेड़ा, बर्फी आदि किसी भी उत्कोच के लोभ में मुखबिर बन सकता था । परिणामतः तीनों का जाना अनिवार्य था । रोजी भी हमारे निर्बंध संप्रदाय में दीक्षित हो चुकी थी; अतः वह भी साथ आती थी । हमारे अभियान के रहस्य को वह इतना अधिक समझ गई थी कि दोपहर होते ही खिड़की से कूदने को आकुल होने लगती और खिड़की से उतार दिए जाने पर नीचे बैठकर मनोयोगपूर्वक हमारा उतरना देखती रहती । कभी खिड़की से कूदते समय हममें से कोई उसी के ऊपर गिर पड़ता था पर वह चीं करना भी नियम विरुद्ध मानती थी ।

- विद्यार्थियों से रेखाचित्र के आधार पर रोजी के बारे में आठ से दस वाक्य लिखवाएँ । अपनी पसंद के किसी प्राणी के बारे में बारह से पंद्रह पंक्तियों का निबंध लिखने के लिए प्रेरित करें । पाठ में आए कारक चिह्नों का प्रकारानुसार वर्गीकरण कराएँ ।

अध्ययन कौशल

किसी लेखक/कवि का परिचय पाने के लिए संकेत स्थल की जानकारी प्राप्त करो ।

ऐसे ही एक स्वच्छंद विचरण के उपरांत जब हम आम की डाल पर झूल-झूलकर अपने संग्रहालय का निरीक्षण कर रहे थे तब एक आम गिरने का शब्द हुआ और रोजी नीचे कूदी । कुछ देर तक वह पत्तियों में न जाने क्या खोजती रही फिर हमने आश्चर्य से देखा कि वह मुँह में किसी जीव को दबाए हुए ऊपर आ रही है । उस कुलबुलाते जीव को भी सुरक्षित हम तक ले आई । आकार में वह गिलहरी से बड़ा न था। भूरा चमकीला रंग, काली कत्थई आँखें, नर्म-नर्म गुलाबी नन्हा मुँह, रोओं में छिपे हुए नन्ही सीपियों से कान, सब कुछ देखकर हमें वह जीवित नन्हा खिलौना-सा जान पड़ा । रोजी ने उसे हौले से पकड़ा था परंतु बचने के संघर्ष में उसको कुछ खरोंच लग गई थी । चोट से अधिक भय से वह निश्चेष्ट था । उसे पाकर हम सब इतने प्रसन्न हुए कि उसे लेकर हम तुरंत घर की ओर भागे । वह एक नकुल शिशु था । उसका नाम हमने निक्की रखा । अब तो उस लघु प्राणी का हमारे अतिरिक्त कोई आश्रय ही नहीं रहा ।

उस समय की उत्तेजना में हम अपने अज्ञात भ्रमण की बात भी भूल गए परंतु माँ ने यह नहीं पूछा कि वह छोटा जीव हमें कहाँ और कैसे मिला । उन्होंने जीवजंतुओं को न सताने के संबध में लंबा उपदेश देने के उपरांत उसे उसके नकुल माता-पिता के पास बिल में रख आने का आदेश दिया । अतः नकुल शिशु के बिल और बिल निवासी माता-पिता की खोज में हम अनिच्छापूर्वक गए और खोज में असफल होकर निराश से अधिक प्रसन्न लौटे ।

प्रसन्नतापूर्वक हमने अपने खिलौनों के छोटे बक्स को खाली कर उसमें रूई और रेशमी रूमाल बिछाया । फिर बहुत अनुनय-विनय और सब आदेश मानने का वचन देकर रामा को, उसे रूई की बत्ती से दूध पिलाने के लिए राजी किया । इस प्रकार हमारे लघु परिवार में एक लघुतम सदस्य सम्मिलित हुआ । रामा की सतर्क देख-रेख में वह कुछ दिनों में स्वस्थ और पुष्ट होकर हमारा समझदार साथी हो गया । पालने की दृष्टि से नेवला बहुत स्नेही और अनुशासित जीव है । वह अपने पालने वाले के साथ चौबीसों घंटे रह सकता है । जेब में, कंधे पर, आस्तीन में, बालों में, जहाँ कहीं भी उसे बैठा दिया जाए, वह शांत स्थिर भाव से बैठकर अपनी चंचल पर सतर्क आँखों से चारों ओर की स्थिति देखता, परखता रहता है । निक्की मेरे पास ही रहता था ।

निक्की या तो मेरे दुपट्टे की चुन्नट में छिपा हुआ रहता या गर्दन के पीछे चोटी में छिपकर बैठता और कान के पास नन्हा मुँह निकालकर चारों ओर की गतिविधि देखता । रोजी का कार्य तो हमारे साथ दौड़ना ही था परंतु निक्की इच्छा होने पर ही अपने सुरक्षित स्थान से कूदकर दौड़ता । एक दिन जैसे ही हम खिड़की से नीचे उतरे, वैसे ही निक्की की सतर्क आँखों ने गुलाब की क्यारी के पास घास में एक लंबे काले साँप को देख लिया और वह कूदकर उसके पास पहुँच गया । हमने आश्चर्य से देखा कि निक्की पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर साँप को मानो चुनौती दे रहा है और साँप भी हवा में आधा उठकर फुफकार रहा है ।

उस दिन प्रथम बार हमें ज्ञात हुआ कि हमारा बालिश्त भर का निक्की कई फुट लंबे साँप से लड़ सकता है । उन दोनों की लड़ाई मानो पेड़ की हिलती डाल से बिजली का खेल थी । साँप जैसे विषधर को खंड-खंड करने की शक्ति रखने पर भी नेवला नितांत निर्विष है । यदि साँप चाहे तो उसे अपनी कुंडली में लपेटकर चूर-चूर कर डाले । फण के फूत्कार से मूर्च्छित कर दे परंतु वह नेवले के फूल से हल्केपन और बिजली जैसी गति से परास्त हो जाता है ।

- इस पाठ में आए वर्ग के आधार पर वर्णमाला के शब्द ढूँढ़कर लिखवाएँ । इन शब्दों में कौन-कौन-से पंचमाक्षर आए हैं, इन्हें भी लिखवाएँ । इनमें से पाँच शब्दों के वाक्य प्रयोग करवाएँ । संयुक्ताक्षरयुक्त शब्द ढूँढ़कर सूची बनाने के लिए कहें ।

मैंने समझा

विचार मंथन

।। स्नेह ही स्नेह का पुरस्कार है ।।

शब्द वाटिका

नए शब्द

श्वान = कुत्ता
नकुल = नेवला
दुर्लभ = कठिनाई से प्राप्त
छीमियाँ = फलियाँ
विश्रामालय = आराम घर
पोखर = तालाब
चेपी = आम के ऊपर का चिपचिपा पदार्थ
मकोई = गिलोय
उत्कोच = लालच, घूस
आस्तीन = जेब
बालिश्त = बित्ता
निर्विष = विषहीन
फूत्कार = फुंकार

जरा सोचो ...... चर्चा करो

गणित विषय से शून्य गायब हो जाए तो ......

मेरी कलम से

अपने बचपन की कोई स्मरणीय घटना लिखो ।

बताओ तो सही

प्राणियों के गुण/स्वभाव की विशेषता समझो और कौन-से गुण तुम्हारे जीवन में उपयोगी हैं, बताओ :

कुत्ता, गधा, चीता, चींटी, हंस, गिद्ध, उल्लू, ऊँट, कोयल

सुनो तो जरा

अपने परिवेश में मनाए गए किसी सामाजिक कार्यक्रम की रिपोर्ताज बनाकर सुनाओ :

मनाने का उद्देश्य → तैयारियाँ → अतिथि → अतिथियों के कथन
आभार
संचालन

स्वयं अध्ययन

पशु चिकित्सक का साक्षात्कार लेने हेतु प्रश्न निर्मिति करो :

व्यक्तिगत जानकारी
व्यवसाय
संस्मरणीय घटना
प्रिय प्राणी

✻ **वाक्यों के क्रम का आकलन करके उनके उचित क्रम के वर्णांक रिक्त स्थान में लिखो :**

(क) निक्की मेरे पास ही रहता था ।
(ख) वह छोटी पर तेज टैरियर जाति की कुतिया थी ।
(ग) वह एक नकुल शिशु था ।
(घ) हमारे इस भ्रमण में रोजी निरंतर साथ देती थी ।

(१) .... (२) .... (३) .... (४) ....

सदैव ध्यान में रखो

पशु-पक्षी भी मनुष्य की भाँति भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं ।

भाषा की ओर

सूचनानुसार मुहावरे एवं कहावतें लिखो :

✻ निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त मुहावरों के स्थान पर इनके समानार्थक नए मुहावरे कोष्ठक में से प्रयुक्त करो -

(कान पर जूँ न रेंगना, आग बबूला होना, नौ दो ग्यारह होना)

(१) पुलिस को देखते ही चोर **रफूचक्कर हो गया ।**
(२) अध्यापक ने उसे बहुत समझाया, परंतु वह **आँखें बंद करके ही बैठी रही ।**
(३) कक्षा में शोर होता देख प्रधानाचार्य महोदय **लाल-पीले हो गए ।**

✻ निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों पर उचित कहावतें कोष्ठक में से प्रयुक्त करो -

(अपना हाथ जगन्नाथ, नेकी कर दरिया में डाल, दूर के ढोल सुहावने)

(१) मैं समझता था कि शहर की जिंदगी गाँव से कहीं अच्छी होगी पर यहाँ तो कुछ भी नहीं है- सच है कि, ...
(२) सुनेत्रा ने अपनी कड़ी मेहनत से साबित कर दिया कि ....
(३) हमें उपकार के बदले कुछ अपेक्षा नहीं होनी चाहिए, बस ....

✻ **दिए गए अनुसार निम्न शब्द पहेली से मुहावरे और कहावतें ढूँढ़ो और उनके समानार्थक मुहावरे/कहावतें अपने मन से लिखो :-**

(एक शब्द का आवश्यकतानुसार एक से अधिक बार उपयोग कर सकते हैं ।)

छोटा	के	टस	जली	छठी	आम	चल	फूलकर	सहारा	मजा
ऊँट	पहाड़	न	भैंस	कुप्पा	से	जमाना	जाए	टूटना	को
होना	रंग	अधजल	का	सुनाना	आना	में	करना	की	कटी
गोद	अक्षर	हाथ	याद	चिराग	पसीना	मस	तिल	बच्चा	एक
दूध	चोर	खून	आना	क्या ?	का	गगरी	जीरा	दाँत	बेलना
गाँव	रहेगा	ताड़	दाढ़ी	बनाना	खाना	बाँस	पीसना	कंगन	बात
आरसी	रफूचक्कर	गुठलियों	छलकत	बड़ी	तिनका	ढिंढोरा	चखाना	बाँसुरी	दाम
बराबर	काला	मुँह	तले	डूबते	की	अँधेरा	तिनके	पापड़	बजेगी

● सुनो, समझो और पढ़ो :

१२. स्कूल चलो

– देवेंद्र कुमार

जन्म : १९ अगस्त १९४० दिल्ली **रचनाएँ :** एक छोटी बाँसुरी, खिलौने, पेड़ नहीं कट रहे हैं आदि **परिचय :** २७ वर्ष नंदन पत्रिका से जुड़े रहे । हिंदी अकादमी तथा बालसाहित्यकार के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित बाल उपन्यासकार, अनुवादक एवं कहानीकार रहे हैं ।
प्रस्तुत कहानी में लेखक ने शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए बताया है कि शिक्षा किसी भी उम्र में प्राप्त की जा सकती है ।

अध्ययन कौशल

संगणकीय शिष्टाचार ज्ञात करो और कक्षा में चर्चा करो ।

656146

आखिरी बच्चा भी रिक्शा से उतरकर चला गया । भरतू की ड्युटी खत्म हो गई थी लेकिन अभी पूरी तरह नहीं । साइकिल रिक्शा की सीट से उतरकर उसने पीछे झाँका तो अंदर एक किताब पड़ी दिखाई दी । अंदर का मतलब रिक्शा के पीछे एक कैबिन जुड़ा है, उसमें छोटे बच्चे बैठते हैं । भरतू ने बड़बड़ाते हुए किताब उठा ली और उलट-पलटकर देखने लगा । हर रोज ऐसा ही होता है । कोई-न-कोई बच्चा कुछ न कुछ भूल जाता है । रूमाल, पानी की बोतल या फिर किसी की कैप रह जाती है ।

वह जब भी किसी किताब को हाथ में उठाता है तो मन में एक चिढ़ होती है अपने लिए । आखिर वह अनपढ़ क्यों रह गया । पढ़-लिख जाता तो आज रिक्शा खींचने की जगह कोई ढंग का काम करता लेकिन ... अब इस सब को याद करने से क्या फायदा ?

रिक्शा को ढाबे के बाहर खड़ा करके भरतू खाना खाने बैठ गया । किताब अब भी उसके हाथ में थी । तभी आवाज सुनाई दी, ''क्यों भरतू, स्कूल में दाखिला ले लिया क्या ?''

भरतू ने चौंककर देखा, उसका साथी रमन हँसता हुआ किताब की ओर इशारा कर रहा था । भरतू लजा गया । बोला, ''अरे, जब पढ़ने की उम्र थी तब नहीं पढ़ सका तो अब क्या पढ़ूँगा ।'' फिर उसने बताया कि कोई बच्चा उसकी रिक्शागाड़ी में किताब भूल गया है ।

भरतू, रमन तथा और चार लोग एक किराए के कमरे में रहते हैं । सभी अपने-अपने गाँव से रोजगार की तलाश में शहर आए हैं । सभी के परिवार गाँव में हैं । वे उनको पैसे भेजते रहते हैं । रमन साक्षर है । भीम ऐप से वह सबके पैसे भेज दिया करता है । बीच-बीच में कुछ दिन के लिए घरवालों से मिलने गाँव जाते हैं । भरतू स्कूल के बच्चों को लाता-ले जाता है । उसके साथी सवारी ढोते हैं । वे लोग भरतू की रिक्शा को 'चिड़ियाखाना' कहते हैं पर भरतू ने उसका नाम रखा है -'गुलदस्ता' । जब बच्चों को लेकर रिक्शा चलाता है तो उसे सचमुच बहुत अच्छा लगता है । रह-रहकर अपने गाँव-घर की याद आती है । कभी-कभी लगता है, जैसे उसका बेटा नन्हा भी दूसरे बच्चों के साथ बैठा स्कूल जा रहा है ।

भरतू सब बच्चों के चेहरे पहचानता है पर उसे याद नहीं आ रहा था कि किताब किस बच्चे की थी । वैसे किताब पर नाम लिखा था पर भरतू को

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । विद्‌यार्थियों से मुखर एवं मौन वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी के भाव एवं विचार स्पष्ट करें । उन्हें अपने विद्‌यालय की विशेषताएँ बताने के लिए कहें ।

वाचन जगत से

बाल पत्रिका से कोई कहानी पढ़ो और परिपाठ में सुनाओ ।

पढ़ना कहाँ आता है । उस रात भरतू ने सपने में देखा, जैसे वह मैदान में बैठा है और उसके सामने एक लंबी–चौड़ी किताब खुली पड़ी है । तभी एक आवाज कानों में आती है । लाओ मेरी किताब फिर भरतू की नींद टूट गई । जागकर वह बहुत देर तक सपने के बारे में सोचता रहा ।

सुबह अपनी रिक्शा बाहर निकाली और बारी–बारी से बच्चों को लेने लगा । तभी रमेश नामक बच्चे ने कहा, ''मेरी किताब...?'' वह कुछ परेशान दिख रहा था । रमेश की माँ सरिता ने भी कहा, ''भरतू, जरा ध्यान से देखना, रमेश की किताब नहीं मिल रही है ।''

भरतू ने किताब उनकी ओर बढ़ा दी । तभी रमेश ने कहा, ''तुमने मेरी किताब फाड़ी तो नहीं । किताब फाड़ना बुरी बात है ।'' सुनकर भरतू हँस पड़ा । उसने कहा, ''नहीं भैया, मैंने तुम्हारी किताब खूब ध्यान से रखी थी । एकदम ठीक है, देख लो ।''

रमेश की माँ सरिता देवी भी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू जो बात मैं इसे समझाती हूँ, वही इसने तुमसे कह दी । बुरा न मानना ।''

सारा दिन भरतू उसी किताब के बारे में सोचता रहा । दोपहर में रमेश को उसके घर के बाहर छोड़ते हुए भरतू ने कहा, ''क्यों भैया, जो तुम पढ़ते हो, मुझे भी पढ़ा दो ।'' ''मैं क्या टीचर हूँ जो तुम्हें पढ़ाऊँ ?'' रमेश बोला । ''मेरे टीचर बन जाओ न रमेश भैया । जो फीस माँगोगे दूँगा,'' भरतू ने हँसकर कहा । ''ठीक है, कल पढ़ाऊँगा ।'' ''क्या पढ़ाओगे ?''

''ए, बी .... पढ़ाऊँगा ।'' कहकर रमेश माँ के साथ घर में चला गया । भरतू मुसकराया तो सरिता देवी भी हँस पड़ीं ।

अगले दिन रमेश ने भरतू से कहा, ''भरतू भैया, आज मैं तुम्हारे लिए ए और बी लाया हूँ ।'' और उसने बस्ते से निकालकर एक सेब और गेंद भरतू के हाथ में थमा दी । भरतू कुछ पूछता, इससे पहले रमेश ने कहा, ''देखो ए से एप्पल, बी से बॉल ।''

भरतू ने कहा, ''रमेश भैया, क्या रोज ऐसे ही पढ़ाओगे ?''

रमेश ने कहा, ''हाँ '' और माँ के साथ घर में दौड़ गया । भरतू सेब और गेंद को हाथ में लिए खड़ा रह गया । उसने सोचा, कल दोनों चीजें वापस कर देगा । उस रात देर तक ए और बी से खेलते रहे भरतू और उसके साथी । उनके बीच देर तक गेंद और सेब इधर से उधर उछलते रहे । कमरे में हँसी गूँजती रही । शायद इससे पहले ये लोग इतना कभी नहीं हँसे थे । भरतू के साथी पूछते रहे, ''भरतू कल अपने मास्टर जी से क्या पढ़ेगा ?''

अगली सुबह रमेश के घर के बाहर पहुँचकर भरतू ने रिक्शा की घंटी बजाई । कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला फिर रमेश की माँ सरिता देवी बाहर निकलकर आईं । उन्होंने कहा, ''रमेश आज स्कूल नहीं जाएगा । उसे रात से बुखार आ रहा है ।''

सुनकर भरतू को एक झटका-सा लगा । वह बाकी बच्चों को स्कूल पहुँचाने चला गया । उस दोपहर वह गुमसुम रहा । ठीक से खाना भी नहीं खाया भरतू ने । रमन बार–बार पूछता रहा, ''भरतू, क्या बात है ?'' पर भरतू ने कुछ नहीं कहा ।

- कहानी में आए उनकी पसंद के सबसे सुंदर प्रसंग बताने के लिए कहें । पसंद के कारण पूछें । उनके शब्दों में कहानी कहने के लिए प्रेरित करें । कहानी में आए भूत, वर्तमान और भविष्यकाल के एक–एक वाक्य खोजकर लिखने के लिए कहें ।

स्वयं अध्ययन

किसी शालेय समारोह के कार्यक्रम में अध्यक्ष जी के परिचय देने हेतु जानकारी तैयार करे ।

नाम – जन्मस्थान – शिक्षा – कार्यक्षेत्र – विशेषताएँ – प्राप्त पुरस्कार

इसके बाद वाली सुबह को रमेश के दरवाजे पर पहुँचकर उसने घंटी बजाई तो रमेश की माँ बाहर आईं । ''भरतू, रमेश की तबीयत आज भी ठीक नहीं है । शायद एक-दो दिन और वह स्कूल न जा सकेगा ।''

भरतू के हाथ में ए और बी यानी सेब और गेंद थे । उसने सरिता देवी से कहा, ''ये दोनों मेरे मास्टर जी को दे देना, मैडम जी । अब तो मुझे पढ़ाएँगे नहीं ।''

सरिता देवी आश्चर्य से मुरझाए सेब और गेंद को देखती रहीं । फिर भरतू ने उन्हें सब बताया तो उनके चेहरे पर फीकी मुसकान आ गई । लेकिन भरतू हँस न सका । उसने स्कूल वाली रिक्शा आगे बढ़ा दी ।

उस दोपहर भरतू ढाबे पर नहीं आया । वह रमेश के घर के बाहर जा खड़ा हुआ । आसपास कोई न था । वह कुछ देर तक धूप में खड़ा रहा, फिर झिझकते हुए दरवाजे पर लगी घंटी बजा दी । कुछ पल ऐसे ही बीत गए । उसे दोबारा घंटी बजाना ठीक न लगा । न जाने रमेश की माँ क्या सोचने लगे । उसका मन रमेश से मिलना चाहता था पर संकोच भी था । वह वापस मुड़ने लगा, तभी दरवाजा जरा-सा खोलकर सरिता देवी ने बाहर झाँका । भरतू को देखकर वह चौंक पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम इस समय कैसे ? क्या चाहिए ?''

भरतू सकपका गया । हकलाता-सा बोला, ''जी, मैंने सोचा अपने मास्टर जी को देख लूँ, उनकी तबीयत कैसी है ?''

मास्टर जी शब्द पर सरिता देवी हँस पड़ीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, तुम्हारे मास्टर जी की तबीयत अब ठीक है । आओ, अंदर आ जाओ, धूप में क्यों खड़े हो ?'' यह कहकर उन्होंने दरवाजा पूरा खोल दिया । भरतू को लग रहा था, इस समय आना शायद ठीक नहीं रहा पर अब वापस नहीं लौटा जा सकता था । वह झिझकते कदमों से अंदर घुस गया । ''आओ भरतू, यहाँ आओ,'' कहते हुए सरिता देवी ने एक कमरे में आने का इशारा किया ।

भरतू ने कहा, ''मैडम जी, अब आपने बता दिया न कि हमारे मास्टर जी ठीक हैं । बस अब जाता हूँ । आप तकलीफ न करें ।''

''नहीं, नहीं, तकलीफ कैसी ! तुम अपने मास्टर जी से मिलने आए हो तो क्या बिना मिले चले जाओगे ? आ जाओ । इतना घबरा क्यों रहे हो ?''

''कैसे हो मास्टर जी ?'' कहते-कहते भरतू हँस पड़ा, उसने देखा, सेब और गेंद पलंग पर रमेश के पास रखे थे । ''मैं ठीक हूँ ।'' रमेश ने कहा, फिर बोला, ''तुमने ए, बी माँ को लौटा दिए । ऐसे कैसे पढ़ोगे ! लो, ले जाओ और ध्यान से याद करो । तभी तो आगे पढ़ाऊँगा तुम्हें ।''

''भरतू, खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ ।'' सरिता देवी ने कहा । उनके हाथ में पानी का गिलास और प्लेट में कुछ नाश्ता था ।

भरतू जमीन पर ही बैठ गया । सरिता ने कहा, ''वहाँ जमीन पर नहीं, कुरसी पर आराम से बैठो ।''

''जी, मैं यहीं ठीक हूँ ।'' भरतू ने कहा और उठ खड़ा हुआ । उसने कुछ खाया नहीं । ''मास्टर जी जल्दी ठीक हो जाओ, फिर आगे पढ़ाना ।'' कहकर सेब और गेंद रमेश के हाथ से ले ली और बाहर निकल आया ।

❑ कहानी के अनुसार भरतू के स्वभाव का वर्णन कहलवाएँ । कहानी में आए विशेषण शब्दों की पहचान करवाएँ । पाठ में आए किन्हीं दस शब्दों के समानार्थी, विरूद्धार्थी शब्द लिखवाएँ तथा उनका अलग-अलग वाक्यों में प्रयोग करवाएँ ।

बताओ तो सही

अंत में रमेश के घर से 'वापस आने पर भरतू के मन की भावनाएँ', बताओ ।

रमेश की तबीयत ठीक देखकर उसका मन खुश हो गया था । एक बार मन में आया था कि हौले से रमेश का सिर सहला दे पर हिम्मत न हुई । बाहर निकलते हुए सरिता देवी की आवाज सुनाई दी, ''भरतू, कल रमेश को लेने आ जाना, अब इसकी तबीयत ठीक है ।''

अगली सुबह रमेश माँ के साथ घर से बाहर खड़ा मिला । भरतू से नजरें मिलते ही रमेश और उसकी माँ मुसकरा दिए । भरतू भी हँस दिया ।

दोपहर को रमेश को घर छोड़ने आया तो सरिता देवी ने कहा, ''भरतू, शाम को पाँच बजे आना । आ सकोगे ? बहुत काम तो नहीं रहता ?''

''जी आ जाऊँगा,'' भरतू ने कहा और ढाबे पर जा बैठा । मन प्रसन्न था । रमन ने पुकारा, ''क्यों भरतू, पढ़ाई कैसी चल रही है ?''

''बहुत बढ़िया ।'' भरतू ने कहा और हँस दिया ।

भरतू पाँच बजे रमेश के घर के बाहर पहुँच गया । कुछ देर बिना घंटी बजाए सोच में डूबा खड़ा रहा । मन में कुछ डर था । न जाने रमेश की माँ ने क्यों बुलाया है ?

कुछ देर बाद उसने घंटी बजा ही दी । दरवाजा रमेश ने खोला उसे देखते ही हँस पड़ा । बोला, ''आओ भरतू, आओ, अंदर चलो,'' कहकर रमेश ने भरतू का हाथ पकड़ लिया और उसी कमरे में ले गया ।

सरिता देवी कुरसी पर बैठी थीं । उन्होंने कहा, ''भरतू, यहाँ बैठो । रमेश बता रहा था, तुम पढ़ना चाहते हो ? अगर ऐसा है तो बहुत अच्छी बात है ।'' भरतू लजा गया । बोला, ''मैडम जी, यह तो मैंने यूँ ही मजाक में कह दिया था । भला अब क्या पढ़ूँगा मैं । हाँ, गाँव के स्कूल में मेरा बेटा नन्हा जरूर पढ़ता है ।''

''भरतू, तुम्हारे घर में कौन-कौन हैं ?'' सरिता देवी ने पूछा । भरतू उन्हें अपने गाँव-घर की बातें बताने लगा । न जाने क्या-क्या बता गया फिर एकाएक रुक गया । बोला, ''माफ करना मैडम जी, मैं तो यूँ ही कह रहा था । भला ये भी कोई बताने की बातें हैं ।''

''अरे नहीं-नहीं, मुझे तो तुम्हारी बातें सुनकर बहुत अच्छा लगा और बताओ । असल में मैं तो कभी गाँव गई नहीं । वहाँ लोग कैसे रहते हैं, क्या करते हैं, केवल किताबों से पता चलता है या फिल्मों से ।''

भरतू उठने को हुआ पर सरिता देवी ने रोक लिया । बोली, ''मैंने जिस बात के लिए बुलाया था, वह तो अभी कही ही नहीं । तुम पढ़ना चाहते हो, सुनकर मुझे अच्छा लगा । रमेश के पापा को भी पसंद आई यह बात ।''

''मैडम जी, वह तो मैंने ऐसे ही हँसी में कह दी थीं,'' भरतू ने संकोच से कहा ।

''नहीं, इसमे संकोच कैसा ? अगर तुम चाहो तो शाम को पाँच बजे रोज आ सकते हो । मैं पढ़ाऊँगी तुम्हें । शादी से पहले मैं बच्चों को पढ़ाया करती थी । अब भी मन करता है कोई ऐसा काम करने का ।''

''पर भरतू तो बड़ा है माँ,'' रमेश ने कहा । ''पहले बच्चों को पढ़ाती थी तो अब बड़ों को पढ़ाऊँगी । भरतू से ही शुरू होगा यह मेरा स्कूल ।''

''तो क्या मुझे आप सचमुच पढ़ाएँगी ?'' भरतू ने पूछा । उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था ।

''हाँ भरतू, मैं सच कह रही हूँ । जिस दिन मुझे कोई काम नहीं होगा तो मैं तुम्हें बता दूँगी, जब तुम रमेश को छोड़ने आओगे । उस दिन तुम पढ़ने आ जाना ।''

बाहर निकलने से पहले रमेश के सिर पर हाथ रखने से खुद को नहीं रोक पाया भरतू । ऐसा करते समय उसकी आँखें भीग गईं ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

दाखिला = प्रवेश

सकपकाना = डरना

हकलाना =रुकरुक कर बोलना

विचार मंथन

।। मुट्ठी में है तकदीर हमारी ।।

खोजबीन

ओलंपिक स्पर्धा संबंधी जानकारी प्राप्त करो :

- कब से प्रारंभ
- प्रतीक चिह्न और अर्थ
- किन-किन देशों में आयोजन ?
- अगली बार कहाँ होने वाला है ?
- ओलंपिक में पदक पाने वाले भारतीय

मेरी कलम से

मुद्दों के आधार पर कहानी लिखो :

- जंगल में पेड़ के नीचे चूहों का अपने राजासहित निवास ।
- राजा द्वारा चूहों को हमेशा दया, परोपकार की सलाह ।
- हाथियों का झुंड पानी की खोज में पेड़ के पास आना, चूहों को तकलीफ पहुँचाना ।
- चूहों की राजा से रक्षा की माँग ।
- चूहा राजा का हाथियों के सरदार से मिलना और हाथी सरदार का माफी माँगना ।
- चूहा राजा द्वारा हाथी को पानी की जगह दिखाना ।
- हाथियों का शिकार करने शिकारी का आना, हाथियों का जाल में फँसना ।
- हाथियों का संदेश चिड़िया द्वारा चूहा राजा को पहुँचाना ।
- चूहा राजा का चूहों को सहायता करने भेजना ।
- चूहों का जाल काटना ।
- सीख और शीर्षक

✲ **पाठ के आधार पर ५-६ पंक्तियों में उत्तर लिखो :**

(क) भरत् किताब उठाने पर मन में क्यों चिढ़ा ?
(ख) सरिता देवी की हँसी का क्या कारण था ?
(ग) भरत् और उसके साथी रात देर तक कौन-सा खेल खेलते रहे ?
(घ) भरत् रमेश के घर के बाहर किसलिए खड़ा था ?
(च) सरिता देवी ने कौन-सी बात तय की ?
(छ) भरत्, रमन आदि बीच-बीच में गाँव किनसे मिलने जाते ?

सदैव ध्यान में रखो

कभी भी किसी का मन टूटने न देना ।

भाषा की ओर

वर्णों एवं शब्दों के मेल को देखो, पढ़ो और समझो :

१. **महर्षि** ध्यानमग्न बैठे थे ।
२. कन्याकुमारी का **भानूदय** अप्रतिम होता है ।
३. राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा **प्रत्येक** का कर्तव्य है ।

महा + ऋषि = आ + ऋ
भानु + उदय = उ + उ
प्रति + एक = इ + ए

↓ **स्वर संधि**

१. रोगी को **तत्काल** भर्ती कराया गया ।
२. प्रतिज्ञा में एकात्मता का **उल्लेख** है ।
३. दिया हुआ **अनुच्छेद** पढ़ो ।

तत् + काल = त् + का
उत् + लेख = त् + ल
अनु + छेद = उ + छे

↓ **व्यंजन संधि**

१. हमें दुराचार से बचना चाहिए ।
२. केवल **मनोरथ** से ही काम नहीं बनता ।
३. मैंने पढ़ने का **निश्चय** किया है ।
४. मित्र को चोट पहुँचाकर उसे बहुत **मनस्ताप** हुआ ।

दुः + आचार = विसर्ग (ः) का र्
मन ः + रथ = विसर्ग (ः) का ओ
नि ः + चय = विसर्ग (ः) का श्
मन ः + ताप = विसर्ग (ः) का स्

↓ **विसर्ग संधि**

संधि के भेद → स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि

संधि-ध्वनियों का मेल → ध्वनि + ध्वनि = नया रूप

हिम + आलय → हिम् + (अ) + (आ) लय = हिमालय

अ + आ = आ

संधि में दो ध्वनियाँ निकट आने पर आपस में मिल जाती हैं और एक नया रूप धारण कर लेती हैं ।

उपरोक्त उदाहरणों में (१) में महा+ऋषि, भानु+उदय, प्रति+एक शब्दों में **दो स्वरों** के मेल से जो परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **स्वर संधि** हुई । उदाहरण (२) में तत्+काल, उत्+लेख, अनु+छेद शब्दों में व्यंजन ध्वनि के निकट स्वर या व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है अतः यहाँ **व्यंजन संधि** हुई । उदाहरण (३) में विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में परिवर्तन हुआ है । अतः यहाँ **विसर्ग संधि** हुई ।

● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

१३. धन्यवाद

– शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जन्म : ५ अगस्त १९१५, झगरपुर ग्राम (उ.प्र.) **मृत्यु :** २७ नवंबर २००२ **रचनाएँ :** हिल्लोल, मिट्‌टी की बारात, वाणी की व्यथा, प्रलय सृजन, युग का मोल **परिचय :** शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी कुशल प्रशासक, प्रखर चिंतक, विचारक और हिंदी के शीर्ष कवियों में एक हैं।

प्रस्तुत रचना के माध्यम से कवि सुमन जी ने हमें उपकार करने वालों, स्नेहियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया है ।

बताओ तो सही

अपने घर के किसी प्रिय सदस्य पर कविता लिखकर सुनाओ ।

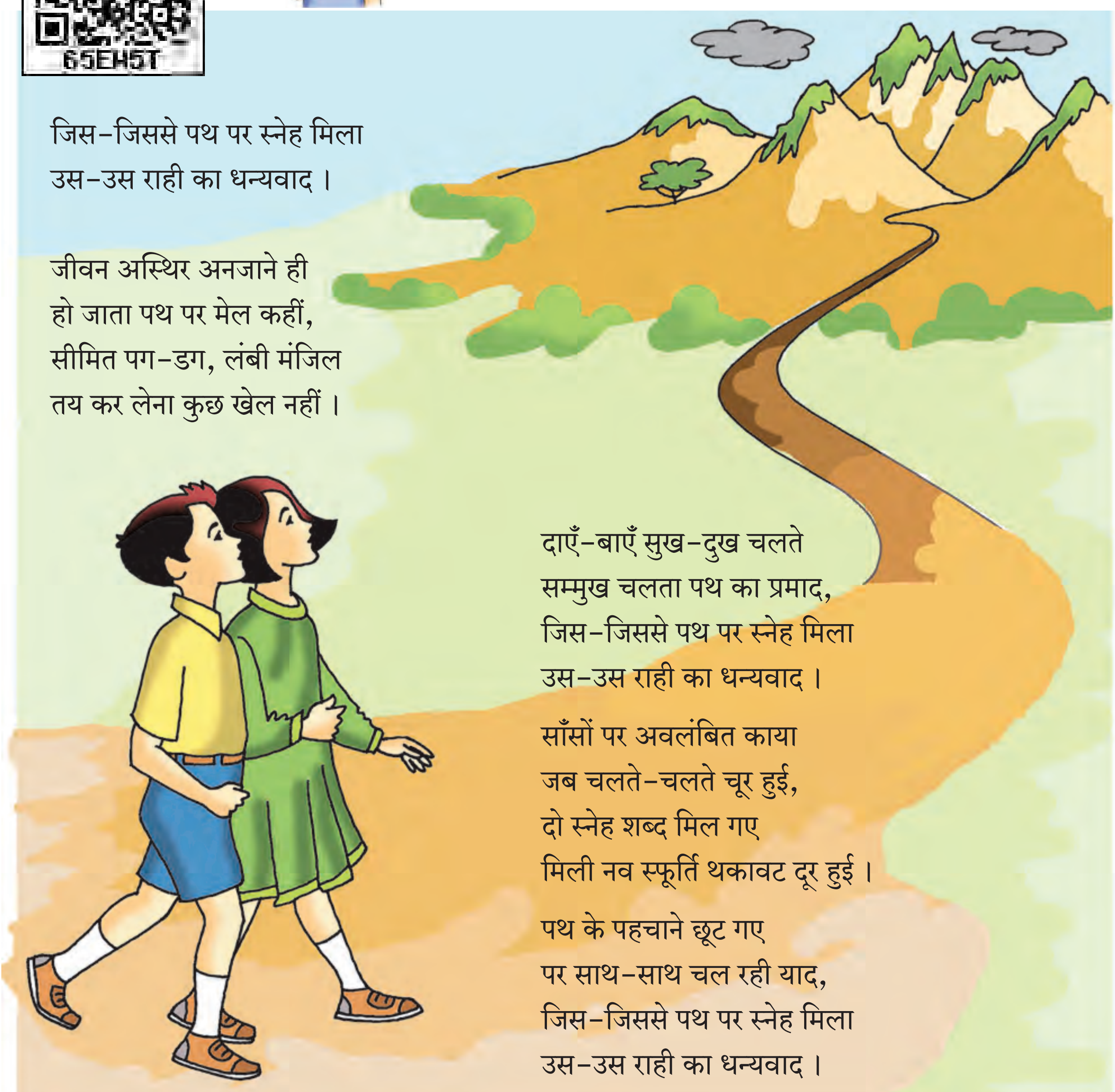

जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

जीवन अस्थिर अनजाने ही
हो जाता पथ पर मेल कहीं,
सीमित पग-डग, लंबी मंजिल
तय कर लेना कुछ खेल नहीं ।

दाएँ-बाएँ सुख-दुख चलते
सम्मुख चलता पथ का प्रमाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

साँसों पर अवलंबित काया
जब चलते-चलते चूर हुई,
दो स्नेह शब्द मिल गए
मिली नव स्फूर्ति थकावट दूर हुई ।

पथ के पहचाने छूट गए
पर साथ-साथ चल रही याद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से साभिनय, सामूहिक, गुट में, एकल पाठ करवाएँ। प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता में आए भावों को स्पष्ट करें । कविता में आए उपसर्ग/प्रत्ययवाले शब्दों से इन्हें अलग कराएँ ।

अध्ययन कौशल

किसी शालेय कार्यक्रम का नियोजन करते हुए कार्यक्रम पत्रिका बनाओ ।

जो साथ न मेरा दे पाए
उनसे कब सूनी हुई डगर,
मैं भी न चलूँ यदि तो भी क्या
राही मर लेकिन राह अमर ।

इस पथ पर वे ही चलते हैं
जो चलने का पा गए स्वाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

कैसे चल पाता यदि न मिला
होता मुझको आकुल अंतर,
कैसे चल पाता यदि मिलते
चिर तृप्ति अमरता पूर्ण प्रहर ।

आभारी हूँ मैं उन सबका
दे गए व्यथा का जो प्रसाद,
जिस-जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस-उस राही का धन्यवाद ।

- विद्यार्थियों को किन-किन-से स्नेह मिलता है, बताने के लिए कहें । कब-कब, किन-किन को धन्यवाद करना चाहिए, चर्चा करें । धन्यवाद, मंजिल, थकावट, अमर, व्यथा, प्रसाद शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके कक्षा में बताने के लिए प्रोत्साहित करें ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पथ = रास्ता

अस्थिर = चंचल

प्रमाद = भ्रम

सम्मुख = सामने

आकुल = व्याकुल

अंतर = मन, अंतस

व्यथा = कष्ट

राही = यात्री

विचार मंथन

।। वृक्ष करता सब पर उपकार
जग माने उसका आभार ।।

जरा सोचो ...... बताओ

अगर तुम्हारा बचपन ठहर जाए तो ...

सुनो तो जरा

हौसला, प्रेरणा, जीवन संघर्ष में से किसी भी विषय पर कविता सुनो और सुनाओ ।

वाचन जगत से

किसी एक पसंदीदा कविता के आशय का शाब्दिक तथा अंतर्निहित अर्थ का आकलन करते हुए वाचन करो और केंद्रीय भाव लिखो ।

सुनो तो जरा

अपने आसपास में घटी कोई हास्य घटना/प्रसंग सुनाओ ।

खोजबीन

अंतरजाल की सहायता से भारत के अब तक के राष्ट्रपतियों के नाम तथा उनका कार्यकाल ढूँढ़ो और बताओ ।

स्वयं अध्ययन

अब तक पढ़े मुहावरे, कहावतों का वर्णाक्रमानुसार लघु शब्दकोश बनाओ ।

✻ **कविता में निम्न शब्दों से सहसंबंध रखने वाले शब्द खोजकर लिखो :**

(क) सीमित पग-डग –
(ख) दाएँ-बाएँ –
(ग) साथ-साथ –
(घ) आकुल –
(ङ) व्यथा –
(च) राही –
(छ) जीवन –
(ज) पथ –
(झ) सूनी –
(ञ) राह –

सदैव ध्यान में रखो

सच्चा मित्र वही है, जो विपत्ति में काम आए ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

छोटा कोष्ठक ()

(१) सागर- (**आश्चर्य से**) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !

(२) निम्न प्रश्न हल करो :

(अ) ९५ X २६ (ब) ६००÷१५

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक{}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}

(१) {**गोदान** / **निर्मला** / **गबन**} प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।

(२) {**तुलसीदास** / **कालिदास**} महाकवि माने जाते हैं ।

उचित विराम चिह्न लगाओ :

१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद

२. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती ।

३. बालभारती / सुलभभारती हिंदी की पुस्तकें हैं ।

४. किसी दिन हम भी आपके घर आएँगे ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []

(१) रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं ।

(२) देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए ।

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।

हंसपद ^

(१) अस्मि ने ^(सुंदर) भेंटकार्ड बनाया ।

(२) पिता जी कल ^(मुंबई) जाएँगे ।

अभ्यास – २

✻ पूरी वर्णमाला और १०० तक की गिनती क्रम से लिखकर मिलाओ और प्राप्त चित्र के बारे में लिखो :

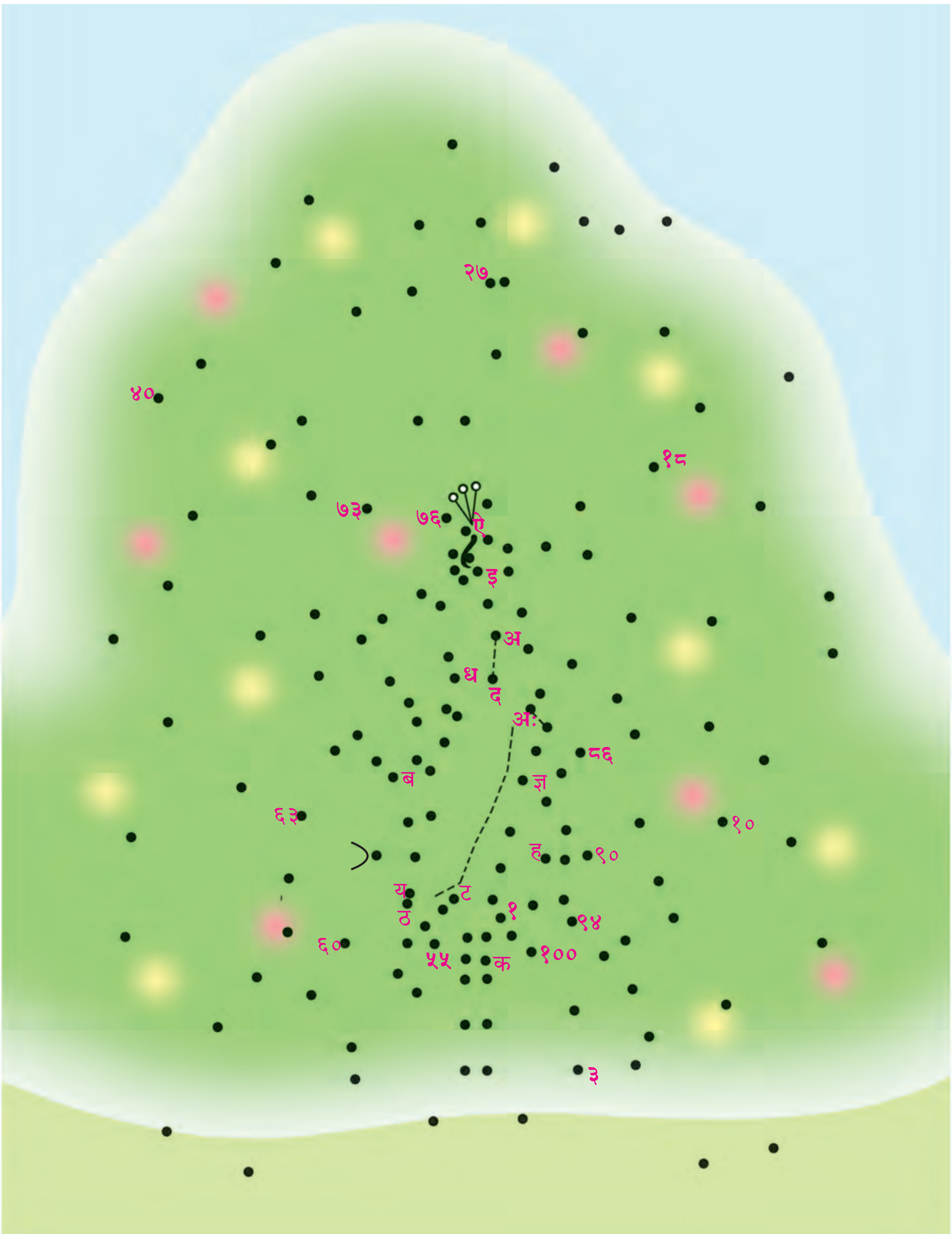

अभ्यास-३

* चित्रकथा का आकलन करके अपने शब्दों में कहानी लिखो और उचित शीर्षक बताओ । अंतिम चित्र देखो । उस जगह पर तुम होते तो क्या करते रिक्त चौखट में लिखो :

❑ विद्‌यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराएँ । चित्र में कौन-कौन-सी घटनाएँ घटी होंगी, उन्हें सोचने के लिए कहें । उन्हें चित्रों एवं घटनाओं के आधार पर कहानी का आधुनिकीकरण करके लिखने के लिए प्रेरित करें और उचित शीर्षक देने के लिए कहें ।

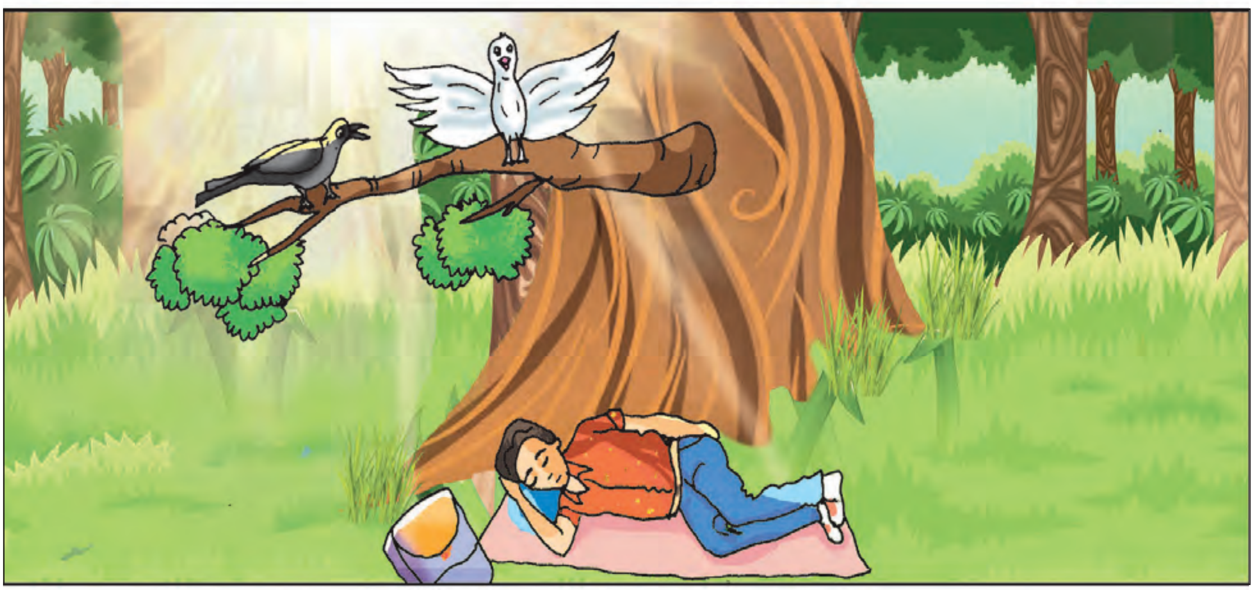

* पुनरावर्तन – २ *

१. अब तक सुनी सबसे अच्छी कविता सुनाओ ।

२. विद्‌यालय में अबतक मनाए गए पसंदीदा कार्यक्रम के बारे में बताओ ।

३. जातक कथाओं का वाचन करो ।

४. अपने प्रिय शिक्षक/शिक्षिका पर १२ से १५ वाक्य लिखो ।

५. विरामचिह्नों का उचित प्रयोग कर निम्न वाक्य पुनः लिखो :–

१. यही वह व्यक्ति है जिसने चोर को पकड़वाया

....

....

२. अहा इतनी मिठाई मेरे लिए

....

....

३. आप इस समय क्या कर रहे हैं

....

....

४. जो इस तोते को परेशान करते हैं वह उन्हीं को काटता है

....

....

५. यह आचार्य विनोबा की कार्य स्थली है

....

....

६. राकेश ने कहा मैं अपना गृहकार्य रोज करूँगा

....

....

७. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' बड़े दयालु थे

....

....

८. भारत में छह ऋतुएँ होती हैं ग्रीष्म वर्षा शरद हेमंत शिशिर और वसंत

....

....

कृति	कृति	उपक्रम	प्रकल्प
अपने माँ–पिता जी से नाना/नानी के बारे में सुनो ।	स्वतंत्रता दिवस किस तरह मनाओगे, बताओ ।	प्रति सप्ताह संत कवियों के कोई पद पढ़ो ।	विद्‌यालय में तैयार कंपोस्ट खाद पर एकल या गुट में प्रकल्प तैयार करो ।

इयत्ता १ ली ते ८ वी साठीची पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पुस्तके

- मुलांसाठीच्या संस्कार कथा
- बालगीते
- उपयुक्त असा मराठी भाषा शब्दार्थ संग्रह
- सर्वांच्या संग्रही असावी अशी पुस्तके
- स्फूर्तीगीत
- गीतमंजुषा
- निवडक कवी, लेखक यांच्या कथांनी युक्त पुस्तक

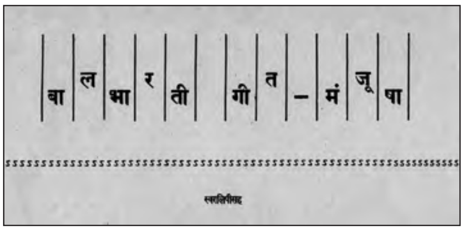

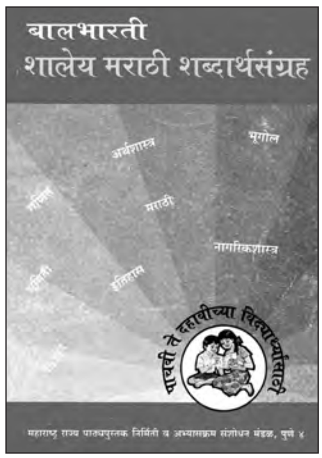

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेतस्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

बालभारती इयत्ता ७ वी (हिंदी)

₹ 46.00